BIHAR EDUCATION PROJECT

MUZAFFARPUR

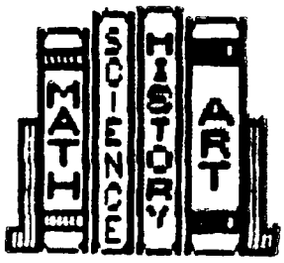

MAJOUR ACTIVITIES
AND
TENTATIVE BUDGET ESTIMATE

1994-1995

- 5A12
379.15
BIH-M

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ
1.	मुजफ्फरपुर जिला -- मानचित्र	0
2.	मुजफ्फरपुर जिला -- आँकड़ों के आइने में	1
3.	कार्ययोजना (94-95) : पृष्ठभूमि	3
4.	पुरोलक्षी कार्ययोजना (94-95)	8
5.	आमुखी पृष्ठभूमि : प्राथमिक औपचारिक शिक्षा	10
6.	प्रगति का सिंहावलोकन (93-94) प्रा0औप0 शिक्षा	11
7.	मुख्य गतिविधियों पर एक दृष्टि (94-95) प्रा0औप0शिक्षा	15
8.	नामांकन	19
9.	एम0 एल0 एल0 कार्यक्रम	22
10.	मानचित्र : औपचारिक शिक्षा : प्रगति संकेतक	23
11.	प्राथमिक औपचारिक शिक्षा : बजट (1994-95)	24
12.	प्राथमिक औपचारिक शिक्षा : मुख्य झलकियाँ	26
13.	अनौपचारिक शिक्षा : पृष्ठभूमि	27
14.	कार्ययोजना (94-95) अनौपचारिक शिक्षा	35
15.	अनौपचारिक शिक्षा : (94-95) क्रियाशीलन	40
16.	अनुलग्नक-"क" (दिसम्बर, 93 तक) : उपलब्धि	48
17.	अनुलग्नक-"ख" (94-95) : समय सारणी	49
18.	अनुलग्नक-"ग" (94-95) : स्वयंसेवकों का प्रशिक्षण	50
19.	अनुलग्नक-"घ" : मूल्यांकन एवं मूल्यांकन विश्लेषण	51
20.	अनुलग्नक-"ङ" : प्रशिक्षण सेड्यूल	52
21.	अनौपचारिक शिक्षा : बजट (94-95)	53
22.	अनौपचारिक कार्ययोजना (94-95) : एक नजर में	55
23.	बजट (93-94) : एक झलक	56
24.	मानचित्र : अनौपचारिक शिक्षा, क्रियाशीलन	57
25.	प्रशिक्षण : पृष्ठभूमि	58
26.	समय संदर्शिका (94-95)	62
27.	अग्रिम कार्ययोजना (मार्च, 94 तक) : प्रशिक्षण	64
28.	प्रशिक्षण : उपलब्धि (93-94)	65
29.	ड्राफ्ट, प्रशिक्षण : (94-95) : बजट	67
30.	प्रशिक्षण विवरणी : औपचारिक शिक्षा	71
31.	प्रशिक्षण विवरणी : अनौपचारिक शिक्षा	72

NIEPA DC
D09068

- 5412
372
BIH - M

...RY & DOCUMENTATION CENTRE
... Institute ...
... and Ad...
17-B, ... Aurobi... M...
New ... lhi-110016
... No. D-9068
Date ... 12-03-96

क्रम	विषय	पृष्ठ
32.	महिला समाख्या : भूमिका	73
33.	कार्ययोजना (94-95)	76
34.	समय संदर्शिका	81
35.	क्रियाशीलन	82
36.	कार्ययोजना (93-94) : झलक	83
37.	कार्ययोजना (94-95) : झलक	84
38.	महिला समाख्या (94-95) : बजट	85
39.	महिला समाख्या : मानचित्र : क्रियाशीलन	87
40.	संस्कृति एवं संचार : भूमिका	88
41.	संस्कृति एवं संचार : कार्ययोजना (94-95)	91
42.	बजट : संस्कृति एवं संचार (93-94)	99
43.	कार्यक्रम : संस्कृति एवं संचार (94-95)	100
44.	बजट : संस्कृति एवं संचार (94-95)	101
45.	प्रबन्धन : बजट	102
46.	वर्ष 1994-95 : बजट : एक झलक	103
47.	परिशिष्ट - "क"	104
48.	परिशिष्ट - "ख"	105
49.	अनुलग्नक - "अ"	106
50.	अनुलग्नक - "ब"	108
51.	अनुलग्नक - "स"	109
52.	अनुलग्नक - "द"	110

-----::0::-----

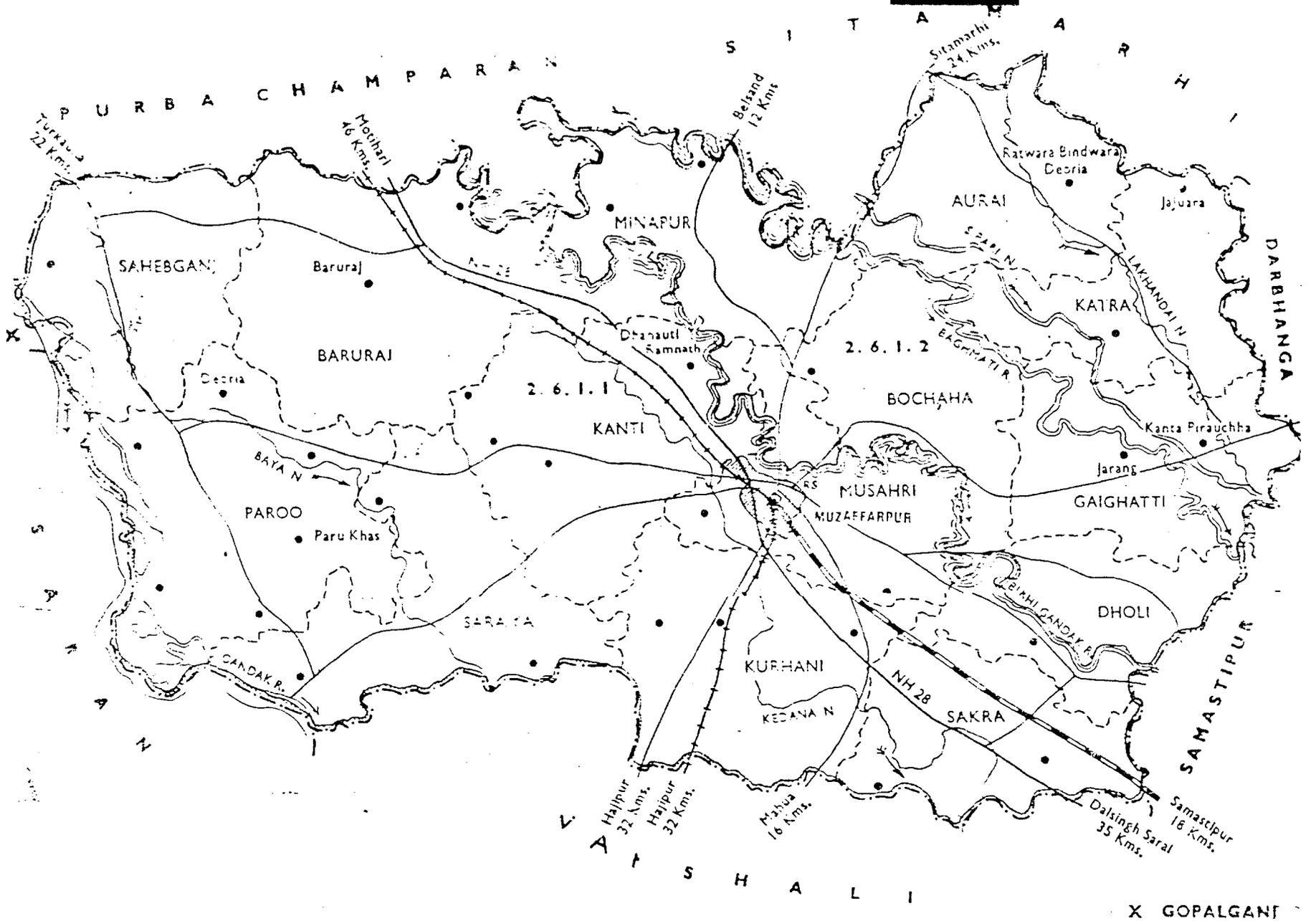

PURBA CHAMPARAN
SITAMARHI
DARBHANGA
SAMASTIPUR
VAISHALI
SARAN
Motihari 46 Kms.
Belsand 12 Kms.
Sitamarhi 24 Kms.
Ratwara Bindwara
Deoria
Jajuara
AURAI
MINAPUR
SAHEBGANJ
Baruraj
BARURAJ
KATRA
LAKHANDAI N
BAGHMATI R.
Dhanauti Ramnath
2. 6. 1. 1
2. 6. 1. 2
Deoria
KANTI
BOCHAHA
Kanta Pirauchha
Jarang
BAYA N
MUSAHRI
MUZAFFARPUR
GAIGHATTI
PAROO
Paru Khas
SARAIYA
DHOLI
BURHI GANDAK R.
GANDAK R.
KURHANI
NH 28
SAKRA
KEDANA N
Hajipur 32 Kms.
Hajipur 32 Kms.
Mahua 16 Kms.
Dalsingh Sarai 35 Kms.
Samastipur 18 Kms.
X GOPALGANJ

मुजफ्फरपुर जिला : आँकड़ों के साए में

§1§ भूगोल

क्षेत्रफल-	3172 वर्ग किलोमीटर
	§शहरी क्षेत्रफल-15.6 वर्ग किलोमीटर§
	§देहाती क्षेत्रफल-3156.4 वर्ग कि0मी0§
अक्षांश-	$25^0 54'$ §उत्तर§- $26^0 23'$ §उत्तर§
देशान्तर-	$84^0 53'$ §पूर्व§ - $85^0 45'$ § पूर्व §

§2§ चौहद्दी

उत्तर-	सीतामढ़ी एवं पूर्वी चम्पारण
दक्षिण-	वैशाली एवं सारण
पूर्व -	दरभंगा एवं समस्तीपुर
पश्चिम-	सारण एवं गोपालगंज

§3§ प्रशासनिक इकाइयाँ

§क§ अनुमण्डल-	2
§ख§ प्रखण्ड-	14
§ग§ पंचायत-	341
§घ§ शहर-	1
§ङ§ गाँव-	1729
§च§ टोले-	7290

§4§ गृह तथा परिवार

§क§ आवासीय गृह-	3,09,350
§ख§ परिवार-	3,89,830

§5§ आबादी

§क§ 1971	19,82,680
§ख§ 1981	23,57,388
§ग§ 1991	29,55,903

.....2

§6§ आबाद गाँवों की संख्या-	1,712
§7§ कस्बों की संख्या-	3
§8§ नगरीय जनसंख्या का कुल जनसंख्या में प्रतिशत-	9
§9§ प्रतिवर्ग किलोमीटर जनसंख्या-	931
§10§ प्रति 1000 पुरूषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या-	904
§11§ 0-6अर्ष आयु की जनसंख्या का कुल जनसंख्या में प्रतिशत-	20
§12§ जनसंख्या में प्रतिशत दशकीय परिवर्तन 1981-91 -	25
§13§ अनुसूचित जाति का कुल जनसंख्या में प्रतिशत-	15.72
§14§ अनुसूचित जनजाति का कुल जनसंख्या में प्रतिशत-	0.04
§15§ साक्षरता दर	
§क§ पुरूष-	40
§ख§ स्त्री-	22
§16§ कुल काम करनेवालों का कुल जनसंख्या में प्रतिशत	
§क§ पुरूष-	48
§ख§ स्त्री-	7
§17§ प्राथमिक विद्यालय-	1536
§18§ मध्य विद्यालय-	438
§19§ शिक्षक पद-	7790
§20§ कार्यरत शिक्षक-	7132
§21§ रिक्तियाँ-	658

----::0::----

बिहार शिक्षा परियोजना

कार्ययोजना (1994-95)

पृष्ठभूमि

बिहार शिक्षा परियोजना ने 24 अप्रील 1992 से मुजफ्फरपुर जिले में पूर्णरूपेण कार्य करना शुरू किया। परियोजना का फोकस शुरूआत से ही मुख्यरूप से प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण एवं महिलाओं की बराबरी पर है। सार्वजनीकरण की रणनीति के तीन मुख्य स्तम्भ रहे हैं, व्यापक पहुँच, व्यापक ठहराव तथा व्यापक उपलब्धि।

व्यापक पहुँच के लिए सबसे पहले निगाह प्राथमिक स्कूलों की भौतिक स्थिति पर जाती है। भवनहीन, छप्परविहीन जोर्ण-शोर्ण विद्यालयों की गिनती 15 सितम्बर, 92 तक लिए गए आकलन के अनुसार इस प्रकार थी-----

भवनहीन प्राथमिक विद्यालय-	347
भवनहीन मध्य विद्यालय-	42
भवनहीन भूमिहीन प्राथमिक वि0-	134
भवनहीन भूमिहीन मध्य विद्यालय-	37

केवल यही नहीं व्यापक पहुँच के लिए विद्यालयों में शौचालय तथा पीने के जल की जरूरत को अनिवार्यता भी सभी महसूसते हैं। बिहार शिक्षा परियोजना के आरम्भ के समय इन दोनों मुद्दों पर जिले में स्थिति का ब्योरा देखें---

कमराबार विद्यालयों की सूची

प्राथ0विद्या0	भवनहीन	एक कमरा	दो कमरे	तीन कमरे	4कमरे	5 या अधिक कमरे
1536	347	239	697	147	92	14

विद्यालय	शौचालय विहीन	पेयजल सुविधा विहीन
प्राथमिक	1279	823
मध्य	263	137
कुल-	1542	960

बिना शौचालय तथा पेयजल के लड़कियों को स्कूल में नामांकित कराना टेढ़ी खीर है।

व्यापक पहुँच का प्रमुख संकेतक नामांकन आँकड़ा है।

इसकी उपलब्धि दिसम्बर,91 तक यों थी--

सामान्य जाति के छात्र			अनुसूचित जाति के छात्र			पूरा योग
छात्र	छात्रा	कुल	छात्र	छात्रा	कुल	
98,267	48,459	1,46,726	19,083	8,082	27,166	1,73,892

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में ठहराव की दिशा में भी स्थिति दयनीय थी। विद्यालयों में खेल सामग्री,उपस्कर,उपकरण,जरूरी रजिस्टरों तक का अभाव था तथा छात्र-छात्राओं के बैठने के लिए बेंच-डेस्क,कुर्सी,चटाइयाँ आदि भी नहीं उपलब्ध थीं। गरीब छात्र-छात्राओं के लिए पठन तथा लेखन की सामग्री भी नहीं दी जा पा रही थी। पुस्तकालयों की कमी सभी को खलती थी।

विद्यालयों के पास बच्चे-बच्चियों के लिए आकर्षण का कोई मुद्दा नहीं बनता था। न तो स्कूलों में कोई आकर्षण और न पढ़ाई की विधि में कोई मनोरंजन ।

व्यापक उपलब्धि की दृष्टि से भी हालत बदतर ही थी। शिक्षकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण नई परिस्थितियों में फलदायी नहीं रह गया था। राजकीय प्रशिक्षण संस्थानों की जटिलता के कारण स्तरोन्नयन की कोशिश में नाकामयाबी शामिल हो गई थी।

1992 में 6-14 आयुवर्ग के बच्चे-बच्चियों की संख्या 5,59,848 थी। इसमें से 1,78,892 बच्चे-बच्चियों का नामांकन हो पाया था। 1978 प्राथमिक तथा मध्य विद्यालयों में इतनी बड़ी संख्या को दाखिल किया जाय,आसान नहीं है। परंतु तबतक वैकल्पिक व्यवस्था की कोई बात बड़े पैमाने पर कार्यशील नहीं थी। केवल साक्षर मुजफ्फरपुर कार्यक्रम के अधीन चलाये गए 30 अनौपचारिक विद्यालय ही चालू थे। अनौपचारिक विधा से वैकल्पिक व्यवस्था को किसी प्रकार संतोषजनक नहीं कहा जा सकता था।

शिक्षकों की प्राथमिक शिक्षा में भूमिका अव्वल होती है। मगर जहाँ उनके प्रशिक्षण का सिलसिला बेमेल हो गया था,वहीं उनकी वैयक्तिक सेवा समस्याओं पर कोई ध्यान नहीं था,शिक्षा कार्यक्रम में उनका सहयोग उतना नहीं लिया जा रहा था जितने की जरूरत थी और न उन्हें अच्छे काम के लिए प्रोत्साहन ही दिया जा रहा था।

कोई भी व्यापक कार्यक्रम बिना समुदाय के सहयोग के नहीं चल सकता । वस्तुस्थिति यह थी कि ग्राम शिक्षा समितियाँ,अप्रभावी थीं , प्राथमिक विद्यालयों के सरकारीकरण के बाद टोले की जनता से प्राथमिक विद्यालयों का सम्बन्ध कट गया था, तथा किसी भी कठिनाई में समुदाय विद्यालयों की मदद करने को तैयार नहीं था।

संक्षेप में प्राथमिक शिक्षा के व्यापक क्षेत्र में अभाव,छीजन,लोक सहभागिता की कमी,तथा अदक्षता की स्थिति व्याप्त थी। महिला नाबराबरी समाप्त करने की दिशा में कोई ठोस कार्यक्रम नहीं चलाया जा रहा था।

महिलाओं के फ्रन्ट पर भी कोई विशेष कार्यक्रम नहीं चल रहा था । यद्यपि यह सभी मानते थे कि विकास तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे बिल्कुल पिछड़ी हैं और बिना उनके सहयोग के कोई भी अभियान अधूरा ही रहता है। प्रगति का खाका इस प्रकार है---- (विवरण संलग्न)

इन प्रयासों के तहत बिहार शिक्षा परियोजना,मुजफ्फरपुर ने 1993-94 वर्ष में प्रवेश किया।-नई आशाओं के साथ।

बिहार शिक्षा परियोजना को 1993-94 में हर दिशा में प्रगति हुई। नीचे के आँकड़ों में यह परिलक्षित है----

निर्माण तथा कार्यक्रम	आवश्यकता	92-93लक्ष्य	1992-93 उपलब्धि	1993-94 लक्ष्य	1993-94 उपलब्धि	94-95 लक्ष्य	95-96	96-97
प्रा0वि0भवन	347 भवनहीन विद्यालय	84	84	115	25	100	48	--
शौचालय	1279	140	140	684	50	455	--	--
चापाकल	1023	140	140	574	125	309	--	--
चापाकल मरम्मत	--	-	-	-	-	-	350	700
पुस्तकालय	1536	300	300	500	500	500	236	--
उपस्कर एवं मरम्मत	1536	-	-	500	500	600	436	400
पुस्तकें/लेखन सामग्री	1978	-	-	43763	43763	162123	--	--
खेल सामग्री	1536	-	-	500	500	500	500	36
शैक्षिक उपकरण	1536	-	-	500	500	500	500	36

नामांकन आँकड़ें-- वर्ग 1 से 8 तक

वर्ष	सामान्य जाति			अनुसूचित जाति			पूरा योग
	छात्र	छात्रा	कुल	छात्र	छात्रा	कुल	
1992 (दिसम्बर तक)	98,713	1,82,086	2,80,799	20,192	42024	62,216	3,43,015
1993 (जून तक)	109,008	1,96,514	3,05522	23,417	48,116	71,533	3,77,055

इन आँकड़ों से स्पष्ट है कि 1992-93 में प्राथमिक शिक्षा के औपचारिक शिक्षुओं की संख्या में कुल वृद्धि 34,040 हुई तथा छात्राओं की संख्या में 13,520 वृद्धि हुई। अनुसूचित जाति के शिक्षुओं की संख्या में वृद्धि 9,317 हुई।

शिक्षकों के सम्बन्ध में अनेक कार्य हुए हैं। व्यक्तिगत समस्याओं के निराकरण हेतु निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं---

§1§ परियोजना कार्यालय एवं जिला शिक्षा अधीक्षक कार्यालय में शिक्षक कोषांग का गठन ।

§2§ सेवा निवृत शिक्षकों के पेंसन भुगतान में तत्परता ।

§3§ वेतन विसंगति का निराकरण ।

शिक्षकों को सबल बनाने की दिशा में गुरुगोष्ठियों को जीवन्त बनाया गया है। 1993-94 में प्रतिमाह अंचलवार आयोजित गुरुगोष्ठियों में शिक्षण कार्यक्रमों तथा शिक्षकों की निजी समस्याओं पर विचार विमर्श होता है।

लोक सहभागिता की दृष्टि से ग्राम शिक्षा समितियों को नए सिरे से गठित किया गया है। 1993-94 में 1499 ग्राम शिक्षा समितियाँ गठित की गईं तथा ग्राम शिक्षा समितियों के 27 सदस्यों का दो दिवसीय प्रशिक्षण पूरा किया जा चुका है। मार्च 94 तक 600 सदस्यों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है।

भवनों के निर्माण में बिहार शिक्षा परियोजना के अलावे विभिन्न स्त्रोतों ने मदद की है।

भवन निर्माण	1992-93	1993-94
बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा	04	66
जवाहर रोजगार योजना द्वारा	78	45
अन्य कार्यक्रमों द्वारा		

~~40 स्कूलों के लिए स्थानीय दाताओं ने~~ 10 एकड़ 25 डिसमल जमीन दी है। जिसका समतुल्य मूल्य 7,16,525 है।

1993-94 में डायट की स्थापना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अब इसकी एक उप इकाई, रामबाग प्रशिक्षण महाविधालय में चालू हो गई है।

1992-93 में 617 शिक्षकों को 10 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।

1993-94 में 246 शिक्षकों को 10 दिवसीय तथा 158 को 11 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

इसके अतिरिक्त 66 प्रधानाध्यापकों को 5 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया है। 27 निरीक्षी पदाधिकारियों को दो खेप में §4दिवसीय तथा एक दिवसीय§ प्रशिक्षण दिया गया है। 35 शिक्षकों को गणित में विशेष दक्षता हेतु 3 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया है।

1993-94 में 34,900 शिक्षुओं का दक्षता आधारित कार्यक्रम के अंतर्गत समान्त परीक्षण किया गया है।

अनौपचारिक कार्यक्रम पाठ्यक्रम के अभाव में 1992-93 में नहीं चलाया जा सका। 1993-94 में जुलाई के बाद संदर्शिका मिल पाई, जिससे स्वयंसेवक शिक्षकों में मात्र

एक समूह का प्रशिक्षण जुलाई के पहले हो सका। धीरे-धीरे प्रगति हुई तथा दिसम्बर, 1993 तक आच्छादित टोलों की संख्या 184 पंचायतों की संख्या 28, प्रखण्डों की संख्या-5 हो गई। इनमें 215 अनौपचारिक विद्यालय कार्यशील हुए जहाँ शिक्षुओं की संख्या-5450 है। सभी स्वयंसेवकों का 12 दिवसीय प्रशिक्षण हो चुका है।

1994 मार्च तक लगभग 520 इकाइयाँ चालू हो जाएँगी। मार्च तक 5450 शिक्षुओं का सत्रान्त मूल्यांकन भी हो जायगा।

1994-95 में 720 प्राथमिक तथा 80 उच्चतर प्राथमिक इकाइयाँ खोलने की योजना है। तब 599 टोले तथा 9 प्रखण्ड आच्छादित होंगे। 9 प्रखण्डों में अनौपचारिक परियोजना चालू हो जायगी।

1994-95 में गायघाट प्रखण्ड को अनौपचारिक रीति से इस प्रकार आच्छादित किया जायगा कि सभी 6-14 आयुवर्ग के शिक्षु या तो अनौपचारिक विद्यालयों में या प्राथमिक स्कूलों में, या मुशहर उपस्कूलों में भर्ती हो जाएँ।

1995-96 में 4 तथा 1996-97 में 4 प्रखण्डों की प्रगति को इसी स्तर तक पहुँचाया जायगा।

बाल विकास के सम्बन्ध में नई बालबाड़ियाँ नहीं खोली गईं क्योंकि केन्द्रीय इकाई का ऐसा ही निर्देश था। विभिन्न टोलों में समेकित बाल विकास कार्यक्रम के कर्मियों के साथ मिलकर वातावरण निर्माण तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए जागरण बैठकें की गईं। इनकी संख्या इस प्रकार है। कुल कार्यशालाएँ 11 चलीं तथा 41 बैठकें हुईं।

वातावरण निर्माण की दिशा में प्रगति इस प्रकार है --

क्रम	कार्यक्रम	1992-93		1993-94	
		लक्ष्य	संप्राप्ति	लक्ष्य	संप्राप्ति
1.	बालमेला	3	1	35	30
2.	जत्था	-	23	14	3
3.	साइकिल रैली	-	39	-	--
4.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	-	93	25	27
5.	पोस्टर प्रतियोगिता	14	14	14	2
6.	प्रखंड स्तरीय गोष्ठियाँ	15	15	15	15
7.	प्रदर्शनी	-	-	4	2
8.	प्रचारोपाय	-	-	40	8
9.	नुक्कड़ नाटक	14	8	--	3

वर्ष 94-95 के लिए विस्तृत कार्ययोजना संलग्न की जा रही है।

कार्ययोजना 94 -97 (प्रोस्पेक्टिव प्लान)

इस जिले में 24.4.92 से बिहार शिक्षा परियोजना आरम्भ हुई। नामांकन अभियान बड़े पैमाने पर शुरू किया गया। अन्य घटकों में भी कार्य आरम्भ हुआ। वर्ष 94-95 की विस्तृत कार्य योजना अलग से प्रस्तावित है। परियोजना की अवधि को ध्यान में रखते हुए आगामी तीन वर्षों की योजना का प्रक्षेपण आवश्यक प्रतीत होता है।

प्राथमिक औपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत शतप्रतिशत नामांकन हेतु तीन वर्षों की योजना अलग से दी जा रही है।

नामांकन एवं क्षमता आधारित शिक्षण तथा मूल्यांकन , को प्राप्त करने के लिए जिले के सभी भवनहीन प्राथमिक विद्यालयों को आगामी तीन वर्षों में भवनयुक्त बनाने की योजना है। वर्ष 92-93 में 34 भवनहीन विद्यालय निर्माण हेतु लिए गए। वर्ष 93-94 में 115 भवनहीन विद्यालय निर्माणाधीन हैं। वर्ष 94-95 में 100 एवं वर्ष 95-96 में 48 भवनहीन विद्यालयों का निर्माण प्रस्तावित है। वर्ष 96-97 में अधिक नामांकन वाले विद्यालयों में अतिरिक्त कमरों का निर्माण कराया जाएगा।

पूर्व में निर्मित मध्य विद्यालय एवं बुनियादी विद्यालय तो भवनहीन कोटि में नहीं आते हैं किन्तु अत्यन्त पुराने होने के कारण उनकी दशा शोचनीय है। ऐसे 100 विद्यालयों की मरम्मत की आवश्यकता हमारे सामने है। आगामी दो वर्षों में हम मरम्मत योग्य 100-150 विद्यालयों की मरम्मत कराकर उन्हें उपयोगी बनायेंगे।

हम आगामी तीन वर्षों में सभी विद्यालयों में शौचालय और चापाकल भी देना चाहते हैं ताकि नामांकन एवं छीजन की स्थिति में सुधार हो। वर्ष 92-93 में 140 विद्यालयों में शौचालय एवं चापाकल दे चुके हैं। वर्ष 93-94 में 684 विद्यालयों में शौचालय एवं 574 विद्यालयों में चापाकल लगाये जा रहे हैं। वर्ष 94-95 में 455 विद्यालयों में शौचालय एवं 309 विद्यालयों में चापाकल लगा देने से जिले का कोई विद्यालय शौचालय/चापाकल विहीन नहीं रह जायेगा।

विद्यालयों में पुस्तकालयों की स्थापना कर शिशुओं एवं शिक्षकों में पढ़ने और नया कुछ सीखने के प्रति ललक पैदा करना चाहते हैं। ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड के तहत कुछ विद्यालयों में पुस्तकों की आपूर्ति की गई है। पहले चरण में हम ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड के बाहर के बाहर के विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना कर रहे हैं । इस कार्यक्रम के तहत 800 विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना कर चुके हैं

वर्ष 94-95 में 500 एवं 95-96 में 236 प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना का हमारा लक्ष्य है।

विद्यालय में उपस्करों का नितान्त अभाव है। इसे दूर करने के लिए 93-94 में 5 500 विद्यालयों में उपस्कर दिये जा रहे हैं। 94-95 में 600 एवं 95-96 में 236 प्राथमिक विद्यालयों में उपस्कर देने से कोई भी विद्यालय उपस्कर विहीन नहीं रहेगा।

विद्यालयों में खेल सामग्री की कमी बच्चों एवं शिक्षकों को खलती ही है, अभिभावकों के लिए भी यह दुखद प्रतीत होती है। विद्यालय प्रांगण को आकर्षक बनाने के लिए और बच्चों में चरित्र निर्माण हेतु खेल सुविधा एक आवश्यक घटक है। अतः वर्ष 93-94, 94-95 एवं 95-96 में प्रतिवर्ष 500 विद्यालयों में खेल सामग्री मुहैया करायी जायेगी।

शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु विद्यालयों में शैक्षिक उपकरण की उपलब्धता आवश्यक है। ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड के तहत कुछ विद्यालयों में ये उपकरण उपलब्ध कराये गये हैं। 500 विद्यालय प्रति वर्ष की दर से 93-94, 94-95 एवं 95-96 में सभी विद्यालयों में शैक्षिक उपकरण देने की योजना है।

प्रारम्भिक स्तर के विद्यालयों में अन्य उपकरणों के साथ घंटी एवं श्यामपट्ट की अनिवार्यता से इनकार नहीं किया जा सकता है। बिहार शिक्षा परियोजना इस आवश्यकता के प्रति संवेदनशील है। हमारी योजना है कि 94-95 तक सभी विद्यालयों में एक-एक घंटी एवं श्यामपट्ट अवश्य दे दिये जायं।

क्षमता आधारित शिक्षण प्रणाली प्रत्येक विद्यालय के लिए आवश्यक है। वर्ष 93-94 तक 178 विद्यालयों में न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम के सभी आयाम लागू कर दिए गए हैं। वर्ष 97 के शैक्षिक वर्ष तक जिले के सभी प्रारम्भिक विद्यालयों में एम0एल0एल0 को कार्यान्वित करने की योजना हमारे सामने है।

जिले के 7500 शिक्षकों को 10/11 दिवसीय प्रशिक्षण डायट के माध्यम से देने की योजना है। आगामी तीन वर्षों में जिले में कम से कम 500 नई इकाइयाँ स्थापित होंगी और 1000 शिक्षक नियुक्त होंगे । इस प्रकार 3500 शिक्षकों के 21 दिवसीय प्रशिक्षण का कार्यक्रम हमारे सामने है। डायट, मुरौल एवं उपकेन्द्र रामबाग की पूरी क्षमता का उपयोग करने पर भी आगामी तीन वर्षों में हम अधिक से अधिक 3600 शिक्षकों का प्रशिक्षण पूरा करा पायेंगे। यदि परियोजना अवधि के भीतर सभी शिक्षकों का प्रशिक्षण पूरा कराना हमारा अभीष्ट है तो दो अन्य प्रशिक्षण महा - विद्यालयों को पूरी तरह उपयोग में लाना होगा।

=====

प्राथमिक औपचारिक शिक्षा
कार्य योजना 1994-95

आमुखी-

पृष्ठभूमि

20 वीं सदी के अंत में विश्व ने यह तीव्रता से अनुभव किया है कि जब पढ़ी-लिखी आबादी 21 वीं सदी के सुनहले सपने देख रही है तो आबादी के एक बड़े हिस्से को निरक्षरता के घटाटोप अन्धकार में भटकने के लिए नहीं छोड़ा जा सकता है। संसार की तीन चौथाई निरक्षर आबादी और स्कूल नहीं जाने वाले बच्चों की आधी आबादी विश्व के सिर्फ 9 अधिक जन संख्यावाले देश-- चीन, भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, मिस्र, इंडोनेशिया, ब्राजील एवं मैक्सिको में पायी जाती है। इनमें संसार की एक तिहाई निरक्षर आबादी भारत में है और इसी के साथ विद्यालय नहीं जाने वाले छात्रों की 22 % आबादी भी हमारे ही देश में है। हम अवगत है कि भारत की बढ़ती आबादी के साथ निरक्षरों की आबादी भी अबाध गति से बढ़ रही है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि साक्षरता एवं शिक्षा न केवल सामाजिक महत्व की बातें हैं बल्कि देश के आर्थिक विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। विकसित देशों का इतिहास और हाल में चीन में हुई चतुर्दिक प्रगति इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। साक्षरता एवं शिक्षा को विश्व संस्था यूनेस्को ने मौलिक मानवीय अधिकार के रूप में घोषित किया है। अतः सभ्य समाज का यह निष्ठापूर्ण दायित्व है कि वह साक्षरता और शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाये । भारतीय संविधान के निदेशक सिद्धान्त भी राज्य को शिक्षा और साक्षरता सर्व सुलभ बनाने हेतु निर्देश देते हैं। किन्तु हमारी व्यथा यह परिदृश्य देखकर बढ़ जाती है कि आजादी की आधी सदी बीत जाने के बाद भी भारत की आधी आबादी अशिक्षित है।

ड्रॉप आउट

इतना ही नहीं नामांकित बच्चों में जहाँ वर्ग 1 से 5 तक 47.9% ड्रॉप आउट की दर है वहाँ वर्ग 1 से 8 तक ड्रॉप आउट दर बढ़कर 65.4% हो गयी है। निश्चय ही सभ्य समाज के लिए यह गंभीर चिन्ता का विषय है। चिन्ता इस बात से और बढ़ जाती है कि ड्रॉप आउट में लड़कियों एवं वंचित वर्ग के बच्चों की संख्या और अधिक है। अतः जब तक लड़के और लड़कियों के बीच और सामान्य जाति तथा अनुसूचित जाति के बच्चों के बीच की असमानता दूर नहीं की जाती है तब तक देश का संतुलित विकास संभव नहीं है। समस्या की इस महान विकरालता के बीच बिहार शिक्षा परियोजना इस राज्य में लायी गई है।

बिहार शिक्षा परियोजना
नियुक्त भवन, मुजफ्फरपुर।

वर्ष 93-94 की प्रगति का विहावलोकन

प्राथमिक औपचारिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण, तृणस्तरीय योजना, विद्यालय मानचित्रण, ग्राम शिक्षा समिति का गठन, न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति आदि पर आयोजित कार्यशाला:- इन विषयों पर अप्रिल 93 से दिसम्बर 93 के बीच जिला, प्रखंड एवं गुच्छ स्तर पर 17 कार्यशालाएं आयोजित की गई जिनमें 510 शिक्षकों/शिक्षाकर्मियों/साधनसेवियों ने भाग लिया। कार्यशालाओं में नामांकन अभियान में शिक्षकों, शिक्षाकर्मियों एवं अभिभावकों की भागीदारी, तृणस्तरीय योजना के निर्माण एवं विद्यालय मानचित्रण में समुदाय की सहभागिता तथा न्यूनतम अधिगम स्तर की संप्राप्ति में शिक्षकों तथा अभिभावकों की भूमिका रेखांकित की गई।

आधारभूत आँकड़ों के संकलन हेतु बेंचमार्क सर्वे:- जिले के 14 प्रखण्डों के प्रति प्रखण्ड दो ग्राम की दर से 28 ग्रामों में आधारभूत आँकड़ों के संकलन हेतु प्राथमिक शिक्षकों के माध्यम से बेंचमार्क सर्वे कराया गया है। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है। इन आधारभूत आँकड़ों को प्रतिदर्श मानकर वर्ष 94-95 की कार्ययोजना तैयार की जा रही है।

नामांकन संबंधी आँकड़ों का संकलन:- 31.3.93, 30.6.93, 30.9.93 एवं 31.12.93 को नामांकन संबंधी आँकड़े सभी मध्य/प्राथमिक विद्यालयों से परियोजना कार्यालय द्वारा निर्धारित प्रपत्र में संकलित किए गये हैं। ये आँकड़े कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों से संबंधित हैं इनमें बालवंजी के आधार पर बच्चों की संख्या तथा तिमाही के अन्त में अद्यतन नामांकन के आधार पर उपस्थिति पंजी से प्राप्त आँकड़े सम्मिलित किए गये हैं। इसके अतिरिक्त निजी विद्यालयों एवं अनौपचारिक केन्द्रों पर नामांकित बच्चों की संख्या भी प्राप्त की गई है। जहाँ 534 निजी प्राथमिक विद्यालयों में अनुमानत: 65 हजार बच्चे नामांकित हैं वहाँ अनौपचारिक केन्द्रों पर 5500 बच्चों का नामांकन हुआ है।

ग्राम शिक्षा समिति:- जिले के 1578 मध्य/प्राथमिक विद्यालयों में से 1499 मध्य/प्राथमिक विद्यालयों में पूर्व से गठित ग्राम शिक्षा समिति का पुनर्गठन किया गया है। ग्राम शिक्षा के सदस्यों के प्रशिक्षण हेतु जिला स्तरीय 5: साधनसेवी एस0सी0ई0आर0टी0 में प्रशिक्षित

कराये गए हैं। मीनापुर प्रखण्ड की 4 ग्राम शिक्षा समितियों के 40 सदस्यों का प्रशिक्षण पूरा किया गया है। विद्यालय भवन, शौचालय एवं चापाकल निर्माण ग्राम शिक्षा समितियों द्वारा चयनित अभिकर्त्ताओं के माध्यम से कराया गया है। इसके अतिरिक्त शिक्षण किट वितरण/उपस्करों का वितरण तथा 300 प्राथमिक विद्यालयों में स्थापित पुस्तकालयों में पुस्तकों के वितरण से संबंधित कार्यों में ग्राम शिक्षा समिति की सहभागिता प्राप्त की गई है। नामांकन अभियान में भी ग्राम शिक्षा समिति की रचनात्मक भूमिका रही है।

पुनर्गठित ग्राम शिक्षा समितियों की बैठकें नियमित रूप से होने लगी हैं। बैठकों की कार्यवाहियाँ कार्यवाही पुस्तिका में दर्ज की जाती हैं। कुछ समितियों से नियमित रूप से कार्यवाही संबंधी प्रतिवेदन भी प्राप्त हो रहे हैं।

एम0एल0एल0 कार्यक्रम:- एम0एल0एल0 विद्यालयों में सत्रान्त परीक्षण संपन्न हो गया है तथा उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण चल रहा है।

शिक्षक इकाइयों का पुनर्गठितकरण:- जिला स्थापना समिति की बैठक आयोजित कर जिन प्राथमिक विद्यालयों में छात्रोपस्थिति के अनुपात में शिक्षकों की संख्या अधिक या कम पाई गई शिक्षकाइयों में समायोजन की कार्रवाई की गई है। जनवरी 94 में शिक्षक/छात्र अनुपात के अनुरूप इकाइयों का समायोजन प्रभावी हो जाएगा।

शिक्षण किट वितरण:- शैक्षिक वर्ष 93 में 1,57,660 पाठ्य पुस्तकें अनुसूचित जाति के वर्ग। से 5 के बच्चों के बीच वितरित की गई। आगामी शैक्षिक सत्र के लिए वर्ग। से 4 तक के लिए पाठ्य पुस्तकें प्राप्त हो गई हैं। लेखन सामग्री का संकलन किया जा रहा है।

शिक्षण किट वितरण संबंधी जिला आदेश संलग्न।

निरीक्षी पदाधिकारियों का प्रशिक्षण:- जिले के 30 निरीक्षी पदाधिकारियों के उन्मुखीकरण हेतु दो बार प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षणोपरान्त निरीक्षी पदाधिकारियों के आचार और कार्य में गुणात्मक सुधार परिलक्षित हुआ है।

गणित शिक्षण हेतु शिक्षकों का उन्मुखीकरण:- 40 एम0एल0एल0 प्राथमिक विद्यालयों के गणित शिक्षकों का 5 दिवसीय प्रशिक्षण डायट, सुरौल में सम्पन्न हुआ।

प्रधानाध्यापकों का प्रशिक्षण:- 40 एम0एल0एल0 विद्यालयों के गुच्छ प्रधानों का 5 दिवसीय प्रशिक्षण डायट उपकेन्द्र रामबाग में सम्पन्न हुआ।

गुरूगोष्ठी:- प्रत्येक प्रखण्ड में अंचलवार गुरूगोष्ठियों के आयोजन हेतु रोस्टर बना दिया गया है जिसके आधार पर नियमित रूप से गुरूगोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं। गुरूगोष्ठियों में प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी के अतिरिक्त जिला स्तर के परियोजना कर्मी भी भाग लेते हैं और निर्धारित विषय, जैसे, नामांकन अभियान में शिक्षकों की भूमिका, शैक्षिक किट वितरण कैसे प्रभावी बनाया जाय, बच्चों में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य चेतना का विकास कैसे हो तथा परिवेशीय सुधार और पर्यावरण संतुलन हेतु कौन-कौन से आवश्यक कार्य किए जायें आदि विषयों पर चर्चा होती है। प्रतिभागी शिक्षकों को लिखित सामग्री भी दी जाती है।

.....

इन्टरवेंशन पैकेज:- परियोजना से दी जानेवाली विविध सुविधाओं के लिए जिले के 684 प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

पुस्तकालय की स्थापना:- 500 प्राथमिक विद्यालयों में जहाँ भवन उपलब्ध हैं पुस्तकालय की स्थापना की जा रही है। चयनित पुस्तकों की आपूर्ति हेतु आदेश निर्गत किया जा चुका है। जनवरी 94 में पुस्तकों की आपूर्ति संभावित है।

खेलकूद सामग्री:- 500 चुने गये प्राथमिक विद्यालयों में खेलकूद सामग्री की आपूर्ति हेतु देश के प्रतिष्ठित खेलकूद सामग्री निर्माण प्रतिष्ठानों से सम्पर्क किया जा रहा है।

विद्यालय उपकरण:- 500 चयनित प्राथमिक विद्यालयों में नवाचारयुक्त शैक्षिक उपकरण की आपूर्ति हेतु परियोजना स्तर से कार्रवाई की गई है।

विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम:- जिले के कुढ़नी प्रखण्ड की कुछ पंचायतों में विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के अन्तर्गत एक कार्ययोजना तैयार की जा रही है।

शिक्षक पुरस्कार:- जिले के 30 शिक्षकों को पुरस्कृत एवं 31 शिक्षकों को उत्कृष्ट कार्यों के लिए मानपत्र द्वारा सम्मानित किया गया है।

विद्यालय उपस्कर:- 124 मुसहर उप विद्यालयों में कुर्सी एवं टेबुल की आपूर्ति कर दी गई है। 500 प्राथमिक विद्यालयों में उपस्कर आपूर्ति हेतु आदेश निर्गत है। जनवरी 94 में उपस्करों की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए गी।

श्यामपट्ट की आपूर्ति:- 1978 प्राथमिक विद्यालयों में श्यामपट्ट की आपूर्ति हेतु आई0पी0सी0एल0 एवं स्थानीय काष्ठ कर्मियों से सम्पर्क किया जा रहा है।

घंटी की आपूर्ति:- सभी प्राथमिक विद्यालयों में एक-एक घंटी की आपूर्ति की जा रही है।प्राथमिक विद्यालयों में उपस्थिति/प्रवेश/बाल पंजी की आपूर्ति:- जिले के सभी प्राथमिक विद्यालयों में शैक्षिक वर्ष 94 में शिक्षक/छात्र उपस्थिति पंजी बाल पंजी एवं प्रवेश पंजी की आपूर्ति करने हेतु कार्रवाई आरम्भ कर दी गई है।

विद्यालय भवन निर्माण कार्य:- वर्ष 92-93 में आरंभ किए गये 84 प्राथमिक विद्यालयों में से 61 विद्यालयों में निर्माण कार्य पूरा हो गया है। वर्ष 93-94 में 115 भवनहीन प्राथमिक विद्यालयों को निर्माण हेतु चयनित किया गया है। विद्यालय भवन, शौचालय एवं चापाकल निर्माण हेतु जिला आदेश पुस्तिका के रूप में निर्गत किया गया है। (एक प्रति संलग्न)

शौचालय:- वर्ष 92-93 में 140 प्राथमिक विद्यालयों में शौचालय निर्माण कार्य आरम्भ कराया गया था जिनमें से 131 विद्यालयों में निर्माण कार्य पूरा हो गया है। वर्ष 93-94 के लिए 684 प्राथमिक विद्यालय शौचालय हेतु चुने गये हैं। कार्यादेश निर्गत हो चुका है।

चापाकल:- वर्ष 92-93 में 140 प्राथमिक विद्यालयों में चापाकल गाड़ने की कार्रवाई आरम्भ की गई थी। जो अब पूरी हो गई है। वर्ष 93-94 में 577 योजनाएं ली गई हैं जिनमें कार्यादेश निर्गत कर दिया गया है।

विद्यालयों का निरीक्षण:- प्रति माह निरीक्षी पदाधिकारियों के लिए विद्यालयों के निरीक्षण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। तदनुसार निर्धारित प्रपत्र में निरीक्षण

प्रतिवेदन प्राप्त हो रहे हैं जिनकी समीक्षा की जाती है और अपेक्षित कार्यवाई की जाती है। निरीक्षण,प्रतिवेदनों से स्पष्ट है कि शिक्षकों के विद्यालय आने-जाने में नियमितता आई है,छात्रोपस्थिति में सुधार हुआ है और पठन-पाठन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई।

मूल्यांकन दल का गठनः- डायट मुरौल एवं उपकेन्द्र रामबाग में प्रशिक्षित शिक्षकों की कार्यक्षमता एवं अभिवृत्यात्मक सुधार की जांच हेतु जिला स्तर पर एक मूल्यांकन दल का गठन किया गया है।मूल्यांकन दल में प्रशिक्षण कोषांग के साधनसेवी सम्मिलित किए गये हैं। नये शैक्षिक सत्र में मूल्यांकन दल को क्षेत्र भ्रमण के लिए भेजा जाएगा।

वाह्य एजेन्सी द्वारा मूल्यांकनः- एस0सी0ई0आर0टी0 के प्रो0 सेतु द्वारा डायट, मुरौल एवं उपकेन्द्र रामबाग में प्रशिक्षण की विधि तथा उसकी गुणवत्ता का मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन प्रतिवेदन अप्राप्त।

प्रखण्ड अनुश्रवण समितिः- सभी प्रखण्डों में प्रखण्ड स्तरीय अनुश्रवण समितियों का गठन किया गया है जिसमें प्रखण्ड विकास पदाधिकारी की अध्यक्षता में प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी एवं अन्य पर्यवेक्षी पदाधिकारी रखे गये हैं। किये जा रहे कार्यक्रमों के अनुश्रवण हेतु एक अनुश्रवण पत्रक भी तैयार किया गया है।{प्रति संलग्न}

कार्ययोजना 94-95 प्राथमिक औपचारिक शिक्षा

मुख्य गतिविधियों का विवरण

1. कार्यशाला :- प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण को दृष्टि में रखते हुए मूल्यांकन, विश्लेषण एवं विश्लेषण से प्राप्त बिन्दुओं पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। वर्ग 1 एवं वर्ग 2 के विशेष शिक्षण की पद्धति निर्धारित करने हेतु दो कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी।

(ब) ग्राम शिक्षा समिति एवं न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा।

2. आधारभूत आंकड़ों के संकलन हेतु बेंचमार्क सर्वे :- सर्वेक्षण कार्य गायघाट, मीनापुर एवं कांटी प्रखण्डों में कराया जाएगा।

3. शिक्षक संगठनों के साथ सम्मेलन :- सबके लिए प्राथमिक शिक्षा सुलभ कराने, नामांकन अभियान को सुदृढ़ आधार प्रदान करने हेतु जिला स्तर पर दो सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे।

4. नामांकन अभियान एवं अभिभावक शिक्षक सहयोग के लिए प्रखण्ड स्तर पर एक-एक कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा।

5. ग्राम शिक्षा समिति :- ग्राम शिक्षा समितियों के पुनर्गठन एवं दो दिवसीय प्रशिक्षण हेतु 2000 का लक्ष्य रखा गया है। प्रखण्ड स्तर पर साधनसेवियों को तैयार करने हेतु प्रति प्रखण्ड पाँच साधनसेवियों का जिला स्तर पर प्रशिक्षण कराया जाएगा ताकि वे आगामी दो वर्षों में सभी ग्राम शिक्षा समितियों को प्रशिक्षित कर सकें।

6. इनोवेटिव स्कूल उपकरण - शैक्षिक उन्नयन हेतु (10000 रुपया प्रति विद्यालय):- अभी तक विद्यालयों में शैक्षिक उपकरण नहीं दिये जा रहे हैं जिसके फलस्वरूप शिक्षण कार्यक्रम बिल्कुल नीरस और उबाऊ हो गया है। बच्चों की संप्राप्ति में गुणात्मक सुधार लाने हेतु 500 प्राथमिक विद्यालयों में नमावार के आधार पर शैक्षिक उपकरण देने का प्रस्ताव है।

7. खेल सामग्री (प्रति विद्यालय 1500/=) :- शिक्षण को अधिक आकर्षक और रुचिकर बनाने हेतु शैक्षिक उपकरणों के साथ बच्चों के लिए खेलकूद सामग्री भी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। विविध खेल कार्यक्रमों में भाग लेने से एक ओर जहाँ बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य में मजबूती आएगी वहीं उनके दृष्टिकोण में व्यापकता बढ़ेगी 500 विद्यालयों में खेल सामग्री देने का प्रस्ताव है।

8. शिक्षण किट की आपूर्ति :- वर्ष 92-93 एवं 93-94 में अनुसूचित जाति के लड़कों तथा सभी जातियों की लड़कियों को निःशुल्क शिक्षण किट आपूरित किए गए हैं। शेष अनुपात के आधार पर शिक्षण किट वर्ग 1 से 5 के सभी बच्चों को बिना किसी भेदभाव के देना चाहिए। शिक्षण किट बच्चों की न्यूनतम आवश्यकता है जिसकी आपूर्ति समानता के आधार पर होनी चाहिए। इस दृष्टि से वर्ग 1 से 5 के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षण किट की आपूर्ति प्रस्तावित है।

9. विद्यालय पुस्तकालय की स्थापना (2000 प्रति विद्यालय) :- वर्ष 94-95 में 500 नये मध्य/प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना का प्रस्ताव है। पुस्तकालय हेतु वैसे विद्यालय चयनित किए गये हैं जहाँ पूर्व से भवन उपलब्ध है अथवा परियोजना मद से भवन निर्मित हो गए हैं। वर्ष 92-93 में 300, 93-94 में 500 एवं 94-95 में 500 मध्य/प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय की स्थापना होने पर कुल 1300 विद्यालय आच्छादित होंगे। शेष विद्यालयों में आगामी दो वर्षों में पुस्तकालय की स्थापना की जा सकती है।

10. भौतिक संरचनाओं का निर्माण :- वर्ष 92-93 में 84 एवं 93-94 में 115 प्राथमिक विद्यालय निर्माण हेतु लिये गये हैं। वर्ष 94-95 में 100 अन्य भवनहीन प्राथमिक विद्यालयों में भवन निर्माण कराने पर जिले में कोई भवनहीन प्राथमिक विद्यालय नहीं रह जाएगा।

(क) विद्यालय मरम्मत :- जिले में 100 ऐसे मध्य/बुनियादी विद्यालय हैं जहाँ मरम्मत की अधिक आवश्यकता है। यदि एक लाख रुपये प्रति विद्यालय व्यय कर मरम्मत कार्य आरम्भ किया जाए तो अधिक नामांकन वाले मध्यविद्यालयों की स्थिति में काफी सुधार होगा।

(ख) शौचालय निर्माण :- वर्ष 92-93 में 140 एवं 93-94 में 684 विद्यालय शौचालय निर्माण हेतु चुने गये। 455 ऐसे प्राथमिक विद्यालय हैं जहाँ शौचालय नहीं हैं। इन शौचालय विहीन विद्यालयों में शौचालय निर्माण प्रस्तावित है।

(ग) वर्ष 92-93 में 140 एवं 93-94 में 574 प्राथमिक विद्यालय चापाकल निर्माण हेतु चयनित किये गये। जिले में 300 ऐसे प्राथमिक विद्यालय हैं जहाँ चापाकल की आवश्यकता बनी हुई है। वर्ष 94-95 में 300 विद्यालयों में चापाकल निर्माण प्रस्तावित है।

11. विद्यालय उपस्कर :-(प्रति विद्यालय 7200) - वर्ष 93-94 में 500 प्राथमिक विद्यालयों में उपस्कर की आपूर्ति की जा रही है। आगामी वर्ष 500 अन्य प्राथमिक विद्यालयों में उपस्कर देने का प्रस्ताव है जहाँ विद्यालय भवन पूर्व से निर्मित हैं अथवा परियोजना मद से निर्माणाधीन हैं।

12. विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम (कुदनी प्रखण्ड की 4 पंचायतों में) :- प्राथमिक कक्षाओं के छात्र/छात्राओं के बीच शारीरिक स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं परिवेशीय सुधार और पर्यावरण की रक्षा के संबंध में मोटी जानकारी देने हेतु एक कार्य - योजना तैयार की गई है। स्वास्थ्य संबंधी जो कार्यक्रम सरकारी विभागों या दूसरी एजेन्सियों द्वारा चल रहे हैं उनमें परियोजना द्वारा सहयोग प्रदान किया जाएगा तथा सभी विभागों के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में तालमेल बिठाने के उपाय किये जायेंगे। स्वास्थ्य संबंधी बुकलेट एवं पाठ योजना को विद्यालयों में वितरित करने का प्रस्ताव है। स्वास्थ्य संबंधी सामाजिक चेतना के जागरण हेतु गोष्ठियों का आयोजन भी प्रस्तावित है।

13. विद्यालय आधारित कार्यक्रम (प्रति प्रखण्ड 2) :- विद्यालयों में निबन्ध लेखन, वाद-विवाद प्रतियोगिता, चित्रांकन एवं खेलकूद प्रतियोगिता से संबंधित कार्यक्रम चलाये जायेंगे। इन कार्यक्रमों में बच्चों के साथ अभिभावकों एवं ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों को जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।

14. विद्यालय पुरस्कार :- उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए आगामी वर्ष शिक्षक पुरस्कार योजना के साथ विद्यालय पुरस्कार योजना प्रस्तावित है। पुरस्कार हेतु नामांकन, निर्माण, परिवेशीय सुधार एवं अन्य विशिष्ट कार्य रखे जायेंगे जिनके आधार पर शिक्षकों एवं विद्यालयों का चयन किया जाएगा।

15. बुनियादी विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण :- जिले के 26 बुनियादी विद्यालयों में पर्याप्त भूमि उपलब्ध है, साथ ही भवन भी उपलब्ध है पर भूमि की व्यवस्था एवं भवन का रखरखाव समुचित रूप से नहीं हो रहा है। भूमि व्यवस्था एवं भवन के रखरखाव पर ठोस कार्यक्रम प्रस्तावित है।

16. प्रशिक्षण :- विवरण संलग्न।

17. एम0एल0एल0 कार्यक्रम :- विवरण संलग्न।

18. गुरू गोष्ठी :- विद्यालय स्तर पर गुरूगोष्ठियों को अधिक प्रभावी बनाने की योजना है। प्रतिमाह गुरूगोष्ठियों के लिए विचार हेतु विषय निर्धारित किया गया है। गुरूगोष्ठियों में जिला परियोजना स्तर के पदाधिकारी भी भाग लेंगे और विषयों के अनुरूप प्रतिभागियों को लिखित सामग्री दी जाएगी।

19. अध्ययन भ्रमण :- पुरस्कृत शिक्षकों एवं नामांकन तथा उपस्थिति की दृष्टि से अधिक उपलब्धि वाले विद्यालयों के चुने हुए शिक्षकों को राज्य के भीतर तथा राज्य से बाहर भ्रमण हेतु भेजने का प्रस्ताव है। आगामी वर्ष प्रति तिमाही एक-एक टोली को बाहर भेजने की योजना है।

20. विद्यालयों में वर्ग पंजी, शिक्षक पंजी, प्रवेश पंजी और बाल पंजी की आपूर्ति:-

जिले के 1978 प्रारम्भिक विद्यालयों में विभिन्न पंजियों के अभाव में नामांकन संबंधी विविध आँकड़ों के संकलन में कठिनाई होती है। अत: नामांकन अभियान को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से सभी प्रारंभिक विद्यालयों में न्यूनतम आवश्यकता के अनुरूप इन पंजियों की आपूर्ति की व्यवस्था प्रस्तावित है। इस पर 2,70,000 का व्यय अनुमानित है।

=====

नामांकन

प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण को सफल बनाने हेतु अधिकतम नामांकन, कम से कम पलायन एवं अधिकतम ठहराव और उपलब्धि को प्राप्त करना हमारा उद्देश्य है। इस कार्य के शिक्षक, अभिभावक, शैक्षिक संस्थाएं बच्चे और समुदाय प्रमुख घटक हैं। इन सभी घटकों के पारस्परिक सहयोग से "सबके लिए शिक्षा" का लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है।

0 से 6 एवं 6 से 14 आयुवर्ग के सभी बच्चों की जानकारी हासिल करने के लिए बेंचमार्क सर्वे के अन्तर्गत पारिवारिक सर्वेक्षण कराया जा रहा है और अब तक जो आँकड़े प्राप्त हुए हैं उनके मानक को आधार मानते हुए विद्यालयवार बालपंजी से प्राप्त आँकड़ों को ध्यान में रखकर नामांकन की योजना तैयार की गई है।

शैक्षिक वर्ष 94 से 97 तक परियोजना अवधि के लिए शतप्रतिशत नामांकन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्राप्त आँकड़ों पर एक दृष्टि डालनी आवश्यक है। 30.6.93 को वर्ग 1 से 5 तक नामांकित छात्र/छात्राओं की स्थिति निम्न प्रकार है:-

सामान्य		अनु0जाति		कुल छात्र	कुल छात्रा
छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा		
1,66,195	96,186	43,447	22,202	2,09,894	1,18,509

1993 जनवरी में तैयार की गई बाल पंजी के आधार पर 6 से 14 आयुवर्ग के अनामांकित बच्चों की संख्या :-

सामान्य		अनुसूचित जाति	
बालक	बालिका	बालक	बालिका
2,66,951	1,87,019	61,420	42,173

बालपंजी में अंकित कुल अनामांकित 5,57,564 - 3,28,403 = 2,29,161.

जिले की कुल आबादी का 18.92 प्रतिशत बालपंजी की आबादी है जबकि औसतन पूरी आबादी का 20 प्रतिशत बच्चे 6-14 आयुवर्ग के होते हैं। जून 93 में बाल पंजी की आबादी का 67.68 प्रतिशत भाग विद्यालयों में नामांकित था। इस प्रकार बाल पंजी का 41.10 प्रतिशत भाग सरकारी विद्यालयों की नामांकन पंजी के बाहर माना जाएगा।

आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि आगामी शैक्षिक सत्र में लगभग ढाई लाख बच्चे उपलब्ध है जिनमें अनुसूचित जाति के बच्चों की संख्या 65000 से ऊपर है। बालपंजी की जनसंख्या में लड़कियों की संख्या लगभग 1,15,000 है। आगामी नामांकन योजना में इन ढाई लाख बच्चे-बच्चियों के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक माध्यम से नामांकन की व्यवस्था सुनिश्चित करनी है।

जिले में सरकारी स्तर पर 1978 मध्य/प्राथमिक विद्यालय उपलब्ध हैं जिनमें कार्यरत शिक्षकों की संख्या लगभग 7200 है। इन सरकारी विद्यालयों के समानान्तर जिले में लगभग 550 निजी विद्यालय भी चल रहे हैं जहाँ नामांकित बच्चों की संख्या लगभग 45000 है।

सरकारी एवं निजी क्षेत्र के प्रारम्भिक विद्यालयों के अतिरिक्त जिले के तीन प्रखण्डों में 215 अनौपचारिक केन्द्र कार्यरत हैं जहाँ 5500 बच्चों का नामांकन हो चुका है। मार्च 93 तक 200 नये अनौपचारिक केन्द्र कार्यरत हो जाएंगे जहाँ पाँच-छः हजार अतिरिक्त बच्चों का नामांकन होगा।

विगत दो वर्षों के नामांकन अभियान के दौरान प्राप्त वृद्धि दर को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों में उपस्कर, खेलसामग्री, शैक्षिक उपकरण, पुस्तकालय एवं शिक्षण किट आदि का प्रावधान होने से आगामी वर्षों के बच्चों के नामांकन दर में उल्लेखनीय वृद्धि की आशा की जाती है। आगामी तीन वर्षों में 2.35 प्रतिशत विभु संख्या को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक सत्र 94-96 के लिए निम्नप्रकार कार्य - योजना प्रस्तावित है :-

शैक्षिक सत्र		सरकारी क्षेत्र के विद्यालयों में।	निजी क्षेत्र के विद्यालयों में।	अनौपचारिक विद्यालयों में।
1994	-	63,000	18,000	9,000
1995	-	47,000	14,000	18,000
1996	-	45,000	10,000	25,000

न्यूनतम नामांकन वाले विद्यालयों पर विशेष निगरानी :- प्रत्येक प्रखण्ड के न्यूनतम नामांकन वाले 20-20 विद्यालयों की सूची कम्प्यूटर प्रभाग द्वारा निकाली गई है। परियोजना स्तर से पदाधिकारियों के बीच प्रखण्डों का आवंटन कर दिया गया है। प्रतिनियुक्त पदाधिकारी आवंटित प्रखण्डों में जाकर न्यूनतम नामांकन वाले विद्यालयों का निरीक्षण करेंगे और विश्लेषण प्रतिवेदन निम्न बिन्दुओं पर देंगे :-

1. कम नामांकन का कारण - क्या विद्यालय भवनहीन है?
2. क्या विद्यालय शिक्षक विहीन है?
3. क्या शिक्षक अप्रशिक्षित हैं?

4. क्या समुदाय/अभिभावक विद्यालय के प्रति उदासीन है?

5. क्या विद्यालय आवागमन की दृष्टि से दुर्गम है?

6. कोई अन्य कारण।

प्राप्त विश्लेषण प्रतिवेदन के आधार पर इन रेखांकित विद्यालयों में नामांकन - वृद्धि हेतु विशेष उपाय किये जायेंगे।

जिले की सभी पंचायतों के लिए पंचायतवार विद्यालय सूची तैयार की गई है और उसमें विद्यालयवार नामांकन एवं बालपंजी में अंकित संख्या को दर्शाते हुए बालपंजी से नामांकन को घटाकर जो अवशेष संख्या रह जाती है वही वर्ष 94-95 के लिए पंचायत का नामांकन लक्ष्य रखा गया है। कम्प्यूटर शीट की ये प्रतियाँ सभी पंचायतों, प्रखण्डों एवं निरीक्षी पदाधिकारियों को दे दी गई है। इसके आधार पर वे नियमित रूप से नामांकन अभियान की प्रगति की मोनीटरिंग करेंगे। शिक्षक इकाइयों का युक्तिकरण भी इस दिशा में एक कारगर कदम होगा जिसके लिए जिला प्रशासन आवश्यक कदम उठा रहा है।

एम0 एल0 एल0 कार्यक्रम

प्राथमिक शिक्षा सबको उपलब्ध कराने,बच्चों के खीजन को रोकने तथा प्रत्येक कक्षा के लिए निर्धारित दक्षता की संप्राप्ति हेतु न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम जिले के 178 प्रारंभिक विद्यालयों में चल रहा है। एन0सी0ई0आर0टी0द्वारा शैक्षिक सत्र 92 में मीनापुर प्रखण्ड के 77 प्रारंभिक विद्यालयों में एम0एल0एल0 कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षकों का 10 दिवसीय प्रशिक्षण पूरा कराकर दिसम्बर,92 में बच्चों का सत्रांत परीक्षण कराया गया। शैक्षिक वर्ष 93 में मीनापुर के 77 प्रारंभिक विद्यालयों के अतिरिक्त मोतीपुर एवं कांटी प्रखण्डों से 50-50 प्रारंभिक विद्यालय इस कार्यक्रम में शामिल किये गये। सभी संबंधित शिक्षकों का 10/11 द्वितीय प्रशिक्षण पूरा कराया गया है और तीनों प्रखण्डों के 178 प्रारंभिक विद्यालयों में सत्रान्त शिक्षार्थी संप्राप्ति परीक्षण वर्ग 1 से 5 तक के 34100 बच्चों के लिए आयोजित किया गया। उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण किया जा रहा है।

जनवरी,94 में वर्ग 1 से 5 तक के शिक्षार्थियों का कक्षा स्तर पूर्व परीक्षण आयोजित किया जाएगा। मार्च के अंतिम सप्ताह में इकाई परीक्षण- 1 मई के अंतिम सप्ताह में इकाई परीक्षण-2,जुलाई के अंतिम सप्ताह में,इकाई परीक्षण-3,सितम्बर के अंतिम सप्ताह में इकाई परीक्षण-4,नवम्बर के अंतिम सप्ताह में इकाई परीक्षण-5, आयोजित किये जायेंगे।

प्रति माह की 6: तारीख को मीनापुर प्रखण्ड में, पाँच तारीख को कांटी प्रखंड में चार तारीख को मोतीपुर प्रखंड में एम0एल0एल0 कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा की जाएगी।

वर्ष 94 में मीनापुर,मोतीपुर एवं कांटी प्रखण्डों के शेष सभी प्रारंभिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। दिसम्बर,94 में मीनापुर प्रखंड के कुल 157 विद्यालय,कांटी प्रखंड के 181 विद्यालय एवं मोतीपुर प्रखंड के 149 विद्यालयों में सत्रांत शिक्षार्थी संप्राप्ति परीक्षण आयोजित किया जाएगा। जनवरी,95 से इन तीनों प्रखण्डों के कुल 487 विद्यालयों में न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम आरंभ किया जाएगा।

एम0एल0एल0 कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित सभी उर्दू विद्यालयों में शिक्षार्थियों का संप्राप्ति परीक्षण उर्दू माध्यम से आयोजित किया गया। वर्ष 94 में सत्रांत परीक्षण उर्दू माध्यम के 20 विद्यालयों में अरबी लिपि में सभी वर्गों के लिए प्रश्नपत्र छपवाये जाएंगे। वर्ग 4 एवं 5 के हिन्दी माध्यम वाली शाखों के लिए संस्कृत का संप्राप्ति परीक्षण भी आयोजित किया जाएगा।

-----::0::-----

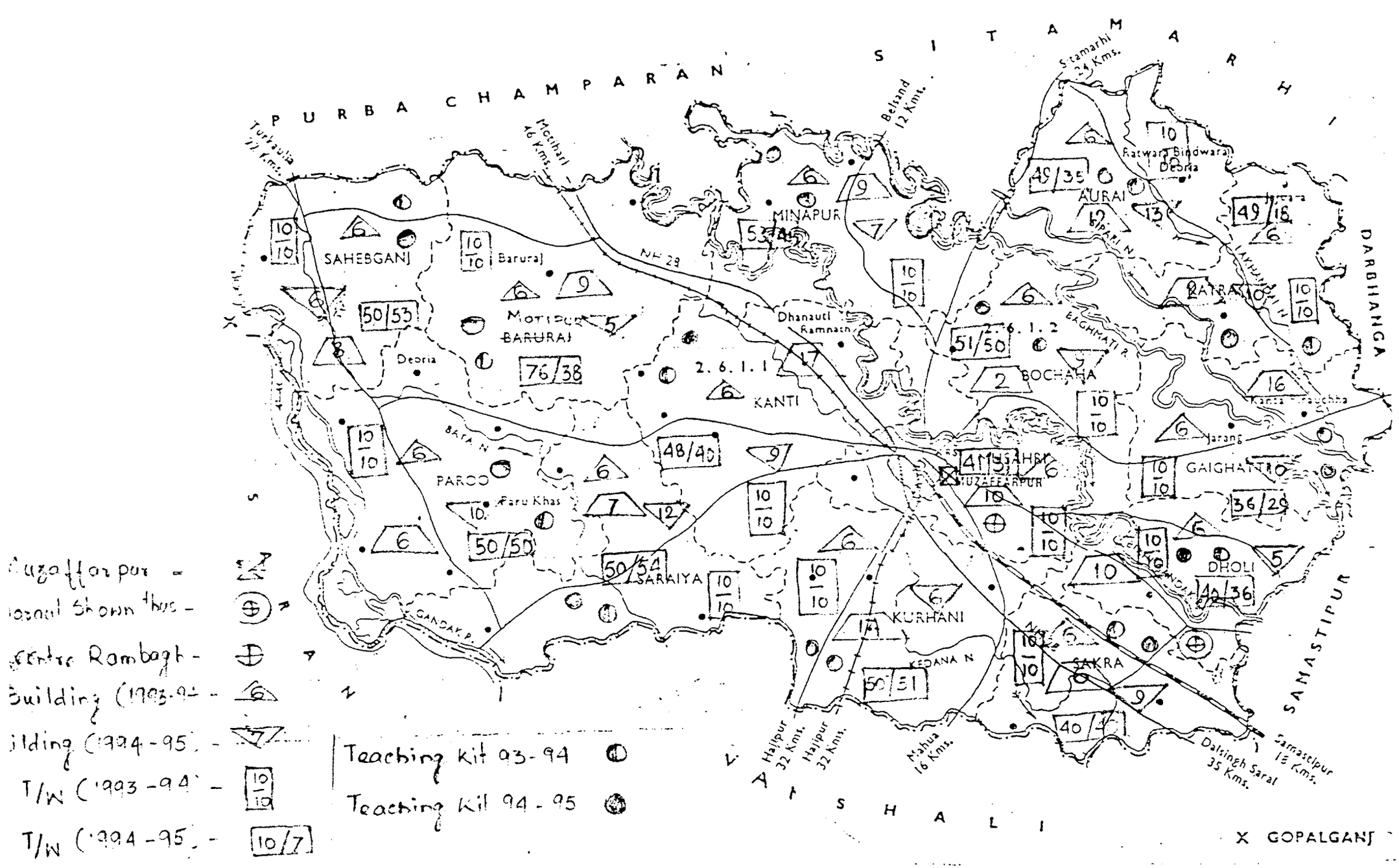

PRIMARY EDUCATION (FORMAL)

B.E.P. MUZAFFARPUR

प्राथमिक औपचारिक शिक्षा - मुख्य गतिविधियाँ/बजट वर्ष 94-95

	भौतिक		वित्तीय (लाख में)
1. कार्यशालाओं का आयोजन:-			
(क) नामांकन/प्रशिक्षण का मूल्यांकन, विश्लेषण एवं इनसे उद्भूत बिन्दुओं पर दो कार्यशालाएँ। -	2	-15000x2 =	0.30
(ख) वर्ग 1 एवं 2 के विशेष शिक्षण की पद्धति का निर्धारण। -	2	-15000x2 =	0.30
(ग) ग्राम शिक्षा समिति के कार्यकलाप एवं न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम। -	2	-15000x2 =	0.30
(घ) नामांकन अभियान में शिक्षकों/अभिभावकों की भागीदारी (प्रति प्रखण्ड एक कार्यशाला)	15	3000x1x15 =	0.45
2. शिक्षक संगठनों के साथ सम्मेलन-सबके लिए प्राथमिक शिक्षा सुलभ कराने/नामांकन अभियान को सुदृढ़ आधार प्रदान करने हेतु (एक दिवसीय)	2	3000x2 =	0.06
3. आधारभूत आँकड़ों के संकलन हेतु बेंचमार्क सर्वे सिर्फ तीन प्रखण्डों में। 1. फौर्मेट मुद्रण 2. सांख्यिकी संकलन 3. विश्लेषण/प्रतिवेदन	3	4000x3 =	0.12
4. ग्राम शिक्षा समिति :-			
(क) प्रति प्रखण्ड 3 साधनसेवियों का प्रशिक्षण (5 दिवसीय)	15x3	(बजट प्रावधान प्रशिक्षण प्रभाग)	
(ख) ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों का दो दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण।	2000	(बजट प्रावधान प्रशिक्षण प्रभाग)	
5. इनोवेटिव स्कूल उपकरण (प्रति विद्यालय 10000/=)	500	10000x500 =	50.00
6. खेल सामग्री (प्रति विद्यालय 1500/=)	500	500x1500=	7.50
7. शिक्षण किट की आपूर्ति वर्ग 1 से 5 तक नामांकित सभी लड़के/लड़कियों के लिए।	3.91 (लाख)	3.91x55 =	215.05
8. विद्यालय पुस्तकालय की स्थापना प्रति विद्यालय 2000/=	500	500x2000 =	10.00
9. भौतिक संरचनाओं का निर्माण :-			
(क) 100 भवनहीन मध्य/प्राथमिक विद्यालयों का निर्माण -	100	100x177500 =	178.00
(ख) विद्यालय मरम्मत 100 बुनियादी/मध्य विद्यालयों की			
I. साधारण मरम्मति --	100	100x1750 =	1.75
II. विशेष मरम्मत (50 विद्यालय)	50	50x1.0लाख =	50.00
(ग) शौचालय निर्माण -	455	455x1750 =	7.96
(घ) चापाकल निर्माण -	300	300x5000 =	15.00

10.	विद्यालय उपस्कर (प्रति विद्यालय 7200)	500	500×7200	=	3.10
11.	विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम (25 ग्रामों में)	4 पंचायत	10000×4	=	0.40
12.	विद्यालय आधारित कार्यक्रम (प्रति प्रखण्ड 2)	15×2	5000×30	=	1.50
13.	विद्यालय पुरस्कार (प्रति प्रखण्ड 2)	16×2	500×32	=	0.16
14.	अध्ययन भ्रमण (प्रति तिमाही एक-एक टोली)	10×4	-	=	1.00
15.	प्रशिक्षण :- विवरणी अलग से संलग्न।				
16.	सभी विद्यालयों को श्यामपट्ट	2000×300		=	5.00
17.	न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम (मूल्यांकन, अनुश्रवण एवं इकाई परीक्षण)	178×2000		=	3.56
18.	शारीरिक/मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रम।	- स्वंयसेवी संस्था द्वारा		=	0.50
19.	शिक्षा दाता योजना	- 100×6000		=	6.00
				कुल योग =	642.71

कार्ययोजना-1993-94

प्राथमिक औपचारिक शिक्षा

मुख्य झलकियाँ

(1) व्यापक पैमाने पर नामांकन अभियान ।

(2) निरीक्षी पदाधिकारियों, प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों का प्रशिक्षण ।

(3) शिक्षण किट का वितरण।

(4) समाज की सबसे अधिक अविकसित जाति, मुसहरों के लिए प्राथमिक शिक्षा सुलभ कराने हेतु "साक्षर मुसहर योजना"

(5) विद्यालय/छात्र आधारित कार्यक्रम।

(6) एम०एल०एल० पद्धति से दक्षता आधारित शिक्षण।

(7) समुदाय की भागीदारी हेतु विद्यालय आधारित ग्राम शिक्षा समितियों का पुनर्गठन/प्रशिक्षण।

(8) अल्पसंख्यक विद्यालयों के लिए उर्दू में पाठ्य-पुस्तकें एवं पुस्तकालीय पुस्तकों की आपूर्ति।

(9) भवनहीन विद्यालयों की संख्या न्यूनतम करने का प्रयास।

(10) शौचालय एवं जलापूर्ति की अधिकतम व्यवस्था।

-----::0::-----

अनौपचारिक शिक्षा

पृष्ठभूमि

प्राथमिक शिक्षा में सबकी पहुँच को पूरी तरह सफल करने के लिए ऐसे बच्चे-बच्चियों के लिए जो पूर्णकालिक स्कूलों का लाभ लेने में असमर्थ हैं अनौपचारिक शिक्षा एक उचित तरीका है। 6-14 आयुवर्ग के बच्चे-बच्चियों के लिए शिक्षा में प्राथमिक स्तर की औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसके तहत स्कूली शिक्षा से वंचित ऐसे कामकाजी बच्चे/बच्चियाँ हैं जो या तो अपने परिवार को चलाने के लिए जरूरी आमदनी पैदा करने में हिस्सा बँटा रहे हैं या परिवार के लिए मेहनत करते हैं। दोनों ही हालतों में उन्हें स्कूल जाने के लिए फुरसत नहीं होती। महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे बच्चे-बच्चियों की संख्या कम नहीं है। इसलिए इन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल किए बिना प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता।

अनौपचारिक शिक्षा यदि केवल इतनी ही बात पूरी करने के लिए होती तो भी शायद उतनी अहम नहीं होती। वास्तव में यह एक संपन्न विधा है जो स्वस्थ परम्परा के हुनर का इस्तेमाल कर स्थानीय जिन्दगी के साथ तालमेल रखने में सक्षम होती है। इसीलिए यह सीखनेवालों की जरूरत के मुताबिक तथा लचीली होती है। किसी भी हालत में यह विधा यदि ठीक से काम में लाई जाये तो इस विधा के जरिए सीखनेवालों को शैक्षिक उपलब्धि एवं गुणवत्ता प्राथमिक औपचारिक शिक्षा से कम नहीं होती।

इसकी उपादेयता इससे ही जाहिर होती है कि इस विधा के मारफत इसी आयुवर्ग में व्यावसायिक शिक्षण भी शिक्षुओं को दिया जा सकता है क्योंकि अनौपचारिक धारा में आने वाले शिक्षुओं का बड़ा भाग किसी न किसी प्रकार के जरूरी कामकाज में लगे रहने के कारण इस प्रकार के शिक्षण को ज्यादा आसानी से, सहजता से तथा खुशी से ग्रहण कर सकता है।

इसको प्रायोजित करनेवाले विभिन्न संस्थान इसकी इन विशिष्टताओं को नहीं समझ पाने के कारण इसको अनेक प्रकार से नजर अंदाज करते हैं और इसे केवल प्रदर्शन आँकड़ों का व्यापार बना लेते हैं, जबकि यह प्रकिया उन्मुख विधा है। इस विधा द्वारा केवल "निर्धारित अधिगम का कम से कम आवश्यक स्तर अनिवार्य रूप से प्राप्त कर लें" यही नहीं, बल्कि इससे बहुत कुछ ज्यादा होसकता है।

वास्तव में प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की दृष्टि से अनौपचारिक शिक्षा की मुख्य धुरी है, यह अवधारणा--"अगर 6-14 आयुवर्ग के सीखनेवाले स्कूल तक आने में समर्थ नहीं हैं, चाहे कारण जो भी हो, तो उनके पास स्कूल को जाना पड़ेगा"।

इसलिए इसके तात्कालिक तथा दीर्घकालिक दो उद्देश्य हैं। तात्कालिक उद्देश्य है— जो शिशु स्कूल में दाखिल नहीं हो पाए उन्हें इस दायरे में लाना तथा दीर्घकालिक उद्देश्य है, अनौपचारिक विधा की विशिष्टियों से उन्हें अनुप्राणित करना

तथा उन्हें उनके उपयुक्त व्यावसायिक दक्षताओं को उनके पास ले जाना ।

1992 में अनौपचारिक शिक्षा प्रारंभ करना था,मगर प्राइमर नहीं थे, इसलिए 1993 में ही इसे शुरू किया जा सका।

1993 की स्थिति

नए सिरे से 1993 में बी0इ0पी0 के तहत अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम शुरूआत के समय यह स्थिति थी—

§1§ अनौपचारिक शिक्षा की अवधारणा के प्रति लोगों में हिकारत की भावना§यह दूसरे दर्जे की शिक्षा है—धोखा है§

§2§ कार्यक्रम में अविश्वास§सचमुच कार्यक्रम चलेगा क्या? जैसा कि अन्य सरकारी या सरकार प्रायोजित कार्यक्रमों के प्रति अमूमन होता है§

§3§ अबतक चालू अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में जनता से अलग रहकर कार्यक्रम चलाने की आदत का कुप्रभाव§अनुदेशक—सुपरवाइजर—प्रोजेक्ट ऑफिसर—दफ्तर—दफ्तर शाही—लाल फीता आदि§

§4§ छीजन

§5§ जबाबदेही का अभाव

§6§ अनौपचारिक शिक्षा के प्रति जन-चेतना की कमी

§7§ यथा-स्थिति चाहनेवाले लोगों का सभी के लिए शिक्षा के खिलाफ विराग

24 अप्रील 1992 से बी0इ0पी0 के पूरी तरह कार्य शुरू करने के समय सामु द्वारा संचालित 30 अनौपचारिक विद्यालय थे जो सामु के समाप्त होने के कारण जर्जर स्थिति में थे। सामु में मानदेय की प्रथा नहीं थी। मगर दूसरे स्त्रोतों के जरिए जो इकाइयाँ वर्षों से संचालित थीं उनमें मानदेय भुगतान,शिक्षण सामग्री के बाँटने आदि में लगातार अनियमितता के कारण टोले के लोग इसको भी §बी0इ0पी0कार्यक्रम को भी§ वैसा ही कार्यक्रम समझते थे। उनमें इसके प्रति अविश्वास और उदासीनता थी। पढ़े लिखे लोग तथा वैसे लोग जिनकी राय पर ज्यादातर लोग अमल करते हैं,इसे दोयम दर्जे की शिक्षा मानते थे। विकट स्थिति तो यह थी कि इसके संचालकों का बड़ा भाग भी इसे दोयम दर्जे की शिक्षा की ही मान्यता देता रहा है। सामाजिक-आर्थिक विषमता की बेड़ियों से जकड़े समाज में सभी लोग यह भी नहीं चाहते कि अभिवंचित श्रेणी के बच्चे-बच्चियाँ पढ़कर ज्ञान का हथियार हासिल कर लें। साक्षरता के लिए मन मसोस कर वे तैयार होने लगे थे। मगर अनौपचारिक शिक्षा की धारा तो शिशु को ऊँची शिक्षा तक पहुँचाने के लिए दरवाजा थी,इसलिए मन ही मन यथास्थिति वादी इसके खिलाफ थे।

1993 तक आते आते एक बड़ा टारजेट लिया गया। टारजेट देहाती क्षेत्र का था। देहाती क्षेत्र में जाने के लायक गतिशीलता के साधनों का अभाव था। फिर अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति अविश्वास एवं राय बनाने वालों के भीतरी विरोध

की तीव्रता जिस पैमाने पर थी,उसका सही सही अंदाज नहीं लगाया जा सका था।

इसलिए बड़ा टारगेट लेना गलती थी। जरूरत थी अंकों की भाषा से ज्यादा प्रक्रिया की भाषा की,धैर्य की,मधुर व्यवहार की,अपमान सहने तथा जिद के साथ लगे रहने की।

औपचारिक शिक्षा संरचना के समान्तर अनौपचारिक धारा को चलाने पर, अनौपचारिक शिक्षा को संरचना का दोष सहना पड़ता है। हर बड़ संरचना के साथ अंक और आँकड़े तकियाकलाम की तरह जुड़े होते हैं। उनकी ही भाषा में बातचीत हो सकती है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण है हर प्रकार की योजना बनाने की बैठकें। इनमें प्रकार, तरीका,नई विधियाँ केवलनाम के लिए बोली जाती हैं,जबकि इन्हीं के आधार पर आँकड़े लिए जाते हैं। यह बड़संरचना के साथ जन्मजात दोष है।

अनौपचारिक शिक्षा यदि सही फल देती है तो केवल सही प्रक्रिया के परिणाम-स्वरूप। मगर बड़संरचना के साथ रहने से इसे भी लोग इस प्रकार खींचते हैं. जिसे केवल कुत्तापसीटी कह सकते हैं।

मापदंड संबंधी एवं लॉजिस्टिक दिक्कतें भी महत्वपूर्ण थीं। जिन रास्तों से औपचारिक शिक्षा को गुजरना है,अनौपचारिक शिक्षा को भी उन रास्तों पर चलने की जरूरत पड़ती है। हाँ,उन रास्तों के अलावा भी इसे अन्य रास्तों का आश्रय लेना पड़ता है। मगर 1978 के बाद जो अनौपचारिक शिक्षा का शाहराह बनाया गया उसमें अनौपचारिक इकाई को प्रतीक बनाकर मापदंड बनाए गए। जमाना बदला,लेकिन वह प्रतीक-मापदंड सारस्प में स्थिर रहा। एक प्रकार से स्टैगनेशन का मरीज। जबकि प्राथमिक शिक्षा को एक इकाई को एकांक मानकर सारी रणनीति बनाने का ज्यादा तुक है। इस स्टैगनेशन का फल यह होता है कि अभी भी इकाई के खर्च के भीतर ही पर्यवेक्षक/सहायक अभियान संयोजक के मानदेय की राशि खोजनी पड़ती है। हर पर्यवेक्षक या सर्वेक्षक को प्रशिक्षण चाहिए,पुनर्प्रशिक्षण चाहिए या कभी कभी पीरियॉडिक आधारित उन्मुखीकरण चाहिए,इसके शोध की जरूरत पड़ती है या नए आर्थिक संकल्पों तथा प्रस्तावों से प्रक्रिया को गुजारने की जरूरत पड़ती है। इस प्रक्रिया का फल जहाँ कार्य होना है वहाँ नकारात्मक या देरात्मक तो अवश्य होता है।

प्राइमर भी देर से आए तथा संदर्शिका तो और भी देर से।

स्थानीय जड़ता,तेजी से कर गुजरने की इच्छा शक्तिभी कम दुखदाई नहीं थी।

इन परिस्थितियों के अधीन काम शुरू हुआ। इस काम पर वर्णित तथा अवर्णित दिक्कतों का असर हुआ।

आरम्भिक व्यावहारिक रणनीति इस प्रकार ली गई—

— लोक चेतना का विकास

— अनौपचारिक शिक्षा विधा की अहमियत का प्रहार

— कार्यक्रम में विश्वास पैदा करना

-- चुने गए प्रखंड के पहचाने गए पंचायतों में वातावरण निर्माण
-- वातावरण निर्माण के दौर में उभरे कार्यकर्त्ताओं द्वारा सर्वेक्षण
-- सर्वेक्षण प्रक्रिया द्वारा शिक्षुओं, स्वयंसेवक-शिक्षकों एवं सहायक अभियान संयोजकों/ पर्यवेक्षकों का रेखांकन ।
-- बी0इ0पी0 कर्मियों का उन्मुखीकरण
-- टोला सभाएँ--टोला समितियाँ
-- टोला समितियों द्वारा शिक्षुओं तथा स्वयंसेवक-शिक्षकों की पहचान
-- प्रशिक्षण एवं शिक्षण सामग्रियों का आकलन
-- स्वयंसेवक शिक्षकों का प्रशिक्षण
-- अनौपचारिक विद्यालयों की शुरुआत

<u>फोकस</u>

लड़कियाँ, अभिवंचित, कमजोर वर्ग

अनौपचारिक कर्मियों के लगातार प्रयास से तथा बी0इ0पी0 के अन्य कर्मियों के सहयोग से पहचाने गए टोलों में धीरे-धीरे लोगों का कार्यक्रम प्रति विश्वास और अपनापन पैदा होने लगा। सामान्य जन में विरोध की भावना कुन्द होने लगी।

<u>समुदाय की भागीदारी</u>

इसके फलस्वरूप पहचाने गए पंचायतों के मुखिया अनौपचारिक शिक्षा के हर कार्यक्रम में भाग लेने लगे।

टोला-वासियों, औरतों तथा शिक्षुओं के माँ-बाप का सहयोग मिलने लगा।

मोतीपुर के तीन पंचायतों में जहाँ कार्यक्रम शुरू हुआ, तीनों मुखिया ट्रेनिंग के हर सत्र में उपस्थित रहे तथा पंचायत भवनों के उपयोग एवं ट्रेनिंग के उपयुक्त साज सज्जा में सहायक रहे।

<u>सर्वेक्षण</u>

28 पंचायतों के 184 टोलों में सर्वेक्षण का कार्य पूरा हुआ। सर्वेक्षण के विश्लेषण के फलस्वरूप शिक्षुओं एवं स्वयंसेवक-शिक्षकों की पहचान हुई।

सही सूचना ही सही कार्यान्वयन का आधार है। टोले में घर तथा परिवार सर्वेक्षण द्वारा सही सूचना मिलती है। इसी के आधार पर टोला समिति हर प्रकार के विकास कार्यक्रम को सूक्ष्मस्तरीय योजना के आधार पर आयोजित करेगी। ऐसी योजना के कार्यान्वयन के लिए टोला स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करना एवं उसका संरक्षण टोला समिति अपने स्तर पर करेगी। पंचायती राज के परिप्रेक्ष्य में यह महत्वपूर्ण है।

टोला समितियाँ

184 टोलों में जहाँ कार्यक्रम शुरू होने की पहल की गई, वहाँ टोला समितियाँ बनीं। टोला समितियाँ तो 100 और टोलों में बनीं, मगर वहाँ सर्वेक्षण आदि अन्य काम अधूरे रहे, अतः वहाँ की टोला समितियाँ पूरी तरह जीवन्त नहीं बन सकीं।

टोला समितियाँ बनाने के लिए पहले टोला सभाएँ की गई। टोला सभा में टोले के सभी लोगों को विशेषकर महिलाओं की अधिक उपस्थिति की गारंटी की गई। टोला सभा में जनतांत्रिक तरीके से टोला समिति गठित की गई। प्रत्येक टोला समिति में आधी संख्या महिलाओं की ली गई। टोला समिति के सदस्यों में ध्यान रखा गया कि अच्छी संख्या शिक्षुओं के माता-पिता से मिले।

शिक्षा के क्षेत्र में औरतों की भागीदारी विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे-बच्चियों को अनौपचारिक विद्यालय भेजने के लिए माँ की सक्रिय भूमिका आवश्यक है। यदि टोले की भी औरतें शिक्षा को महत्व देने लगेंगी तो अनौपचारिक विद्यालय की देखरेख में कोई समस्या नहीं पैदा होगी। इसी पृष्ठभूमि में पुरुषों के साथ-साथ औरतों को टोला समिति में समान भागीदारी दी गयी।

टोला समिति हर पन्द्रह दिन पर मिलती है तथा अन्य मसलों के अलावा अनौपचारिक विद्यालय में शिक्षु उपस्थिति, शिक्षु पठन स्थल, पठन समय, पर अवश्य चर्चा करती है। अनियमित शिक्षुओं के अभिभावकों से संपर्क कर कार्यक्रम लेती है।

टोला समितियाँ अपने स्वयंसेवक-शिक्षकों को हाजिरी के आँकड़ों एवं खुद की देखरेख सूचनाओं के आधार पर मानदेय देती हैं।

सितम्बर, 93 तक मानदेय दिया जा चुका है।

टोला समितियाँ टोला सभा की उपस्थिति में सामग्री वितरण करती हैं।

प्रशिक्षण

स्वयंसेवक शिक्षकों का प्रशिक्षण मुख्य स्रोत व्यक्ति, स्रोत व्यक्ति, मास्टर प्रशिक्षक तथा आमंत्रित साधनसेवी करते हैं।

जिले में सम्प्रति 5 प्रमुख व्यक्ति, 30 स्रोत व्यक्ति तथा मास्टर प्रशिक्षक, 22 पर्यवेक्षक सह सहायक अभियान संयोजक तथा 2 अभियान संयोजक सह परियोजना पदाधिकारी हैं।

स्वयंसेवक शिक्षकों का प्रशिक्षण एक माह का होता है जो 12, 10 तथा 8 दिनों के तीन खेप में होता है। 12 दिवसीय प्रशिक्षण समाप्त हो चुका है।

पर्यवेक्षक सह सहायक अभियान संयोजकों का 10 दिवसीय प्रशिक्षण होता है।

स्रोत व्यक्तियों, परियोजना पदाधिकारियों तथा मास्टर प्रशिक्षकों का 12 दिवसीय प्रशिक्षण होता है।

सामु भवन में होता है। अधिकांश प्रशिक्षण मीनापुर सामु भवन में हुए हैं।

अन्य व्यक्तियों के प्रशिक्षण जिला आधारित हैं।

सभी प्रशिक्षण आवासीय हैं।

अनुश्रवण एवं मूल्यांकन

अनुश्रवण बहुत जीवन्त नहीं रहा है। इसकी परियोजना संरचना देर से बन पाई क्योंकि सही व्यक्ति पहचान में नहीं आए थे।

टोला स्तर पर टोला समिति तथा गुखिया अनुश्रवण में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। इनका प्रशिक्षण नहीं कराया जा सका है, जो 1994-95 में पूरा हो जायगा।

अनुश्रवण में अ0 बुलेटिन द्वारा काफी मदद मिलेगी। यह प्रस्तावित है।

मूल्यांकन की दृष्टि से 5450 शिक्षुओं का अन्तिम मूल्यांकन किया जा रहा है। यह दक्षता आधारित है। मगर दैनिक तथा इकाई परीक्षण 1994-95 में आरम्भ किया जा सकेगा।

लक्ष्य एवं उपलब्धि

1993-94 में कार्य प्रारम्भ हुआ। वह भी बिलम्ब से। 1992-93 में प्राइमर उपलब्ध नहीं थे। इसलिए इकाइयाँ नहीं शुरू की जा सकीं। 1993-94 में अगस्त में संदर्शिका प्राप्त हुई। 1993-94 में मार्च तक 500 इकाइयाँ चालू हो जाएँगी। स्थानीय बाधियाँ मुख्य रूप से जड़ता सम्बन्धी थीं। आरम्भिक जड़ता के समाप्त होजाने के बाद काफी, तेजी आई है।

1993-94 में प्रयुक्त प्रक्रिया

§1§ टोला समितियों की भागीदारी

अनौपचारिक विद्यालयों की स्थापना में टोला समितियों की भागीदारी हुई। 215 अनौपचारिक विद्यालय टोला समितियों के अधीन कार्यशील है।

§2§ पंचायत स्तर पर पंचायत कोर ग्रुप

पंचायत स्तर पर पंचायत कोर ग्रुप की स्थापना की गई। पंचायत कोर ग्रुप 10 अनौपचारिक विद्यालयों के मिनी परियोजना समूह को समाहित किया।

10 अनौपचारिक विद्यालयों के समूह पर एक सहायक अभियान संयोजक §पर्यवेक्षक§ पहचाना गया। इन कर्मियों तथा पंचायत के टोला संयोजकों/संयोजिकाओं से पंचायत कोर ग्रुप बना। टोला संयोजकों/संयोजिकाओं में से एक पंचायत कोर ग्रुप के संयोजक/सचिव के रूप में सक्रिय हुए। 28 पंचायत कोर ग्रुपों में 9 पूर्णतः सक्रिय हैं। फरवरी, 94 तक उन्मुखीकरण के बाद सभी पंचायत कोर ग्रुप सक्रिय हो जाएँगे।

.....

§3§ प्रशिक्षण

जिले में साक्षरता अभियान के दौरान अनेक साधनस्रोतों प्रशिक्षित हुए थे। 6 को बी0इ0पी0 द्वारा प्रशिक्षित किया गया। इनकी सहायता से प्रशिक्षण वर्या चलाई गई।

सक्रिय मुख्य स्त्रोत व्यक्ति 5 हैं। सक्रिय स्त्रोत व्यक्ति तथा मास्टर प्रशिक्षक 30 हैं। इनके लिए कुल प्रशिक्षण अवधि 12 दिवस की है।

22 पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक§पर्यवेक्षक§ §दिसम्बर,93 तक§ कार्यशील हैं। इनके 10 दिवसीय प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

215 स्वयंसेवक शिक्षक हैं,जिनके लिए 30 दिवसीय प्रशिक्षण की व्यवस्था है। यह 12+10+8 दिवसों के क्रेप में दी जाती है। 12 दिवसीय प्रशिक्षण सभी के लिए पूरा हो चुका है।

स्वयंसेवक शिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान दक्षता आधारित अध्यापन के मुद्दों से परिचित कराया गया। शिक्षुओं को रोचक ढंग से पढाया जा सके तथा अनौपचारिक विद्यालय में बाल केन्द्रित शैक्षिक गतिविधियाँ संचालित की जा सके' इसकी क्षमता के विकास कार्यक्रमों से परिचित कराया गया। बिना खर्च या अत्यंत कम लागत के शिक्षण सहायक युक्तियों से सक्षम बनाने का प्रशिक्षण दिया गया एवं शिक्षुओं के साथ अभ्यास पाठ द्वारा व्यवहारिक शिक्षा दी गई।

स्वयंसेवक शिक्षकों को बाल खेलों एवं बालगीतों से भी परिचित कराया गया तथा टोला समितियों' की रचना एवं उनकी सक्रियता की जानकारी दी गई।

§4§ परियोजना संरचना

परियोजना संरचना अपनाई गई। इसके अनुसार 10 स्वयंसेवक शिक्षकों पर एक पर्यवेक्षक §सहायक अभियान संयोजक§ एवं 10 पर्यवेक्षकों §सहायक अभियान संयोजकों§ पर एक अभियान संयोजक §परियोजना पदाधिकारी§ होते हैं।

§5§ मूल्यांकन

अनौपचारिक विद्यालयों में उपलब्धि की कसौटी शिक्षुओं द्वारा दक्षता स्तर सम्प्राप्ति ही हो सकती हैं।

इसके लिए निम्नलिखित प्रकिया अपनाई जा रही है—

.....

दक्षता आधारित शैली की प्रक्रिया

पूर्व मूल्यांकन	दक्षता आधारित शिक्षण	सतत मूल्यांकन	सत्रांत मूल्यांकन
शिक्षुओं में दक्षता की वर्तमान स्थिति की जानकारी।	स्वयंसेवक शिक्षकों को दक्षता आधारित संदर्शिका की उपलब्धि।	हर महीने के अंत में तालिका 1 तथा 2 की सहायता से दक्षता उपलब्धि का अंकन	दक्षता आधारित शिक्षण का असर
संक्रिया	संक्रिया	संक्रिया	संक्रिया
1. सीखने के न्यूनतम स्तर संबंधित प्रश्नपत्र बनाना। 2. शिक्षुओं से प्रश्न हल कराना। 3. शिक्षुओं के उत्तरों का विश्लेषण 4. दक्षता की स्थिति जाहिर करना।	1. दक्षता आधारित शिक्षण 2. प्रतिदिन का मूल्यांकन रजिस्टर में अंकित करना	1. प्रश्न बैंक की सहायता से जितनी दक्षता के संबंध में पढाई हो गई हो, उसकी महीने के अंत में जांच 2. रजिस्टर में अंकन 3. विश्लेषण तथा हर शिक्षु के बारे में उपचारात्मक कदम।	1. दक्षता आधारित शिक्षण के बाद दक्षताओं की तत्काल स्थिति का आकलन 2. अंतिम मूल्यांकन के परिणामों को पूर्व मूल्यांकन के परिणामों से मिलाना तथा दक्षता आधारित शिक्षण का असर जानना।

1993-94 में सत्रांत मूल्यांकन की प्रक्रिया अपनाई गई है।

1994-95 में मूल्यांकन की अन्य प्रविधियों का कार्यान्वयन होगा।

अनुश्रवण

— टोला समिति द्वारा दैनिक देखभाल

— मुखिया द्वारा अनौपचारिक विद्यालयों की देखरेख

— प्रत्येक सप्ताह सहायक अभियान संयोजक (पर्यवेक्षक) द्वारा कम से कम दो बार हर अनौपचारिक विद्यालय की देखरेख एवं आवश्यकतानुसार खेल सिखाकर, पाठ पाठ पढाकर तथा गीत सिखाकर विद्यालय इकाई की जीवन्तता कायम रखना।

— अभियान संयोजक द्वारा यदा कदा देखभाल

—अनौपचारिक तथा अन्य प्रभागों के पदाधिकारियों द्वारा प्रेक्षण एवं मार्ग दर्शन।

— अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा देखभाल

— विभिन्न पत्रों द्वारा जानकारी आकलन

इन मुद्दों पर कार्य हुआ है।

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D-9068
DOC, No.
Date 12-03-95

1994-95 के लिए कार्ययोजना

अनौपचारिक शिक्षा 1994-95 में जिन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए काम करेगी वे हैं--

§1§ 6-14 आयुवर्ग के कुल बच्चे-बच्चियों तथा औपचारिक विधा से इस आयुवर्ग के शिक्षा पानेवाले बच्चे-बच्चियों की संख्या-खाई को पाटना।

§2§ अनौपचारिक विधा की विशेषताओं से बच्चे-बच्चियों को लाभान्वित कराना।

§3§ पुरानी इकाइयों का सुदृढ़ीकरण।

<u>फोकस</u>

वरीयता क्रम में लड़कियाँ, दलित, वंचित, कमजोर वर्ग के शिशु

<u>वैकल्पिक सूक्ष्मस्तरीय सहायक कार्यक्रम</u>- बालिका अनौपचारिक इकाइयाँ §प्रेरणा इकाइयाँ§ मुशहर, डोम तथा हलखोर इकाइयाँ §सजगता इकाइयाँ§, नगर के चिथड़ा इकट्ठा करनेवाले तथा अति पेशेवर शिशु §प्रचेष्टा इकाइयाँ§

<u>टारजेट</u>

वर्ष	टोला	इकाइयाँ	शिशु	स्वयंसेवक शिक्षक	पर्यवेक्षक-सह-स०अ०सं०	अभि०संयो० सह परि० पदा
1994-95	0550 +49	0800	20,000	0880	080	008
1995-96	1600	2000	50,000	2200	200	020
1996-97	1370	1876	46,900	2066	188	019

<u>क्षेत्रवार भौतिक आच्छादन</u>

प्रखण्ड OCU	इकाइयों की आवश्यकता NEED FOR UNI	टारजेट 1994-95			नवम्बर, 93 तक सम्प्राप्ति		
		इकाइयाँ	टोले	शिशु	इकाइयाँ	टोले	शिशु
मीनापुर	585	80	50	2000	112	112	2800
मोतीपुर	624	100	60	2500	026	020	0650
गायघाट	552	20	14	0500	075	050	1950
काँटी	503	100	70	2500	001	001	0025
कुढ़नी	875	100	60	2500	001	001	0025
बोचहाँ	418	100	70	2500			
मुरौल	212	100	85	2500			
मुशहरी	537	100	90	2500			
सरैया	370	100	100	2500			
9	4676	800	599	20000	215	184	5450

विशेष प्रयास

(क) लड़कियों को लाने के लिए और भी प्रयास किया जायगा। प्रेरणा इकाइयों के लिए "अनौपचारिक शिक्षा में माताओं की भूमिका" विषय पर गोष्ठियाँ की जाएँगी। महिला स्वयंसेविकाओं के लिए विशेष उन्मुखीकरण की व्यवस्था होगी तथा महिला स्वयंसेविकओं का दल टोलों में प्रेरणा तथा जागरण हेतु ले जाया जायगा।

(ख) मुशहरों के लिए साक्षर मुशहर योजना के अंतर्गत मुशहर उपस्कूल चलाए गए हैं। इससे मुशहरों के बच्चे-बच्चियों का शिक्षा में तेजी से दाखिला हुआ है। मगर डोम, हलखोर तथा दूर दराज के मुशहर भी इन इकाइयों से बाहर हैं। उनके लिए" "सजगता"कार्यक्रम चलाकर उन्हें अनौपचारिक इकाइयों में लाया जायगा।

(ग) चिथड़ा इकट्ठा करनेवाले तथा चायखानों जैसी जगहों में काम करनेवाले अति पेशेवर शिशुओं के लिए "प्रचेष्टा" इकाइयाँ चलाने का प्रयास होगा। इनके स्वयं-सेवक शिक्षकों को विशेष प्रकार का प्रशिक्षण दिया जायगा।

छीजन

टारजेट पूरा करने के लिए जो आँकड़े लिए गए हैं उनमें छीजन की दर को शून्य मान लिया गया है। वास्तविकता यह है कि ठहराव लाने में काफी हद तक सफलता मिली है,मगर तब भी छीजन शून्य नहीं है।

अनौपचारिक रीति से चलाई जा रही विद्यालय प्रणाली में सामुदायिकता तथा स्थानीयता को ज्यादा बल दिए जाने के कारण छीजन अभी तक शून्य है। मगर अनुश्रवण और संधारेक्षण के लिए आवश्यक तत्वों को सबल नहीं करने पर छीजन नहीं होगा इसकी गारंटी नहीं की जा सकती।

1992 या 1993 का अनुभव यही बतलाता है कि नीचे के वर्गों में जितने हद तक अनौपचारीकरण लागू किया जाता है,स्थानिकता को महत्व दिया जाता है तथा सामुदायिक सहभागिता बढ़ाने में सफलता मिलती है,उतना ही छीजन कम होता है।

मोतीपुर में जिन जिन अनौपचारिक इकाइयों में वहाँ के मुखिया ने विशेष ध्यान दिया,शुरू में अनौपचारिक इकाई में रोज-रोज गए वहाँ स्वयंसेवक-शिक्षक का तथा शिशुओं का ठहराव बेहतर रहा। चूंकि ये सभी अनौपचारिक इकाइयाँ टोले के भीतर हैं,इसलिए इन इकाइयों में स्थानीय प्राथमिक विद्यालय के छात्र भी शामिल हो जाते हैं तथा अनौपचारिक इकाई के समूह को बड़ा कर देते हैं। शुरू शुरू में सभी घटकों ने इसे अच्छा नहीं माना मगर प्रशिक्षण के दौरान स्वयंसेवक शिक्षकों को इसे अच्छामानने की ही सलाह दी गई थी। इसका पालन करते हुए स्वयंसेवक शिक्षकों ने गीत गाने याखेल खेलने में इन अन्य छात्रों को भी भाग लेने से मना नहीं किया। इसका फल यह हुआ कि अनौपचारिक इकाइयाँ ज्यादा लोकप्रिय होने लगीं। जो माता-पिता पहले अपने नामांकित बच्चे-बच्चियों को भी भेजने में हिचकिचाते थे वे खुशी से भेजने लगे। छीजन की जड़ ही कट गई।

.....

यदि प्राथमिक विद्यालयों में भी माता-पिता की दिलचस्पी (कम से कम पहले तथा दूसरे दर्जे के लिए अवश्य) जगाई जा सके तो छीजन की दर कम हो सकती है।

यह भी पाया गया है कि बच्चे-बच्चियाँ खेल में काफी दिलचस्पी लेतीं हैं। इसका उपयोग प्राथमिक विद्यालय में भी हो सकता है।

प्राय: स्वयंसेवक-शिक्षक अनौपचारिक विद्यालयों में बच्चे-बच्चियों को स्वयं बटोरते हैं। यह बटोरना भी छीजन दर कम करने में काफी सहायक है।

रणनीति

(1) सामुदायिक भागीदारी को और तेज करना

1993-94 में टोला समितियाँ बनाई गईं। वे उचित दिशा में कार्यशील भी हैं। मगर उनका बढ़िया प्रशिक्षण नहीं होने से सक्रियता में ठहराव लाना कठिन है। इस दृष्टि से इस वर्ष सामुदायिक भागीदारी पर सांगठनिक एवं परिवेशीय दोनों दृष्टियों से विशेष जोर दिया जायगा।

(2) सर्वेक्षण तथा वातावरण निर्माण

टोलों में सर्वेक्षण द्वारा विशद आँकड़े मिले हैं। इन आँकड़ों से शिक्षुओं के अनौपचारिक विद्यालय की माँग स्थापित हुई है। उसी टोले के स्वयंसेवकों/स्वयंसेविकाओं की पहचान भी हुई है।

मगर जैसा सोचा गया था कि वातावरण निर्माण से कुछ कार्यकर्त्ता उभरेंगे जो सर्वेक्षण भी करेंगे और टोला समिति की संरचना में ठोस योगदान करेंगे। ऐसा सभी जगह नहीं हो सका। सर्वेक्षण भी सभी जगह बढ़िया नहीं हो सका। इस वर्ष वातावरण निर्माण तथा सर्वेक्षण पर विशेष जोर दिया जायगा।

(3) सुदृढ़ीकरण

215 इकाइयाँ नवम्बर, 93 तक स्थापित हुईं। अन्य कई मुशहर इकाइयाँ आरम्भ की गईं थीं। मगर वे साक्षर मुशहर योजना के अंतर्गत चली गईं। पहले से जितनी तैयारियाँ की गई हैं उनके अनुसार गायघाट में मार्च, 94 आते-आते 200 इकाइयाँ हो जायेंगी तथा मोतीपुर में 100 इकाइयाँ चलने लगेंगी। मीनापुर में भी 200 इकाइयाँ हो जायेंगी। यदि तैयारी के अनुसार उपलब्धि को कम रहा तो मार्च, 94 तक 500 से कुछ अधिक इकाइयाँ चालू हो जायेंगी। मगर इन इकाइयों के मात्र चालू होने से गुणवत्ता में वृद्धि नहीं होगी।

अभी बहुत सी टोला समितियाँ बिना टोला सभा किए बन गई हैं। स्पष्ट है कि ये प्रतिनिधि टोला समितियाँ नहीं बन पाई हैं। इनके बारे में छानबीन की जा रही है।

बहुत से अनौपचारिक विद्यालयों में प्राइमरी स्कूलों के पैटर्न पर ही पढ़ाई चल रही है। इससे प्राइमरी स्कूलों का छीजन दोष अनौपचारिक इकाइयों में भी

....

प्रवेश कर सकता है। अभी अनौपचारिक विद्यालय इस दोष से मुक्त हैं।

पढ़ाई के दौरान स्थानीय सहायक सामग्रियों का नहीं के बराबर इस्तेमाल हो रहा है।

ये सारी बातें इस ओर इशारा कर रही हैं कि वर्तमान इकाइयों का सुदृढ़ीकरण सबसे पहला टास्क है।

यदि अनौपचारिक प्रभाग के कार्यकर्त्ता तेज गति की सबलता पाएँ तो इस दिशा में प्रयास किया जा सकता है। प्रयास किया भी जायगा।

§4§ जगजगी केन्द्रों को हर प्रकार की मदद

महिला समूह यदि कार्यशील हों तो बच्चियों का नामांकन तेजी से बढ़ाया जा सकता है। अनौपचारिक प्रभाग की बराबर से नीति रही है कि इस प्रकार की पहल को हर तरह की मदद दी जाय।

§5§ दक्षता आधारित शिक्षा

प्राइमरी स्कूलों में जैसा देखा गया है अभी दक्षता आधारित शिक्षा यांत्रिक विधि की सीमा रेखा में है । इस शिक्षण प्रविधि को सहजता नहीं हासिल हो पाई है। इस दृष्टि से अनौपचारिक विद्यालयों के स्वयंसेवक शिक्षक तो और भी कमजोर स्थिति में हैं, क्योंकि उनकी योग्यता काफी कम है। उनसे तो प्रतिबद्धता के आधार पर ही ज्यादा काम लेने में सफलता हासिल हो सकी है। राष्ट्रीय हित में ऐसे लोगों से काम लेने के लिए उन्हें और भी योग्यतर बनाना होगा। इसके लिए ज्यादा से ज्यादा उन्मुखीकरण की घूँट पिलानी होगी। अभी तो हम समस्यता की यांत्रिकता से गुजर रहे हैं। इन स्वयंसेवकों को भी दक्षता आधारित शिक्षा की शान चढानी है। इस वर्ष इस पर काफी बल दिया जायगा। इस दिशा में बड़ी सुविधा दक्षता आधिारित अनौपचारिक प्राइमरों केकारण हासिल हुई है।

§6§ अनौपचारिक शिक्षा में प्रशिक्षण की भूमिका

अनौपचारिक शिक्षा में हर कदम पर, हर संसाधन पर प्रशिक्षण की सबलता जोड़नी है। औपचारिक शिक्षा की तुलना में कहीं ज्यादा। क्योंकि अनौपचारिक शिक्षा को कम समय में, कम योग्य मानव संसाधन द्वारा, भौतिक संसाधनों का अभाव झेलते हुए औपचारिक शिक्षा से कहीं ज्यादा बड़ा लक्ष्य साधना है। ऐसी हालत में प्रशिक्षण का और अनुश्रवण का टास्क पूरा नहीं हुआ तो सचमुच औपचारिकता ही पूरी हो पाएगी। ऐसा कोई चाहता नहीं, लेकिन यही आलोचना इसके मत्थे थोपी जाती है। इसलिए होशियारी की रणनीति अपनानी ही होगी।

इस वर्ष प्रशिक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जायगी। स्वयंसेवकों को उचित सम्मान के साथ प्रशिक्षण ढ़ाई में लाया जायगा तथा समुचित प्रयोग किए जाएँगे।

§7§ व्यावसायिक शिक्षा

कुछ अनौपचारिक इकाइयों में जो अपेक्षाकृत आगे बढ़ी हुई इकाइयाँ हैं व्यावसायिक शिक्षण का भी पुट दिया जायगा। यह प्रायोगिक तौर पर होगा जिससे सही फीडबैक मिल सके और अगले वर्ष इस दिशा में बाजाब्ता नवाचारी योजना शुरू की जा सके।

इस शिक्षा का दूसरा आयाम है ■ टोले के स्थानीय हुनरमंदों का अनौपचारिक इकाई में साधनसेवी के रूप में इस्तेमाल। टोले के बढ़ई, लोहार, मछुआरें, सफल किसान, जिल्दसाज, सीने, पिरोने में दक्ष महिलाएँ, स्थानीय कलाकार आदि। सुनियोजित ढंग से इनके इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जायगा।

§8§ मूल्यांकन

सम्प्राप्ति निर्धारण के लिए मूल्यांकन की सभी विधाओं का प्रयोग होगा। इससे सुदृढ़ीकरण में भी मदद मिलेगी।

§9§ सामग्री वितरण

पिछले साल की भाँति टोला सभा के सामने उत्सव के वातावरण में शिक्षुओं को सामग्री वितरित की जायगी। इस बार कोशिश होगी कि उत्सवों को और भी चमकदार बनाया जाय। इससे वातावरण बनेगा।

§10§ शोध

शोध सहायता का आधार विकसित होना जरूरी है। इससे कार्यक्रम के विभिन्न हिस्सों में परिवर्तन से ज्यादा लाभ पाया जा सकता है।

1994-95 क्रियाशीलन

§1§ समवायशाला

कार्यक्रम संचालन के दौरान ऐसे अनेक टोले मिले हैं जहाँ अनौपचारिक विद्यालय चलाने के लिए स्थान नहीं है। बरसात और जाड़े में खासतौर से दिक्कत होती है। ऐसे टोलों में एक कमरे के भवन के निर्माण की योजना है। स्वयंसेवक-शिक्षकों, शिक्षुओं तथा टोलावासियों के सहयोग से 1994-95 में 80 समवायशाला निर्माण की योजना है।

§2§ कार्यशालाएँ

अनौपचारिक विद्यालयों के सही संचालन के लिए विभिन्न कार्यशालाएँ (8) गोष्ठियाँ तथा संकल्प सभाएँ आयोजित की जाएँगी—

§क§ गणित अध्ययन	2 दिन
§ख§ न्यूनतम सीखने का स्तर	2 दिन
§ग§ मॉनीटरी तथा मूल्यांकन	4 दिन
§घ§ बालिका शिक्षा हेतु विशेष अध्ययन	2 दिन
§ङ§ लोकगीत, कहानी एवं पारम्परिक खेलों का अनौपचारिक शिक्षा में इस्तेमाल-	4 दिन
§च§ मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन टीम की तैयारी-	2 दिन
§छ§ मूल्यांकन विश्लेषण टीम की तैयारी-	2 दिन
§ज§ बालमेला, प्रदर्शनी, दीवाल न्यूजपेपर आदि की तैयारी के लिए-	5 दिन

§3§ प्रोत्साहन

विभिन्न प्रशिक्षणों तथा कार्यशालाओं में भाग लेनेवाले प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र दिया जायगा। खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, लेख प्रतियोगिता जैसे क्रियाशीलनों में पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र दिए जाएँगे।

अच्छे परिणाम प्रदर्शित करनेवाले स्वयंसेवक शिक्षकों, पर्यवेक्षक-सहसहायक अभियान संयोजकों एवं टोला समितियों को पुरस्कृत किया जायगा।

पुरस्कार पानेवाले अनौपचारिक विद्यालय को 500 रुपये की राशि (सामान या नगद) दी जायगी। प्रमाण-पत्र भी दिया जायगा। पुरस्कार देने के लिए इन बातों पर ध्यान दिया जायगा।

§क§ दक्षता आधारित इकाई एवं दैनिक मूल्यांकन शैली का सही इस्तेमाल
§ख§ वांछित प्रगति§संज्ञानात्मक तथा गैर संज्ञानात्मक§
§ग§ टोला समिति की जीवंतता
§घ§ शिक्षुओं की नियमितता
§ङ§ अनौपचारिक शैली का सही इस्तेमाल §खेलों, गीतों, कहानियों का माध्यम के रूप में उचित व्यवहार§

.....

(च) अनौपचारिक विद्यालय का प्रतिबद्धता से नियमित संचालन ।
(छ) स्वयंसेवक क्लब तथा पंचायत कोर ग्रुप में नियमित एवं उचित भागीदारी ।

(14) बालमेला

अनौपचारिक शिक्षा के सफल संचालन के लिए बालमेला बहुत सटीक साधन है। देखा गया है कि पंचायत में बाल मेला लगाने से जिसमें शिशु तथा उसके माँ-बाप भाग लेते हैं, तत्काल अनौपचारिक इकाइयाँ खोलने की माँग आने लगती है।

1994-95 में 10 बालमेले आयोजित किए जाएँगे।

(15) प्रदर्शनियाँ

पोस्टर, मॉडल, अनौपचारिक शैली के शिक्षण को प्रदर्शित करने के लिए चार्ट आदि की सहायता से अच्छी प्रदर्शनियाँ लगाई जाएँगी। इससे सभी अवयवों में उत्साह पैदा होता है।

(16) स्वयंसेवक-शिक्षकों के लिए किट

स्वयंसेवक शिक्षक को झोला, डायरी, उसके लिए कुछ जरूरी किताबें, बालगीत पुस्तिका, पेन आदि सामग्रियों का किट देने की व्यवस्था की जायगी।

(17) पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक के लिए किट

अनौपचारिक इकाइयों में सफल शिक्षण कार्यक्रम चलाने के लिए सहायक अभियान संयोजकों को शिक्षण किट देना जरूरी है। किट में पैमाना, पेन्सिल, स्केच पेन, ड्राइंग तथा फ्लैश कार्ड शीट, बालगीत पुस्तिका, कैंची, इरेजर, पेन्सिल, जरूरी संदर्शिकाएँ, अनुश्रवण मैनुअल आदि वस्तुएँ रहेंगी।

(18) पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक के लिए साइकिल

पंचायत में हर हफ्ते कम से कम दो बार हर अनौपचारिक विद्यालय में पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक पहुँच सकें इसके लिए उन्हें साइकिल उपलब्ध कराने की योजना है। यह ऋण पर मिलेगी। ऋण की कटौती किश्तों में मानदेय से की जायगी।

(19) लघु पुस्तकालय तथा संकुल पुस्तकालय

हर अनौपचारिक विद्यालय के लिए एक छोटे पुस्तकालय की योजना है। इसमें पोस्टर, चार्ट, शिक्षुओं के लिए उपयुक्त किताबें रहेंगी। इसके लिए लोहे के एक बक्से का भी प्रबन्ध किया जायगा।

स्वयंसेवक-शिक्षक तथा अनौपचारिक कर्मी उचित पुस्तकों का लाभ ले सकें इसके लिए प्रखण्ड में संकुल पुस्तकालय स्थापित करने की जरूरत है। धीरे-धीरे हर पंचायत में ऐसे पुस्तकालय स्थापित किए जा सकेंगे।

§10§शैक्षिक भ्रमण

पोस्ट ऑफिस, ब्लॉक ऑफिस, थाना, अस्पताल, आदि संस्थाओं को प्रक्रिया दिखलाने की व्यवस्था की जायगी। इससे शिक्षु तथा स्वयंसेवक दोनों को लाभ होगा।

शिक्षुओं, कर्मियों तथा स्वयंसेवक शिक्षकों का भ्रमण शिक्षण का महत्त्वपूर्ण अवयव है। अन्य लाभों के अलावा पर्यावरण की जानकारी शिक्षुओं को मिलेगी। अनुभवों के आदान प्रदान तथा ज्यादाअच्छी इकाइयों एवं संस्थानों को देखने से दृष्टि विकसित होगी।

कर्मियों को उड़ीसा तथा राजस्थान की अनौपचारिक संस्थाओं में भेजना उन्हें हृदय से अनौपचारिक अवधारणा के पक्ष में लायेगा तथा लौटकर वे ज्यादा क्षमता से कार्य कर सकेंगे।

§11§उर्दू इकाइयाँ

सभी प्रखण्डों में माँग के अनुसार उर्दू इकाइयाँ चालू की जाएँगी।

§12§मूल्यांकन

आवृत्ति–प्रत्येक 6 माह पर ।

विवरण– प्रत्येक पंचायत में एक या दो उपयुक्त स्थल चुनकर एक स्थल पर 100 शिक्षुओं का मूल्यांकन क्रियाशीलन। पूरे समूह को 4 टोलियों में विभाजन । मौखिक, लिखित, गैर संज्ञानात्मक एवं गीत तथा खेल से संबंधित प्रश्न या कार्याभिव्यक्ति हर मूल्यांकन स्थल पर 4 प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन संपादन। देखरेख के लिए अनौपचारिक प्रभाग का एक व्यक्ति। मूल्यांकन के पूर्व मूल्यांकन कर्त्ताओं का एक द्वितीय प्रशिक्षण। प्रश्न तथा जवाब के लिए समेकित पत्रक।

मूल्यांकन विश्लेषण

शिक्षुओं के मूल्यांकन पत्रकों की जांच एक पक्ष के भीतर करा ली जायगी। यह आवश्यक है। इससे ही पता चलेगा कि अनौपचारिक शिक्षा में न्यूनतम सीखने के स्तर की सम्प्राप्ति कितने हद तक हुई है। इसी केअनुसार शिक्षुओं को कौशल की विभिन्न श्रेणियों में डालकर, आगे के लिए उन्हें विभिन्न कौशलों से परिचित कराया जा सकेगा।

मूल्यांकन एवं मूल्यांकन विश्लेषण हेतु उचित कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण दिया जायगा।

§13§स्वास्थ्य कार्यक्रम

स्थानीय चिकित्सकों के अलावा अन्य चिकित्सकों से भी सहायता के लिए अनुरोध किया जायगा। मुख्यतः शिक्षुओं का स्वास्थ्य परीक्षण कार्य होगा।

.....

§14§ उच्च प्राथमिक स्तरीय अनौपचारिक विद्यालय

80 उच्च प्राथमिक स्तरीय अनौपचारिक विद्यालय इस सत्र में खोले जाएँगे।

§15§ अनौपचारिक शिक्षा बुलेटिन

द्विमासिक पत्रिका के रूप में आरम्भ किया जायगा। वातावरण निर्माण, अनुश्रवण एवं संधारेक्षण के लिए इसका योगदान महत्वपूर्ण होगा। इसे सभी टोला समितियाँ,अनौपचारिक इकाइयाँ,इस्तेमाल करेंगी। धीरे-धीरे शिक्षुओं की अनुपूरक सामग्री के रूप में भी इसका प्रयोग होने लगेगा।

§16§ विभिन्न प्रपत्र

सर्वेक्षण प्रपत्र,समेकन प्रपत्र,आरम्भिक रपट,मासिक रपट,स्वयंसेवक शिक्षक की उपस्थिति विवरणी,शिक्षु सूची,उपस्थिति पंजी,टोला समिति कार्यवाही पंजी, मास्टर रजिस्टर,पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक कार्य विवरणी,मूल्यांकन विवरणी,तालिका नं0-1 तथा 2,प्रश्न बैंक,मूल्यांकन विश्लेषण विवरणी,स्वयंसेवक-शिक्षक सूची,स्वयंसेवक-शिक्षक मानदेय भुगतान प्रपत्र पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक मानदेय भुगतान प्रपत्र आदि।

§17§ पेशागत शिक्षण

स्वागत पत्र रचना,पेपर प्लेट,दोंगा,मिट्टी के सामान का काम,लकड़ी के सामान,चमड़े के सामान,जिल्दसाजी,कॉपीबनाई,सिलाई,कटाई,बॉस तथा सींकी के सामान,मोमबत्ती बनाना आदि। इन कार्यों के प्रशिक्षण की व्यवस्था चुनिन्दा अनौपचारिक इकाइयों में की जायगी।

§18§ प्रबन्धन हेतु अनौपचारिक स्वयंसेवी समूह

§क§ टोला सभा—सर्वेक्षण तथा वातावरण निर्माण कार्यक्रम से उभरे कार्यकर्त्ताओं की पहल पर टोला सभा बैठती है। टोला सभा टोले में विकास समस्याओं के को हल करने के लिए टोला समिति की रचना करती है। टोला सभा ही अनौपचारिक विद्यालय की जरूरतें तय करती है। शिक्षुओं की पहचान करती है तथा उनके लिए टोले से स्वयंसेवक/स्वयंसेविका की पहचान करती है। पूरे काम को अंजाम देने के लिए टोला समिति बनाकर उसे काम सौंप देती है।

§ख§ टोला समिति की विशेष भूमिका

रचना-आधी संख्या महिलाएँ,अभिभावक आदि 10/17 सदस्य।
मिलन आवृत्ति-पाक्षिक बैठक,संयोजक/संयोजिका द्वारा बैठक संचालन।
कार्य- स्वयंसेवक शिक्षक का मानदेय वितरण।
- हाजिरी बही के प्रासंगिक भाग का विवरण पंचायत कोर ग्रुप में भेजना।
- मासिक तथा दैनिक विवरणों की जाँच।
- प्रगति की देखभाल ।

- सामुदायिक सहभागिता की गारंटी।
- शिशुओं को विद्यालय में लाना।
- छीजन पर रोक।
- स्वयंसेवक शिक्षक को प्रोत्साहन।
- टोले के स्वाभाविक स्त्रोत व्यक्तियों (बढ़ई, कुम्हार, नानी, दादी ..) का उपयोग सुनिश्चित करना ।
- टोला समिति को पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक मदद करते है।
- टोला समिति के नाम से पासबुक ।

(ग) पंचायत कोर ग्रुप

मिलन आवृति-पाक्षिक, पंचायत में, पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक द्वारा संचालन तथा सचिव द्वारा नेतृत्व

रचना- टोला संयोजक/संयोजिकाएँ, पंचायत, प्रमुख व्यक्ति, पर्यवेक्षक सहायक कोर, अ०सं(ग्रुप सचिव का पद कोई संयोजक/संयोजिका को संभालना होता है। संचालन में सहायक अभियान संयोजक मदद करते हैं। अक्षरक्रम में सचिव पहचाने जाते हैं। 6 माह बाद अक्षर चक्र के अनुसार बदलते हैं।

कार्य— समिति को क्रियाशील तथा जीवन्त रखना।
- — प्रगति पत्रक, सर्वेक्षण रपट, मासिक हाजिरी विवरणी को इकट्ठा कर प्रखंड में भेजना (इसकी सहायता से मानदेय वितरण में सुविधा)।
- — पंचायत कोर ग्रुप के नाम से पासबुक
- — अनुश्रवण, संधारेक्षण।
- — अनौपचारिक विधालयों की देखभाल का आकलन ।
- — प्रशिक्षण, मूल्यांकन संबंधी कार्य।
- — पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक के मानदेय देना ।
- — बाल न्यूज पेपर संधारण, अ०शि०बुलेटिन का वितरण (पंचायत स्तरीय)

नोट:- पंचायत कोर ग्रुप में प्रखण्ड कोर ग्रुप के कोई एक प्रतिनिधि भाग लेते है। मानदेय देने जैसे महत्वपूर्ण कार्रवाइयों के समय प्रखण्ड कोरग्रुप के अभियान संयोजक भाग लेते हैं।

(घ) स्वयंसेवक क्लब

मिलन आवृति—पाक्षिक (पंचायत में)। सहायक अभियान संयोजक द्वारा संचालन।
रचना- पंचायत के सभी स्वयंसेवक, पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक।
कार्य— इकाई के संबंध में योजना बनाना, कठिनाइयों की अभिव्यक्ति तथा उपचार, विभिन्न जानकारियाँ लेना तथा देना, मासिक हाजिरी विवरणी को तैयार करना, शिक्षण के संबंध में नवाचार ।

(ङ) प्रखण्ड कोर ग्रुप

मिलन आवृति—मासिक, प्रखण्ड में अभियान संयोजक द्वारा संचालन ।
रचना-पंचायत कोर ग्रुप के सचिवों, पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक, प्रखण्ड के प्रमुख व्यक्ति, बीडी०ओ०, सी०ओ०, एवं आवश्यकतानुसार आमंत्रित व्यक्ति।

कार्य— पंचायत कोर ग्रुप तथा स्वयंसेवक क्लब द्वारा प्राप्त पत्रकों, सूचनाओं आदि का समेकन कर जिला को भेजना, प्रशिक्षण, मूल्यांकन आदि विभिन्न क्रियाशीलनों के लिए योजना बनाना तथा कार्यान्वित करने के लिए कदम उठाना ।

§घ§ जिला कोर ग्रुप

मिलन आवृत्ति- मासिक, संयोजक द्वारा संचालन ।

रचना— प्रमुख व्यक्ति, स्रोत व्यक्ति, अभियान संयोजक, आवश्यकतानुसार आमंत्रित व्यक्ति।

कार्य- अनौपचारिक शिक्षा संबंधी विभिन्न कार्यों की योजना बनाना एवं कार्यान्विता करना। प्रखंड अभियान संयोजक-सह-परियोजना पदाधिकारी तथा प्रखण्ड प्रबंधन इकाई के कर्मियों का मानदेय आदि जिला कोर ग्रुप देता है।

§ङ§ टोला समिति पर विशेष नोट

टोला समितियाँ अनौपचारिक शिक्षा की रीढ़ हैं। बिना इनकी जागरूकता तथा जीवंतता के चाहे जितनी भी कोशिश की जाय संतोषजनक संप्राप्ति नहीं मिल सकती।

टोला समितियों पर ही स्वयंसेवक शिक्षक की देखभाल, उनकी उर्जा, तेजस्विता तथा कार्यशीलता निर्भर करती है। जो भी संज्ञानात्मक तथा गैरसंज्ञानात्मक उपलब्धि संभव है वह टोला समितियों की सक्रियता से संबंधित है।

टोला समितियाँ स्वयंसेवक शिक्षकों को मानदेय देने की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। यह स्वयं में एक नायाब तजुरबा है। मगर इस तजुरबे को उपयोगी तथा सटीक बनाने के लिए टोला समितियों के सदस्यों तथा संयोजक/संयोजिकाओं को कार्यकारी प्रशिक्षण एवं निरंतर उन्मुखीकरण से गुजारना होगा। उनकी बैठकों में यदाकदा उपस्थित रहना होगा। पंचायती राज के आगमन के साथ विभिन्न कार्यकर्त्ताओं की उपयोगिता में नए आयाम जुड़ने वाले हैं। इस रोशनी में टोला समितियों की उपयोगिता का महत्व आँका जाना चाहिए।

टोला समितियों की रचना में आधी संख्या में महिलाओं की और खास तौर से शिक्षुओं के परिवारों की महिलाओं की, रखी जाती है। यह उत्तरदायित्व संभालने की दृष्टि से महत्वपूर्ण कदम है।

टोला समिति के सदस्यों का दो दिवसीय प्रशिक्षण पंचायत स्तर पर किया जायगा तथा हर 6 माह पर उनका उन्मुखीकरण आयोजित होगा। जो टोला समितियाँ अपनी सक्रियता में श्रेष्ठ उतरेंगी, उनके बारे में अनौपचारिक शिक्षा बुलेटिन में सफलता गाथा छापी जायगी।

ऐसे टोलों के लिए सम्मानजनक पुरस्कार की व्यवस्था की जा सकेगी।

तत्काल इस दिशा में जनवरी तथा फरवरी माह को लोक सहभागिता माह के रूप में मनाया जायगा। इस अवधि में पहले से कार्यशील टोला समितियों के संयोजकों की ट्रेनिंग पूरी कर ली जायेगी एवं प्रत्येक टोला समिति की बैठक में एक बार अनौपचारिक शिक्षा के सचेतकर्मी एवं अन्य सहयोगियों को भाग लेने की व्यवस्था की जायगी। यह व्यक्ति स्रोत व्यक्ति की तरह भूमिका अदा करेगा और टोला समिति की बैठक को जीवंत बनाने में भाग लेगा। ऐसी बैठकों में टोला समिति के सदस्यों से अनुभवों का लेन देन भी होगा।

अब तक टोला समितियाँ सुचारू रूप से क्रियाशील हों, उसके पहले ही इकाइयाँ चालू हो जाती रही हैं। टारजेट ज्यादा महत्वपूर्ण रहा है, प्रोसेस§प्रक्रिया§कम। इस साल से कोशिश रहेगी कि टोला समिति कार्यशील हो जाए, तब इकाइयाँ तेजी से काम करनी शुरू करें। यह भी कोशिश होगी कि टोला समितियाँ अनौपचारिक इकाइयों की खुद माँग करें।

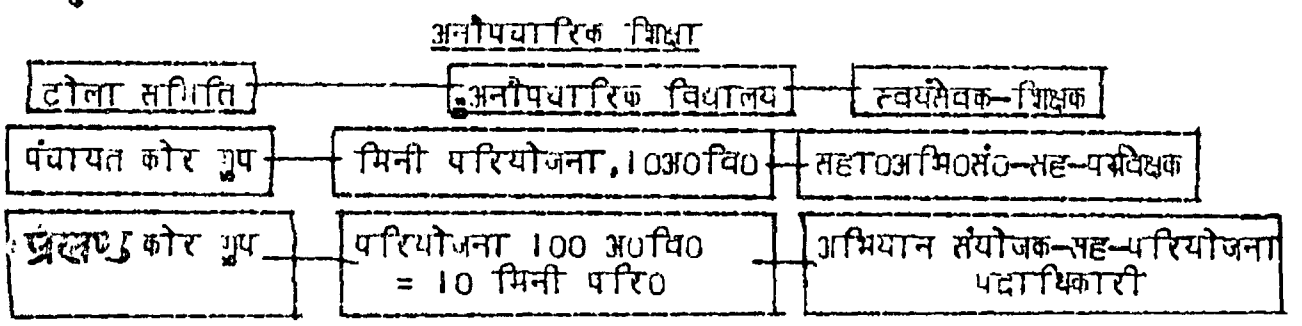

§ज§ संरचनात्मक सारणी

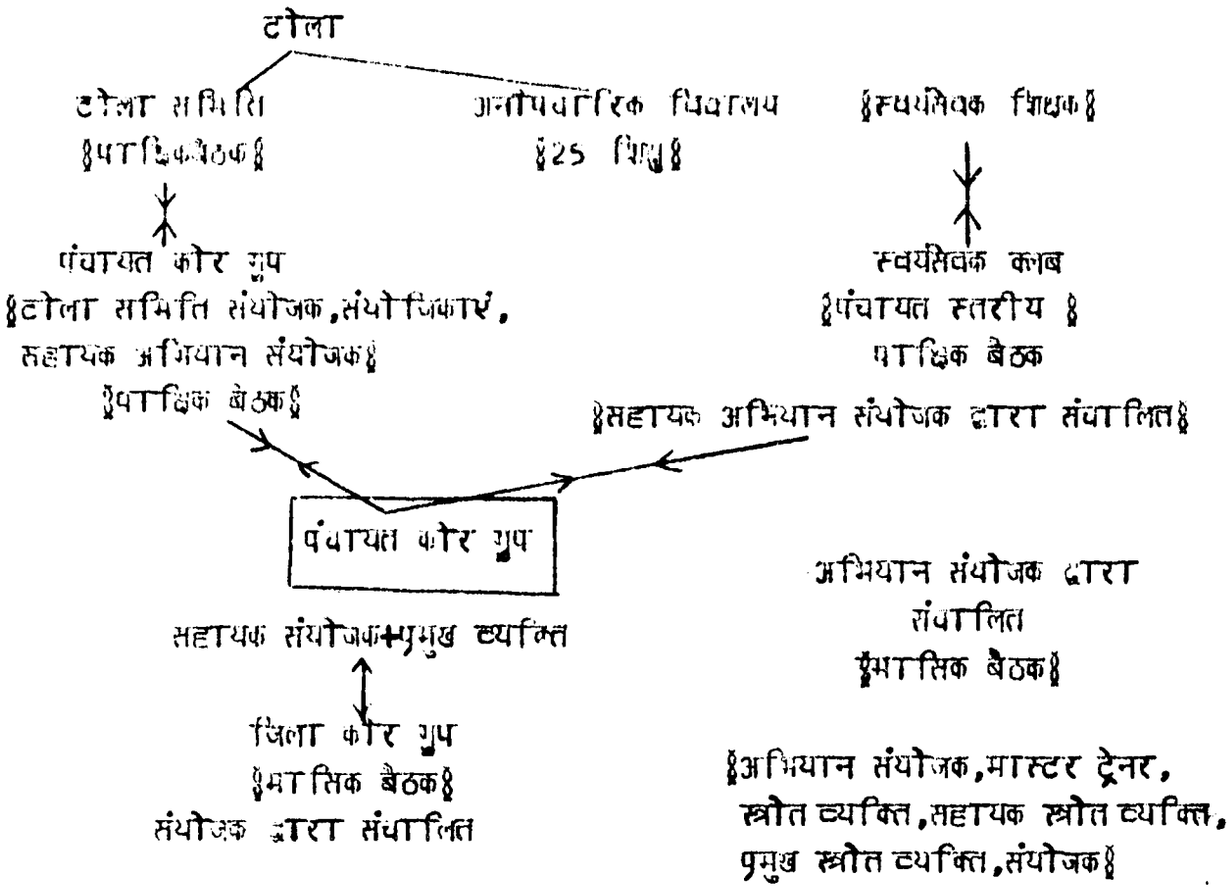

सोपान का स्वरूप

§19§ अनुसंधान

10 स्वयंसेवक शिक्षक
—
सहायक अभियान संयोजक

10 सहायक अभियान संयोजक
अभियान संयोजक

प्रोजेक्ट की दृष्टि से

जिला
परियोजना §प्रखण्ड स्तर-अभियान संयोजक§
10 मिनी परियोजना §पंचायत स्तर-सहायक अभियान संयोजक§
100 अनौ0विद्यालय §टोला स्तर §टोला समिति-स्वयंसेवक शिक्षक§

1 अनौपचारिक इकाई—एक स्वयंसेवक शिक्षक—25 शिशु

टोला समिति

— 10-15 सदस्य
— आधी महिला सदस्याएँ
— संयोजक/संयोजिका

स्वयंसेवक शिक्षक का मानदेय—200=00 रू० प्रतिमाह

§19§ अनुसंधान

— अनौपचारिक शिक्षा जिन प्रखंडों में प्रचलित है, वहाँ पारंपरिक किस्सों, कहानियों, मुहावरों, कहावतों, पहेलियों का संग्रह किया जायेगा।
— विभिन्न बाल लोकगीतों एवं शैलियों का संकलन होगा। सर्वाधिक आवृति प्रदर्शित करनेवाले शब्दों का संग्रह होगा।
— विभिन्न प्रश्नावलियों द्वारा अनौपचारिक शिक्षा तथा इसके विभिन्न कार्यक्रमों के असर का अध्ययन किया जायेगा।

— आरम्भिक प्रयोग के लिए 4 कर्मी, 3 माह के लिए, 2000=00 रुपये प्रतिमाह मानदेय पर, यात्रा भत्ता अलग से, विभिन्न पुपत्र तथा अनुसंधान सामग्री।

— विश्लेषण के पश्चात आवश्यकतानुसार, उन्हीं कर्मियों का दूसरे कर्मियों का व्यवहार ।

— अनुसंधान रपट का प्रकाशन।

— फीडबैक के अनुसार अनौपचारिक कार्यक्रम में परिवर्तन ।

———::0::———

दिसम्बर,93 माह तक के क्रियाशीलन

अनुलग्नक-"क"

सामान्य विवरणी

प्रखण्ड	आच्छादित पंचायतें	आच्छादित टोले	स्वयंसेवक शिक्षक	सहायक अभियान संयोजक	शिक्षु
मीनापुर	17	112	112	—	2800
मोतीपुर	03	20	26	03	650
गायघाट	06	50	75	03	1950
कांटी	01	01	01	—	25
कुढ़नी	01	01	01	—	25
कुल—	28	104	215	06	5450

शिक्षु विवरणी

बालिकाएँ			बालक			कुल
सामान्य	अनुसूचित	कुल	सामान्य	अनुसूचित	कुल	
1000	655	1655	2345	1448	3975	5450

प्रशिक्षण विवरणी

प्रखण्ड	अवधि	दिवस	प्रशिक्षु(म0+पु0)
मोतीपुर	3 जून,93 से 8 जून,1993 तक	6 दिवसीय	22 + 08
गायघाट	7 अगस्त,93 से 12 अगस्त,93 तक	6 दिवसीय	26 + 06
गायघाट	9 सितम्बर,93 से 20 सितम्बर,93	12 दिवसीय	36 + 09
मीनापुर	10 अक्तूबर,93 से 21 अक्तूबर,93तक	12 दिवसीय	46 + 07
मीनापुर	6 नवम्बर,93 से 17 नवम्बर,93तक	12 दिवसीय	44 + 15
मोतीपुर एवं गायघाट	26 दिसम्बर,93 से 31 दिसम्बर,93	6 दिवसीय	58

कार्यकर्त्ता विवरण

सहायक अभियान संयोजक	उम्मीदवार सअभियान संयोजक	अभियान संयोजक	उम्मीदवार अभियान संयोजक	मास्टर ट्रेनर	प्रखण्ड	जिला स्त्रोत व्यक्ति	जिला मास्टर ट्रेनर
	17			2	मीनापुर	प्रमुख व्यक्ति (प्रतिनियोजित स्त्रोत व्यक्ति)। (सहा0स्त्रोत व्यक्ति)।	6
3			1	2	मोतीपुर		
3	3		1	5	गायघाट		

नया कार्यकर्त्ता विवरणी

मास्टर ट्रेनर— 15 + 15
तथा स्त्रोत व्यक्ति —
प्रमुख व्यक्ति— 05

अनुलग्नक-"ब" समय सारणी की तालिकाएँ

सर्वेक्षण

अनौपचारिक इकाइयों की समय-सह-कार्य सारणी (वर्ष-1994-95)

पृशि0-12 दिवसीय-×, 10 दिवसीय- +, 8 दिवसीय=-

प्रखण्ड	टोला	अनौ0 इकाइयाँ	20 जन. तक इकाइयाँ	30जन. तक इकाइयाँ	अप्रील तक इकाइयाँ	मई तक इकाइयाँ	फर0मार्च 94	मई-जून 94	जुला.-अग. 94	सित0, 94	नव. दित. 94	परवरी 95	इकाइयाँ चालू होना मार्च, 94	जुलाई, 94	अगस्त, 94
मीनापुर	50	90			80(50)			80×		80 +	80 −				
मोतीपुर	60	100				100(60)			100 ×		100 +	100 −			100
गायघाट	14	20	20(14)				20 ×	20+		20 −			20		
काँटी	70	100	50(35)			50(35)	50 ×	50+	50 ×	50 −	50 +	50 −	50		50
कुढनी	60	100	50(30)			50(30)	50 ×	50+	50 ×	50 −	50 +	50 −	50		50
बोचहाँ	70	100		50(35)	50(35)		50 ×	50+ 50×		50 + 50 −	50 −		50	50	
मुरौल	85	100			100(85)			100×		100 +	100 −			100	
मुशहरी	90	100		50(45)	50(45)		50 ×	50+	100 ×	50 +	50 −	100 −	50	50	
सरैया	100	100			100(100)			50×	100 ×	50 −	100 +	100 −	100		
	599	800	120(79)	100(80)	380(315)	200(125)	200×	280× 220+	300 ×	200 − 280 +	180 − 300 +	300 −	220	380	200

अनुलग्नक-"ङ"

पुरानी इकाइयों के स्वयंसेवक शिक्षकों की प्रशिक्षण टिप्पणी

जून,93	अगस्त,93	सितम्बर,93	अक्तूबर,93	नवम्बर,93	दिसम्बर,93	फर0जन0,94	मार्च,94	अप्रील,94	मई,94	जुलाई,94
			53 ×	59 ×		53 +	59 +		53 −	
30 क					30 ख			30 +		30 −
	32 क	45 ×			32 ख 58 क	45 + 58 ख		32 + 58 +	45 −	32 − 58 −
			1 ×			1 +			1 −	
			1 ×			1 +			1 −	

अनुलग्नक-"ध"

मूल्यांकन एवं मूल्यांकन विश्लेषण सारणी

प्रथम मूल्यांकन विवरणी			मूल्यांकन विश्लेषण	द्वितीय मूल्यांकन विवरणी	मूल्यांकन विश्लेषण
प्रखण्ड	मास	शिशु			
मोतीपुर	जनवरी, 94	650	फरवरी, 94 तीसरा सप्ताह	जून, 94	जुलाई, 94
गायघाट	फरवरी, 94	1950	मार्च, 94 दूसरा सप्ताह	जुलाई, 94	अगस्त, 94
मीनापुर	अप्रील, 94	1325	मई, 94	सितम्बर, 94	अक्तूबर, 94
मीनापुर	मई, 94	1475	जून, 94	अक्तूबर, 94	नवम्बर, 94
मीनापुर	दिसम्बर, 94	2000	जनवरी, 94	मई, 95	जून, 95
मोतीपुर	अगस्त, 94	1250	सितम्बर, 94	दिसम्बर, 94	जनवरी, 95
मोतीपुर	दिसम्बर, 94	2500	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95
गायघाट	अगस्त, 94	500	सितम्बर, 94	दिसम्बर, 94	जनवरी, 95
कांटी	अगस्त, 94	1250	सितम्बर, 94	दिसम्बर, 94	जनवरी, 95
कुढ़नी	अगस्त, 94	1250	सितम्बर, 94	दिसम्बर, 94	जनवरी, 95
बोचहाँ	अगस्त, 94	1250	सितम्बर, 94	दिसम्बर, 94	जनवरी, 95
मुशहरी	अगस्त, 94	1250	सितम्बर, 94	दिसम्बर, 94	जनवरी, 95
बोचहाँ	दिसम्बर, 94	2500	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95
मुरौल	दिसम्बर, 94	2500	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95
मुशहरी	दिसम्बर, 94	2500	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95
गायघाट	दिसम्बर, 94	2500	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95
कांटी	दिसम्बर, 94	2500	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95
कुढ़नी	दिसम्बर, 94	1250	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95
सरैया	अगस्त, 94	2500	जनवरी, 95	मई, 95	जून, 95

अनुलग्नक- ङ.

स्वयंसेवक शिक्षक ट्रेनिंग (आवासीय - 30 दिन)

प्रशिक्षण विषय

§1§ समूह गान

§2§ व्यायाम+ योग

§3§ स्वाध्याय

§4§ समूह चर्चा

§5§ प्रश्नोत्तरी

§6§ खेलों की जानकारी

§7§ समूह की दैनिक रपट

§8§ क्षेत्र भ्रमण

§9§ कार्य प्रदर्शन

§10§ रोल प्ले-सिमुलेशन

§11§ अनुप्रेरण

§12§ शिक्षण सामग्रियों का व्यवहार

§13§ बालगीत

§14§ अखबार वाचन

§15§ संदर्शिका वाचन

§16§ शिक्षण विधि

§17§ बाल मनोविज्ञान

§18§ सांस्कृतिक कार्यक्रम

§19§ टोला समिति रचना,कार्य विधि

§20§ मूल्यांकन

§21§ मूल्यांकन विश्लेषण

§22§ अनुश्रवण संचारेक्षण

§23§ सहभागी विधि

§24§ अभ्यास पाठ

§25§ कहानी कथोपकथन

§26§ सीखने का न्यूनतम स्तर

§27§ दक्षता आधारित शिक्षण

§28§ प्रपत्र भरना

§29§ भाषा,गणित,पर्यावरण

§30§ संज्ञानात्मक चर्चा

§31§ गैर संज्ञानात्मक संक्रियाओं का अध्ययन

§32§ समूह में बाल नाटक लेखन

§33§ समूह में बाल गीत लेखन

§34§ रपट लेखन

---::0::---

अनौपचारिक प्राथमिक शिक्षा

1994-95 अनुमानित खर्च

क्षेत्र - 9 प्रखण्ड, अनौपचारिक विद्यालय-25 शिशु

10 अ0वि0- 1 पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजक

100अ0वि0- 1 परियोजना पदाधिकारी-सह-अभियान संयोजक

क्रम	कार्यक्रम	टारजेट	अनुमानित खर्च
(1)	1994-95 के लिए		
(क)	आवर्त्ती खर्च- 6015×720	720	43,30,800=00
(ख)	अनावर्त्ती- रू0 1500×720	720	10,80,300=00
(ग)	मास्टर प्रशिक्षक का प्रशिक्षण-रू030×30×12	30	10,000=00
(घ)	मास्टर प्रशिक्षक का पुनर्प्रशिक्षण- रू0 30×30×06	30	5,400=00
(ङ)	साधनसेवी मानदेय-रू040×4×18	4	2,880=00
(2)	1993-94 के लिए(पुरानी इकाइयाँ)		
(क)	आवर्त्ती खर्च- रू0 6925×500	500	34,62,500=00
(ख)	परियोजना प्रबन्धन- रू0 41,400×5	5	2,07,000=00
(ग)	स्वयंसेवक तथा स0अ0सं0को इनाम-(15+10=25) रू0 500×25	25	12,500=00
(घ)	कार्यशालाएँ- रू0 30×50×2(दिन)×5(संख्या)तथा यात्रा खर्च-	5	25,000=00
(3)	30 प्रा0 इकाइयाँ(1994-95 के लिए)		
(क)	आवर्ती खर्च-रू0 11850×80	80	9,48,000=00
(ख)	अनावर्त्ती खर्च-रू0 1800×80	80	1,44,000=00
(4)	परियोजना प्रबन्धन(1994-95) रू0 42400×8	8	3,39,200=00
(5)	समवायशाला-रू0 15000×80	80	12,00,000=00
(6)	30 स्वयंसेवक शिक्षक तथा 20 पर्यवेक्षक-सह-स0अ0सं0 के लिए पुरस्कार-रू0500×50	50	25,000=00
(7)	कार्यशालाएँ-रू0 30×50×2×8+टी0ए0	8	40,000=00
(8)	परियोजना पदाधिकारियों (अभियान संयोजकों) तथा पर्यवेक्षकों-सह-सहायक अभियान संयोजकों का प्रशिक्षण (10 दिवसीय)प्रतिवर्ष(80+22(पुराने)=102 5शिविर, रू0 30×102×10	102	30,600=00
			1,18,63,980=00

		बी०एफ—	1,18,63,980=00
(9)	<u>प्रशिक्षणों में मानदेय(1994-95)</u>		
	(क) 800 स्वयंसेवक शिक्षक,27 शिविर प्रत्येक शिविर 30 दिनों का, प्रतिदिन 2 मानसेवी-रु040×27×2×30	27	64,800=00
	(ख) 1993-94 500 स्वयंसेवक शिक्षक,17 शिविर प्रत्येक शिविर 18 दिनों का रुपये- 40×17×2×18	17	24,480=00
	(ग) 1994-95 परियोजना कर्मियों का प्रशिक्षण 80+22(पुराने)=102 इनके 5 शिविर प्रत्येक शिविर 10 दिनों का रुपये- 40×5×2×10	5	4,000=00
(10)	अनौपचारिक शिक्षा बुलेटिन(त्रैमासिक) रुपये 10×6×6500	6500	3,90,000=00
(11)	सर्वेक्षण प्रति टोला रुपये- 50.00×550		27,500=00
(12)	अनुसंधान कर्मियों का मानदेय, यात्रा खर्च,सामग्री खर्च आदि आरम्भिक तौर पर		75,000=00
(13)	स्वयंसेवक शिक्षकों,परियोजना कर्मियों, शिक्षुओं का भ्रमण-		50,000=00
(14)	मूल्यांकन प्रपत्र,विश्लेषण,मनन,कार्यशाला-		80,000=00
			1,25,79,760=00

1994-95 की कार्ययोजना

—::एक नजर में::—

— नए अनौपचारिक विद्यालय-	800
— शिशु प्रतिभागी-	20000
— नये प्रखण्डों में प्रसार-	4
— स्वयंसेवक-प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण-	800
— पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजकों का प्रशिक्षण-	80
— मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण-	30
— पुराने पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजकों का पुनर्प्रशिक्षण-	50
— पुराने स्वयंसेवक शिक्षकों का पुनर्प्रशिक्षण-	500
— कार्यशालाएँ-	8
— समवायशालाएँ-	80
— उच्च प्राथमिक इकाइयाँ-	80
— आलोके-	10
— शिशुओं का भ्रमण- बालिकाओं का भ्रमण	अंतर प्रखण्डीय अंतर जिला विभिन्न राज्यों में
— पर्यवेक्षक-सह-सहायक अभियान संयोजकों को पुरस्कार-	30
— स्वयंसेवक शिक्षकों को पुरस्कार-	45
— टोला समिति सदस्यों का दो दिवसीय प्रशिक्षण-	599 टोला समितियाँ
— पुरानी टोला समितियों के संयोजक तथा एक सदस्य का एक दिवसीय उन्मुखीकरण-	3684632
— दैनिक मूल्यांकन इकाई मूल्यांकन सत्रांत मूल्यांकन	1300 अनौ0इकाइयाँ
— अनौपचारिक शिक्षा बुलेटिन-	द्विमासिक

———::0———

ब ज ट

वर्ष-1993-1994

एक झलक

क्रम	मुद्दा	दिसम्बर,93 तक व्यय	प्रस्तावित व्यय जनवरी,94 से मार्च,94	कुल
	प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा			
1.	अनौपचारिक प्राथमिक केन्द्र			
§1§	मानदेय- पर्यवेक्षकों/अनुदेशकों-	39,399=00	2,55,600=00	2,94,999=80
§2§	अनुदेशकों का प्रशिक्षण-	99,119=00	1,00,000=00	1,99,119=00
§3§	शिक्षण सामग्री			
	ग्लोब,नक्शा,चार्ट-	—	1,60,000=00	1,60,000=00
§4§	केन्द्र को ब्लैक बोर्ड-	8,700=00	60,000=00	68,700=00
		1,47,218=00	5,75,600=00	7,22,818=80

———::0::———

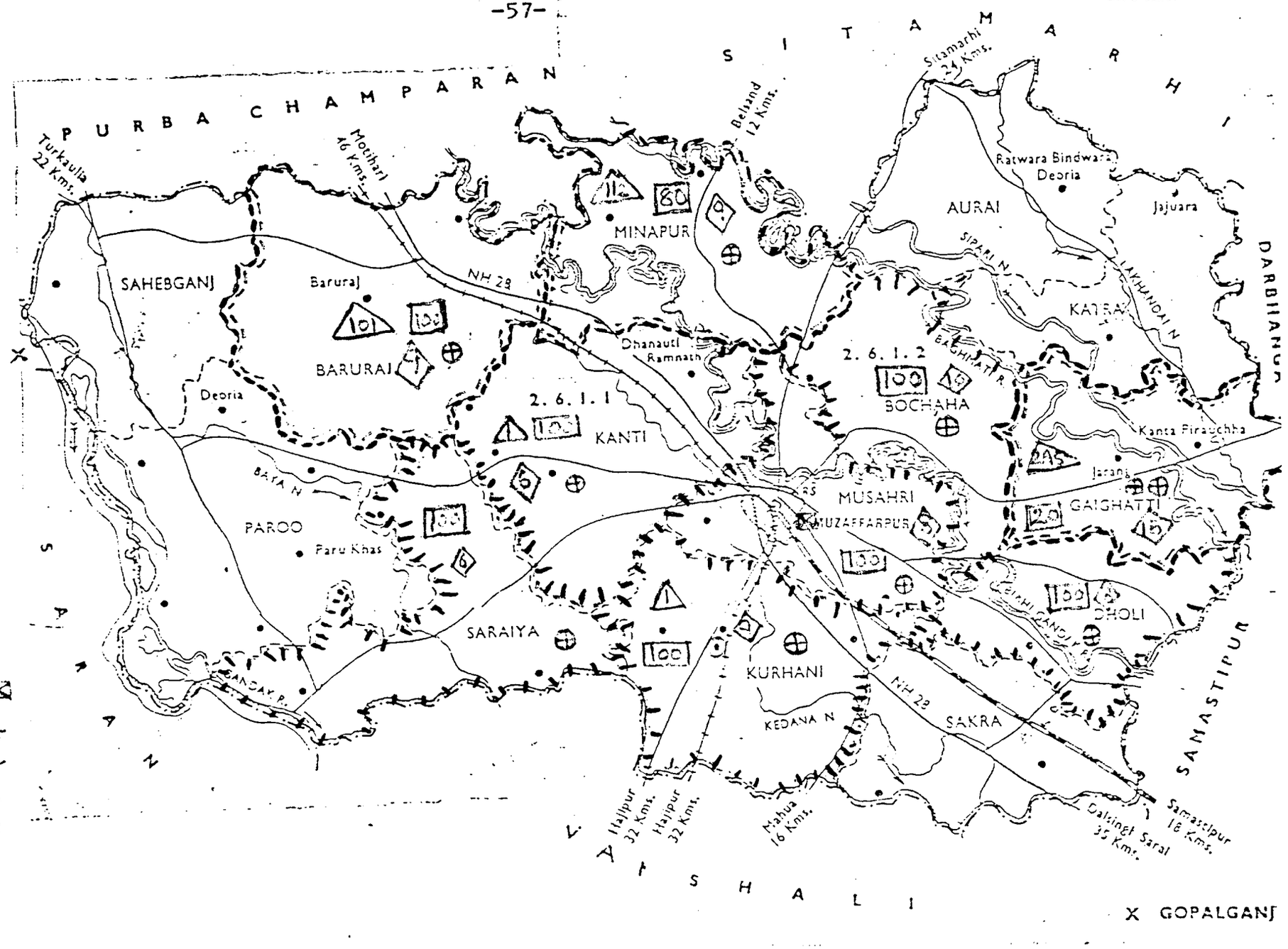

PURBA CHAMPARAN
SITAMARHI
DARBHANGA
SAMASTIPUR
VAISHALI
SARAN
X GOPALGANJ
Turkaulia 22 Kms.
Motihari 46 Kms.
Belsand 12 Kms.
Sitamarhi 24 Kms.
Hajipur 32 Kms.
Hajipur 32 Kms.
Mahua 16 Kms.
Dalsingh Sarai 35 Kms.
Samastipur 16 Kms.
SAHEBGANJ
BARURAJ
Baruraj
Deoria
MINAPUR
AURAI
Ratwara Bindwara
Deoria
Jajuara
KATRA
LAKHANDAI N
SIPARI N.
BAGHMATI R.
NH 28
Dhanauti Ramnath
2. 6. 1. 1
KANTI
2. 6. 1. 2
BOCHAHA
Kanta Pirauchha
Jarang
GAIGHATTI
MUSAHRI
MUZAFFARPUR
PAROO
BAYA N
Paru Khas
SARAIYA
KURHANI
KEDANA N
SAKRA
NH 28
DHOLI
BURHI GANDAK
GANDAK R.
B.E.P. MUZAFFARPUR
1993-'94 Blocks (NFE)
1994-'95 NFE Blocks
NFE Vidyalayas 1993-'94

प्रशिक्षण

पृष्ठभूमि

बिहार शिक्षा परियोजना, प्राथमिक शिक्षा का पुनर्निर्माण कर शैक्षिक क्षेत्र में सुधार लाना चाहती है ताकि समाज में व्याप्त जड़ता, अंध विश्वास, निराशा, कटुता और हिंसा दूर हो सके।

अबतक प्राथमिक शिक्षा सबके लिए सुलभ नहीं हो पायी है। प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में से 40% शिक्षक अपने पेशे में दक्ष नहीं पाये जाते हैं। लगभग 20% शिक्षक विद्यालय में नियमितरूप से समय पर उपस्थित नहीं रहते हैं। उनमें शिक्षण के प्रति रुचि नहीं है। निरीक्षण भी प्रभावकारी नहीं रह गया है। समुदाय एवं ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों में जागृति का अत्यंत अभाव है। समाज के समृद्ध लोग भी नहीं चाहते कि गरीब बच्चे पढ़ें। शिक्षकों के एक वर्ग में आज भी जाति-गोत्र एवं छुआछूत का कुसंस्कार विद्यमान है। भौतिक सुविधाओं में कमी, शिक्षा शिक्षा के अनुपात में शिक्षकों की अपेक्षित कमी, शिक्षकों की शिकायतों को दूर करने के लिए प्रभावी तंत्र का अभाव, शिक्षा की योजना एवं प्रबंधन में शिक्षकों की सहभागिता प्राप्त नहीं होना, शिक्षक सम्मान में कमी, शिक्षक संगठनों द्वारा व्यावसायिक निष्ठा बढ़ाने में सहयोग प्राप्ति का अभाव, गरीबी एवं पिछड़ापन के कारण शिक्षा का सर्वव्यापीकरण संभव नहीं हो पाया है। इन परिस्थितियों में 6-14 आयुवर्ग के सभी बच्चों को 2000 ई० तक विद्यालयों या अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में नामांकित अवश्य कराना है। शिक्षा में गुणात्मक विकास आवश्यक रूप में करना है। यह अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। सर्वव्यापी नामांकन सर्वव्यापी भागीदारी एवं सर्वव्यापी उपलब्धि हेतु औपचारिक शिक्षा अथवा अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित कर इस लक्ष्यको प्राप्त किया जाना है।

प्रशिक्षण का महत्त्व एवं रणनीति

प्राथमिक शिक्षा में मजबूती प्रदान करने हेतु प्रशिक्षण का बहुत बड़ा महत्व है। प्रशिक्षण से ही शिक्षकों, अनदेशकों एवं अन्य शिक्षाकर्मियों में अभिवृत्यात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। वास्तव में क्षेत्र में जाने पर यह पता चलता है कि प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों में पढ़ाई के प्रति जागरूकता आई है। वे नियमित एवं समयनिष्ठ हुए हैं। बाल केन्द्रित शिक्षा की अवधारणा एवं बाल मनोविज्ञान के प्रति शिक्षक अधिक संवेदनशील हो रहे हैं। विद्यालयों में गतिशीलता आ रही है। शिक्षण विधि में परिवर्तन के कारण शिक्षार्थियों के साथ-साथ समुदाय का आकर्षण भी विद्यालय की ओर होने लगा है। क्रीड़ा की घंटी मेंबच्चों के साथ शिक्षक स्वयं भी सहभागी हो रहे है। खेल विधि से अध्यापन कार्य प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा बड़े पैमाने पर संपन्न किया जा रहा है। शिक्षा उपादान के रूप में परिवेशीय वस्तुओं का शिक्षकों द्वारा भरपूर उपयोग किया जाने लगा है।

वास्तव में प्रशिक्षण जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षार्थी की दक्षताएँ पहले से बढ़ जाती हैं। एक सामान्य व्यक्ति प्रशिक्षण पाकर अंतरिक्ष यात्री बन जाता है। प्रशिक्षण मनुष्यो को ही नहीं बल्कि जानवरों को भी अपने कौशलों के विकास में सहायता प्रदान करता है। सर्कस के प्रशिक्षित जानवर इसका आदर्श उदाहरण है। प्रशिक्षित कुत्ते वैसे करतब कर दिखाते है जो अच्छे से अच्छे पुलिस अधिकारी भी नहीं कर पाते। अतः जीवन में प्रशिक्षण के महत्व को स्वीकारना ही पड़ता है। यही कारण है कि बिहार शिक्षा परियोजना में प्रशिक्षण पर बहुत बल दिया गया है। प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों का शिक्षार्थियों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए उनके उचित प्रशिक्षण पर ध्यान दिया जा रहा है। इस जिले में प्रशिक्षण कार्य हेतु जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मुरौल एवं डायट उपकेन्द्र के रूप में महिला प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रामबाग को अधिगृहित किया गया है। इन दोनों संस्थानों में शिक्षकों का 21 दिवसीय सेवाकालीन आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण को दो चरणों में बांटा गया है। प्रशिक्षण का पहला चरण 10 दिवसीय अभिवृत्यात्मक परिवर्तन के लिए है तथा इस प्रशिक्षण के एक माह बाद दूसरे चरण का 11 दिवसीय प्रशिक्षण विषयगत ज्ञान के लिए आयोजित किया जाता है। प्रशिक्षण को केवल शिक्षकों तक ही सीमित नहीं रखा गया है क्योंकि

प्रशिक्षण तो एक प्रक्रिया है जो सभी व्यक्तियों में अंतर्निहित प्रतिभाओं एवं कुशलताओं का विकास करती है। अतः गणित एवं विज्ञान शिक्षकों का तीन दिवसीय, गुच्छ प्रधानों का पाँच दिवसीय, निरीक्षी पदाधिकारियों का 5 दिवसीय, ग्राम शिक्षा समितिके प्रशिक्षण हेतु साधन-सेवियों का दो दिवसीय, अनौपचारिक शिक्षा के मास्टर ट्रेनर का 12 दिवसीय, अभियान संयोजक का 7 दिवसीय एवं अनुदेशकों का वर्ष में 30 दिवसीय (12+10+8) तीन चरणों में, महिला समाख्या के सहयोगिनियों का 6 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। महिला समाख्या के लिए अब अलग साधन केन्द्र इस हेतु स्थापित किया जा चुका है। डायट केन्द्रों में स्थानाभाव केकारण प्रखण्ड मुख्यालयों में अनौपचारिक शिक्षा के अनुदेशकों का प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है।

इस जिले में परियोजना परिषद् द्वारा डायट, सुरौल में प्राचार्य नियुक्त किए जा चुके है। किन्तु साधनसेवी के रूप में एस0सी0ई0आर0टी0 द्वारा 26 साधनसेवियों को प्रशिक्षण कार्य हेतु प्रशिक्षण दिलाया गया है।

गुच्छ प्रधानों एवं निरीक्षी पदाधिकारियों के लिए अबतक प्रशिक्षण मैनुअल उपलब्ध नहीं है। इसी प्रकार गणित एवं विज्ञान शिक्षण के प्रशिक्षण हेतु भी प्रशिक्षण मैनुअल तैयार नहीं है। प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु इन मैनुअलों को भी उपलब्ध कराना होगा। शिक्षकों छात्रों एवं अन्य शिक्षाकर्मियों से संपर्क हेतु एक मासिक बुलेटिन भी निकालने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

लोकभागीदारी

स्वतंत्रता से पूर्व राजकर्मियों एवं समुदाय के बीच कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। विदेशी सरकार जनता के प्रति जबाबदेह हो नहीं सकती थी। किन्तु लोकतंत्रात्मक शासन में राज्यकर्मियों को समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता स्वाभाविक है। जन प्रतिनिधि के रूप में राज्यकर्मियों में कार्य संस्कृति पूर्णतया विकसित नहीं हो पाई है। समुदाय में भी अपने दायित्वों एवं अधिकारों के प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता नहीं आ पायी है। यही कारण है कि संविधान में प्रावधान रहते हुए भी प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण नहीं हो पाया है। बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा ग्राम शिक्षा समिति के माध्यम से पूर्ण लोकभागीदारी प्राप्त करने का सफल प्रयास किया जा रहा है। इस हेतु विद्यालयों में परियोजना द्वारा भवन निर्माण, मरम्मति, शौचालय, चापाकल, शिक्षा किट, खेल सामग्री, शैक्षिक उपकरण आदि ग्राम शिक्षा समिति के माध्यम से ही प्राप्त कराये जा रहे हैं। लोकभागीदारी प्राप्त करने हेतु आम सभी द्वारा प्रत्येक विद्यालय में ग्राम शिक्षा समिति कागठन किया जा रहा है एवं उनके सदस्यों का द्विदिवसीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

गुरू गोष्ठी

प्रत्येक माह निश्चित तिथि को अंचल स्तर पर प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी एवं गुच्छ स्तर पर गुच्छ प्रधान द्वारा गुरूगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। गुरू गोष्ठी में मुख्यतया निम्न बिन्दुओं पर विचार किया जाता है और निर्णय लिया जाता है:-
(1) विभागीय एवं परियोजना आदेशों का स्पष्टीकरण (2) मासिक वेतन विपत्र संग्रह (गुच्छ स्तर पर) (3) विद्यालय को भौतिक रूप में सुदृढीकरण हेतु विमर्श (4) प्रदर्शन पाठ का आयोजन (5) नामांकन में वृद्धि एवं ठहराव के उपाय (6) पाठ्यक्रम की कार्यान्विति में होनेवाली कठिनाइयों और उनके निराकरण के संबंध में विचार विमर्श और व्यावहारिक सुझाव परिवेशीय सामग्रियों की सहायता से शिक्षण उपादान का प्रयोग (8) पुस्तक चर्चा (9) न्यूनतम अधिगम स्तर अवधारणा का स्पष्टीकरण (10) शिक्षण विधि, बालमनोविज्ञान एवं शिक्षा सिद्धान्त पर चर्चा (11) [illegible] (12) पुस्तकालय के पुस्तकों का प्रयोग (13) लोक भागीदारी प्राप्त करने हेतु कार्यक्रम निर्धारण आदि।

गोष्ठी में निर्धारित बिन्दुओं पर लिए गए निर्णयों का अभिलेखीकरण किया जाता है तथा उसकी एक प्रति बिहार शिक्षा परियोजना जिला कार्यालय को भेजी जाती है। चालू वर्ष में 84 गुरूगोष्ठियों में 3690 प्रतिभागियों की सूचना कार्यालय को उपलब्ध हो चुकी है।

10/11 दिवसीय प्रशिक्षण

इस जिले में मध्य एवं प्राथमिक विद्यालयों में कुल-7790 शिक्षकों का पद स्वीकृत है, जिनमें वर्तमान में 7249 पद पर शिक्षक कार्यरत है। मार्च, 94 तक कुल-560 शिक्षक 21 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे। वर्तमान में डायट केन्द्र, मुरौल एवं डायट उपकेन्द्र रामबाग की क्षमता केअनुसार वर्ष 94-95 में कुल-1190 शिक्षकों का 21 दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न हो सकेगा। यदि प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, पताही एवं प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, पोखरैरा को भी डायट उपकेन्द्र के रूप में अधिगृहित कर लिया जाय तो 1190 शिक्षकों का 21 दिवसीय प्रशिक्षण उन संस्थानों में भी संभव हो सकता है। इसके लिए उन दोनों संस्थानों में कार्यरत व्याख्याताओं को एसoसीoईoआरoटीo से प्रशिक्षण भी दिया जा चुका है। इस प्रकार चार संस्थानों में एक साथ प्रशिक्षण आयोजित कर कुल-2380 शिक्षकों का 21 दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न हो सकेगा। वर्ष 95-96 में 2380 एवं वर्ष 96-97 में शेष सभी शिक्षकों को 21 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित कर जिले के सभी मध्य एवं प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना अपेक्षित है।

प्रशिक्षण बुलेटिन

आवृत्ति	मासिक
कुल संख्या	5,000
वितरण-	-- प्राथमिक तथा मध्य विद्यालय
	-- राज्य के प्रशिक्षण संस्थान
	-- राज्य तथा परियोजना जिलों की संबंधित इकाइयों
	— ग्राम शिक्षा समिति के सदस्य

प्रत्येक अंक की एक प्रति के लिए खर्च- 10=00

कुल खर्च- 5000×10= 50,000=00

50,000×12=6,00,000=00

२ प्रशिक्षण की उपलब्धि तथा प्रशिक्षुओं एवं प्रशिक्षितों के साथ संपर्क कायम रखने के लिए प्रशिक्षण बुलेटिन आवश्यक है। वित्तीय मापदंडों की सारणी में इसकी अनुमति है। इसे स्वीकारा जा सकता है।

कार्यशाला

शिक्षार्थियों में स्थूल भौतिक वस्तुओं के माध्यम से अधिगम सुगम हो जाता है। यदि उन्हें कुछ करके सीखने का अवसर प्रदान होता है तो उन्हें ज्ञान और बोध के साथ-साथ अनुभव भी प्राप्त होता है। इस दृष्टि से वर्ष 94-95 में इस जिले में 8 कार्यशाला आयोजित करने की योजना है। यह कार्यशाला 5 दिवसीय प्रस्तावित है। प्रत्येक कार्यशाला में 40 प्रतिभागी होंगे।

गणितकार्यशाला-- शिक्षकों द्वारा गणित के विभिन्न उपकरण यथा गिनतार,डॉमिनों, क्विजनेयर पट्टियाँ आदि तथा विभिन्न ज्यामितीय आकार के वस्तुओं यथा गोलाकार, आयताकार, वर्गाकार, बेलनाकार आदि शिक्षण सामग्री का निर्माण मिट्टी,कागज,लुगदी,कमाचीं आदि के उपयोग से किया जाना है।

विज्ञान कार्यशाला-- परिवेशीय वस्तुओं का संग्रह, वर्गीकरण निरीक्षण एवं उनसे वांछित निष्कर्ष प्राप्त किया जायगा। जीव विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान से सम्बन्धित छोटे-छोटे साधित्रों एवं रसायनों की सहायता से प्राकृतिक घटनाओं की साधारण व्याख्या करना अभीष्ट होगा। इसके लिए दो कार्यशाला आयोजित की जायगा।

भाषा कार्यशाला-- कागज एवं मोडेल की सहायता से कथोपकथन,नाटक,कहानी, कविता,चुटकुले,अक्षर बोध, बोलने का विकास, सुनने का विकास एवं लेखन के विकास पर बल दिया जायगा।

समाज विज्ञान-- इतिहास, भूगोल, नागरिक जीवन एवं कृषि पर आधारित 4 कार्यशाला आयोजित करने की योजना है। मानचित्र,ग्लोब,आदि को मॉडल बनाना, पुरातत्व से सम्बन्धित सामग्रियों का संग्रह करना, विभिन्न वेशभूषाओं का संग्रह, विभिन्न रीति-रिवाजों एवं संस्थाओं के क्रिया-कलाप का मॉडेल, चार्ट आदि का निर्माण कराना इन कार्यशालाओं के क्रियाशीलन का मुख्य उद्देश्य है।

-----::0::-----

प्रशिक्षण प्रभाग की कार्ययोजना- वर्ष 1994-95 (समय संदर्शिका)

प्रशिक्षण स्थल	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या	साधनसेवियों की संख्या
डायट, मुरौल प्रा0अ0/शिक्षक प्रशिक्षण	05-04-94 से 15-04-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	04-04-94 से 13-04-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	18-04-94 से 28-04-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	19-04-94 से 28-04-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
प्रधानाध्यापक/गुच्छ प्रधान प्रशिक्षण, डायट मुरौल	02-05-94 से 06-05-94 = 05 दिन	40	5
	06-05-94 से 16-05-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	07-05-94 से 16-05-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	20-05-94 से 30-05-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	21-05-94 से 30-05-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
निरीक्षी पदाधिकारियों का प्रशिक्षण, डायट उपकेन्द्र, रामबाग	08-06-94 से 10-06-94 = 3 दिन	30	5
	06-07-94 से 16-07-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	07-07-94 से 16-07-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	18-07-94 से 28-07-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	19-07-94 से 28-07-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	01-08-94 से 11-08-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	02-08-94 से 11-08-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	16-08-94 से 26-08-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	17-08-94 से 26-08-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
प्रधानाध्यापक प्रशिक्षण, डायट, मुरौल	01-09-94 से 05-09-94 = 5 दिन	40	5
	05-09-94 से 15-09-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	06-09-94 से 15-09-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	19-09-94 से 29-09-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	20-09-94 से 29-09-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
गणित प्रशिक्षण, डायट, मुरौल	03-10-94 से 05-10-94 = 3 दिन	40	5
विज्ञान प्रशिक्षण, डायट, उपकेन्द्र, रामबाग	04-10-94 से 06-10-94 = 3 दिन	40	5
	18-10-94 से 28-10-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	19-10-94 से 28-10-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	11-11-94 से 21-11-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	12-11-94 से 21-11-94 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	23-11-94 से 03-12-94 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10

निरीक्षी पदाधिकारी का प्रशिक्षण, डायट उपकेन्द्र, रामबाग।	06-12-94 से 08-12-94 = 3 दिन	30	5
	03-01-95 से 13-01-95 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	04-01-95 से 13-01-95 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
	16-01-95 से 26-01-95 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	17-01-95 से 26-01-95 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
डायट, उपकेन्द्र, रामबाग, प्र०अ०/गुच्छ प्रधान प्रशिक्षण	27-01-95 से 31-01-95 = 5 दिन	40	5
	05-02-95 से 15-02-95 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	06-02-95 से 15-02-95 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
गणित प्रशिक्षण	18-02-95 से 20-02-95 = 3 दिन	40	5
डायट उपकेन्द्र, रामबाग। विज्ञान प्रशिक्षण	18-02-95 से 20-02-95 = 3 दिन	40	5
डायट उपकेन्द्र, रामबाग, प्र०अ०/गुच्छ प्रधान प्रशिक्षण	23-02-95 से 27-02-95 = 5 दिन	40	5
	01-03-95 से 13-03-95 = 11 दिन	35×2=70	5×2=10
	02-03-95 से 13-03-95 = 10 दिन	35×2=70	5×2=10
डायट, मुरौल प्र०अ०/गुच्छ प्रशिक्षण	24-03-95 से 28-03-95 = 5 दिन	40	5

डायट केन्द्र, मुरौल एवं डायट उपकेन्द्र, रामबाग में एक साथ 35-35 शिक्षकों का 10 दिवसीय एवं 11 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया जायेगा।

प्रशिक्षण प्रभाग का मार्च 1994 तक अग्रिम कार्य-योजना :-

(क) प्राथमिक एवं मध्य विद्यालय के शिक्षकों के 10/11 दिवसीय सेवाकालीन आवासीय प्रशिक्षण :-

	प्रशिक्षण स्थल	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या	साधनसेवियों की संख्या
1.	डायट, मुरौल	3.1.94 से 12.1.94	40	5
		18.1.94 से 27.1.94	80 (दो समूह)	10
		31.1.94 से 9.2.94	80 (दो समूह)	10
		14.2.94 से 24.2.94	80 (दो समूह)	10
		28.2.94 से 10.3.94	80 (दो समूह)	10
		14.3.94 से 24.3.94	80 (दो समूह)	10
2.	डायट उपकेन्द्र रामबाग,	3.1.94 से 13.1.94	40	5
		17.1.94 से 27.1.94	80	10
		31.1.94 से 10.1.94	80	10
		14.2.94 से 23.2.94	80	10
		28.2.94 से 9.3.94	80	10
		14.3.94 से 23.3.94	80	10
(ख)	खण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारियों/क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारियों का एक द्विवर्षीय प्रशिक्षण	30.12.93	40	
(ग)	प्रधानाध्यापक का प्रशिक्षण डायट केन्द्र मुरौल	13.1.94 से 17.1.94	40	5
(घ)	विज्ञान शिक्षकों का प्रशिक्षण डायट उपकेन्द्र रामबाग	25.2.94 से 27.2.94	40	5
(ङ)	खण्ड विकास पदाधिकारियों एवं परियोजना कर्मियों का एक द्विवर्षीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम डायट उपकेन्द्र रामबाग	6.1.94	40	

वर्ष 1993-94 में शिक्षकों, साधनसेवियों गुरु प्रधानों/प्रधानाध्यापकों, ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों का प्रशिक्षण

(13 जनवरी, 1994 तक)

1. मोतीपुर — 246 पुरुष - 10 दिवसीय
2. मोनापुर — 158 पुरुष- 11 दिवसीय
3. प्रधानाध्यापकों का प्रशिक्षण- 64 पुरुष + 2 महिला=66 (5 दिवसीय)
4. ग्राम शिक्षा समिति साधनसेवियों का प्रशिक्षण — 6 पुरुष (दो दिवसीय)
5. महिला शिक्षा में प्रशिक्षण- 55 पुरुष (तीन दिवसीय)
6. ग्राम शिक्षा समिति का सदस्य-23पुरुष+4महिला= 27 (दो दिवसीय)

-----::0::-----

92-93 में 10 दिवसीय प्रशिक्षण

प्रशिक्षण स्थल-- म०वि० माणिकपुर एवं प्रा०वि० शि० ,पमाही

क्रम	प्रखण्ड का नाम	पुरुष	महिला	योग
1.	सरैया	10	4	14
2.	साहेबगंज	10	5	15
3.	मुशहरी	10	4	14
4.	मुरौल	10	4	14
5.	सकरा	10	4	14
6.	बोचहाँ	10	3	13
7.	गायघाट	10	4	14
8.	कटरा	10	4	14
9.	कुढ़नी	18	5	23
10.	औराई	4	2	6
11.	नगर क्षेत्र	13	4	17
12.	पारू	9	5	14
13.	कांटी	46	69	115
14.	मोतीपुर	92	22	114
15.	मीनापुर	196	20	216
	योग--	458	159	617

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुरौल

आवर्ती व्यय: बजट (1994-1995)

स्थापना व्यय

(1) वेतन एवं भत्ता

(क) प्राचार्य-	5,000×12	60,000=00
(ख) छः व्याख्याता (नियुक्ति की प्रक्रिया में)	12×40446	485,352=00
(ग) प्रयोगशाला सहायक	2,084×12	34,608=00
(घ) एकाउन्टेंट-कम-हेड क्लर्क-	3,890×12	46,680=00
(ङ) प्रशासकीय पदाधिकारी-	5,618×12	67,416=00
(च) स्टेनो टाईपिस्ट-	3,890×12	46,680=00
(छ) स्टोर कीपर-	2,084×12	34,608=00
(ज) दो आदेशपाल-	1,876×12×2	45,024=00
(झ) दो माली-	1,876×12×2	45,024=00
(ट) दो ड्राइवर-	1,300×12×2	31,200=00
(ठ) इलेक्ट्रीशियन जेनरेटर ऑपरेटर-	1,300×12	15,900=00
(ड) प्लम्बर-	1,300×12	15,900
(ढ) रात्रि प्रहरी-	1,300×12	15,900=00
		9,44,292=00

टिप्पणी-प्राचार्य की नियुक्ति हो चुकी है। अन्य कर्मियों की नियुक्ति विचाराधीन है।

(2) प्रशिक्षण बुलेटिन-	5,000×10×12	6,00,000=00
(3) चिकित्सा सुविधा-		
(क) अंशकालिक चिकित्सक का मानदेय-	1,000×12	12,000=00
(ख) दवा एवं उपकरण-		15,000=00
		27,000=00

(4) (क) कार्यालय आकस्मिक व्यय-	50,000=00
(ख) दो गाड़ियों का रख-रखाव-	50,000=00
(ग) विडियो एवं ऑडियो कैसेट-	5,000=00
(घ) कर्मियों का यात्रा भत्ता-	15,000=00
(ङ) साधनसेवियों/गेस्ट प्रोफेसर का मानदेय-	30,000=00
(च) बिजली, टेलीफोन रख-रखाव-	50,000=00
(छ) अखबार, पत्रिका पुस्तकालय हेतु-	10,000=00
(ज) विज्ञान प्रयोगशाला-	10,000=00
	2,20,000=00

....

§5§ शिक्षकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण-

§क§ 1190 प्रतिभागियों का §10+11§ दिवसीय प्रशिक्षण 30/=रू0 प्रति व्यक्ति प्रतिदिन-	1190×21×30	7,49,700=00
§ख§ 1190 प्रतिभागियों का §10+11§ दिवसीय प्रशिक्षण हेतु लेखन सामग्री प्रतिव्यक्ति 15/=रू0	15×1190×2	35,700=00
§ग§ 1190 प्रतिभागियों का यात्रा भत्ता- §10+11§ दिवसीय§	1190×60×2	1,42,800=00
§घ§ क्षेत्र भ्रमण-	23×2,000	46,000=00
§ङ§ डायट से बाहर के दो साधनसेवियों का यात्रा भत्ता-	46×2×200	18,400=00
§च§ अध्यापन किट-	250×1190	2,97,500=00
§छ§ आकस्मिक व्यय-		60,000=00
		13,50,100=00

टिप्पणी-§क§वर्ष 92-93 एवं 93-94 में 10 दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त कर लिए गये शिक्षकों को 11 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित करने हेतु बजट प्रावधान उपलब्ध है।

§ख§प्रशिक्षण मैन्युअल की आपूर्ति बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् द्वारा की जाती है। अतः 10 एवं 11 दिवसीय प्रशिक्षण मैन्युअल के लिए अलग से बजट नहीं दिया जा रहा है।

§6§ प्रधानाध्यापकों/मुख्य प्रधानों का 5 दिवसीय प्रशिक्षण

§क§ पाँच सत्रों में 40 प्रतिभागियों का भोजन-	40×5×5×30	30,000=00
§ख§ यात्रा भत्ता-	60×40 × 5	12,000=00
§ग§ 15/=रू0 की दर से लेखन सामग्री-	15×40 × 5	30,000=00
§घ§ आकस्मिक व्यय-	5×500	2,500=00
		74,500=00

§7§ निरीक्षी पदाधिकारियों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण

§क§ दो सत्रों में 30 प्रतिभागियों के लिए भोजन-30/=रू0प्रति-	30×3×30	2,700=00
§ख§ 100/=रू0प्रतिव्यक्ति की दर से यात्रा भत्ता दो सत्रों के लिए-	30×2×100	6,000=00
§ग§ 15/=रू0 की दर से लेखन सामग्री-	30×2×15	900=00
§घ§ आकस्मिक व्यय-	500×2	1,000=00
		10,600=00

§8§ विज्ञान एवं गणित विषयों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण

§क§ 4सत्रों में 40प्रतिभागियों को 30/=रू0की दर से भोजन-	40×4×3×30	14,400=00
§ख§ 60/=रू0प्रतिव्यक्ति की दर से यात्रा भत्ता-	40×4×60	9,600=00
§ग§ 15/=रू0की दर से प्रतिव्यक्ति लेखनसामग्री-	40×4×15	2,400=00
§घ§ आकस्मिक व्यय-	500×4	2,000=00
		28,400=00

§9§ कार्यशाला-§पाँच दिवसीय§

§क§ 8 कार्यशालाओं के लिए 30/= की दर से 40 प्रतिभागियों के लिए- 40×5×8×30	48,000=00
§ख§ 100/=रू० की दर से यात्रा भत्ता-40×8×100	32,000=00
§ग§ 15/=रू० की दर से लेखन सामग्री- 40×8×15	4,800=00
§घ§ आकस्मिक व्यय-600/=रू०प्रति कार्यशाला-600×8	4,800=00
	89,600=00

§10§ गुरू गोष्ठी

प्रतिमाह यात्रा भत्ता एवं दैनिक भत्ता-100/=रू०प्रतिव्यक्ति की दर से 30 व्यक्तियों के लिए सभी 14 प्रखंडों एवं नगर क्षेत्र में आयोजित गुरू गोष्ठी में भाग लेने हेतु कुल व्यय-30×100×12= 36,000=00

§11§ स्टियरिंग समिति की बैठक

यात्राभत्ता एवं अल्पाहार कुल छः बैठकों के लिए-500×6 3,000=00

§12§ ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों का प्रशिक्षण

50/=रू०प्रतिव्यक्ति की दर से 2000 प्रतिभागियों लिए- 50×2000 1,00,000=00

§13§ ग्राम शिक्षा समिति साधनसेवियों का प्रशिक्षण

इस जिले में मात्र 6 साधनसेवी ही प्रशिक्षित है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु 24 साधनसेवियों को प्रशिक्षित करना अपेक्षित है।

§क§ तीन दिवसीय प्रशिक्षण हेतु 30/=रू० प्रतिव्यक्ति की दर से 24 व्यक्तियों का भोजन व्यय- 24×3×30	2,160=00
§ख§ लेखन सामग्री 15/=रू०प्रतिव्यक्ति की दर से-24×15	360=00
§ग§ यात्रा भत्ता 60/=रू०प्रतिव्यक्ति की दर से -24×60	1,440=00
§घ§ आकस्मिक व्यय-	300=00
	4,260=00

§14§ डायट केन्द्र गुरौल मरम्मती खर्च- 10,00,000=00

§15§ डायट उपकेन्द्र रामबाग मरम्मति खर्च"- 10,00,000=00

कुल आवर्त्ती बजट- 54,87,752=00

अनावर्ती व्यय

§1§ कक्षा, कार्यालय एवं प्राध्यापक प्रकोष्ठ के लिए उपस्कर एवं उपयोगी सामग्री-	2,50,000=00
§2§ डायट, मुरौल-§4000 तीनमंजीला भवन निर्माण-2यूनिट§	50,00,000=00
§3§ जलापूर्ति व्यवस्था- डायट उपकेन्द्र, रामबाग§क्वार्टर, होस्टल§	10,00,000=00
§4§ शारीरिक शिक्षा हेतु उपस्कर एवं उपादान-	15,000=00
§5§ पुस्तकालय	
§क§ आलमीरा एवं रैक क्रय हेतु-	50,000=00
§ख§ पुस्तक क्रय हेतु-	1,00,000=00
	1,50,000=00
§6§ उपस्कर एवं उपादान	
§क§ विज्ञान प्रयोगशाला-	50,000=00
§ख§ गणित प्रभाग-	30,000=00
§ग§ कला एवं मनोरंजन प्रभाग-	30,000=00
§घ§ मनोविज्ञान प्रभाग-	20,000=00
§ङ§ भाषा एवं मार्नविकी-	20,000=00
	1,50,000=00
§7§ सिलिंग पैन-	75,000=00
§8§ ट्यूब लाइट-	75,500=00
§9§ परिसर में बिजली आपूर्ति-	12,000=00
§10§ परिसर में बिजलीकरण हेतु वायरिंग-	2,50,000=00
§11§ डायट केन्द्र, मुरौल एवं डायट उपकेन्द्र, रामबाग के लिए जेनरेटर§10के0यू0ए0§-2	1,50,000=00

कुल अनावर्ती बजट- 71,27,500=00

प्रशिक्षण एवं डायट का -94-95 के लिए
कुल बजट- 1,26,15,252=00

-----::0::-----

प्रशिक्षण (94-95)

औपचारिक शिक्षा

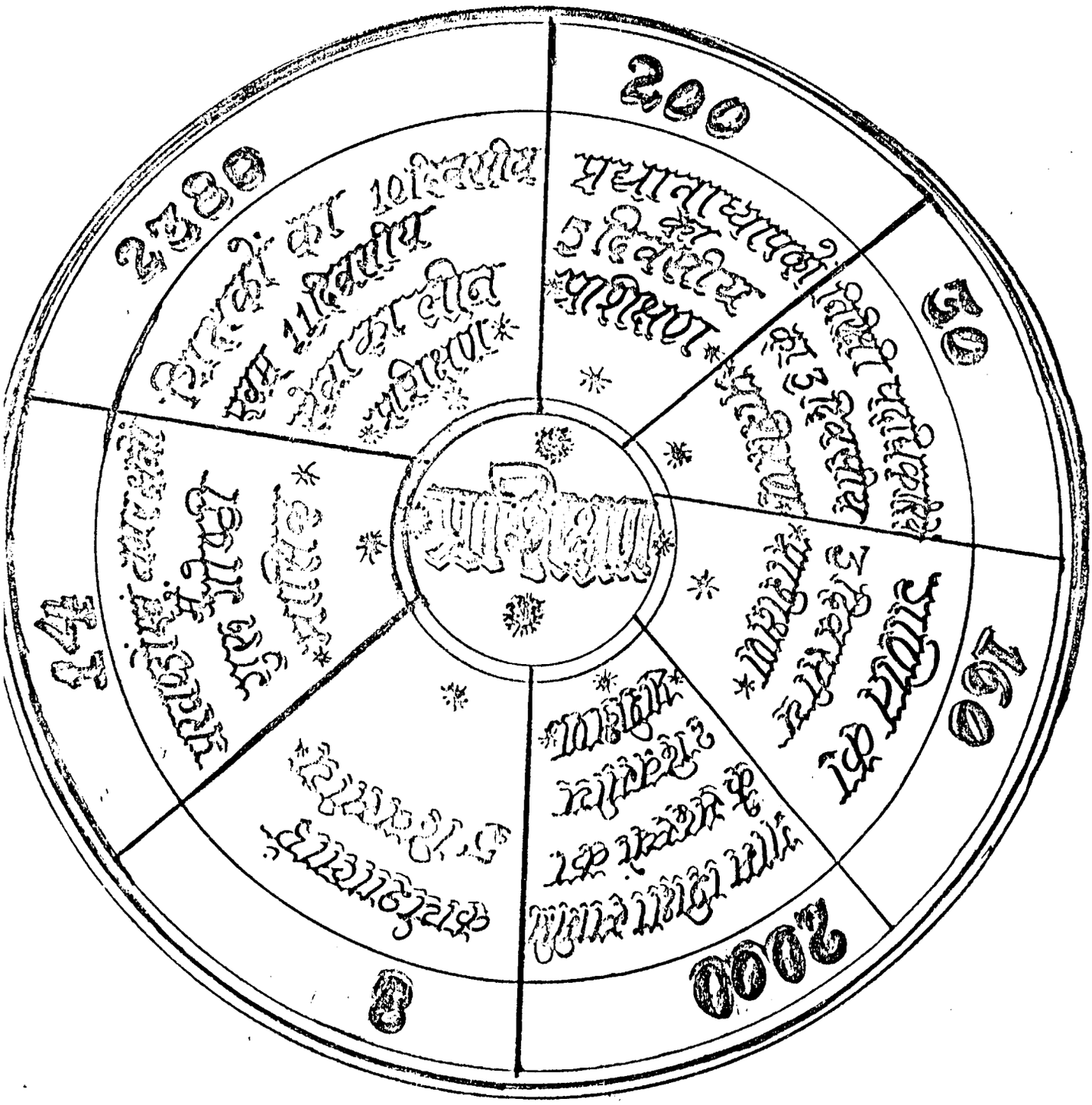

अनौपचारिक शिक्षा प्रशिक्षण (९४-९५)

कार्यालय, बिहार शिक्षा परियोजना
महिला समाख्या, मुजफ्फरपुर।

विषय:- महिला समाख्या वार्षिक कार्ययोजना मार्च 1994-95.

भूमिका:-

मुजफ्फरपुर जिले में बिहार शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत महिला समाख्या कार्यक्रम की शुरुआत 1 मार्च 93 को हुई। जिसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं में जागृति लाना था। यह कार्यक्रम गाँव के उस महिला वर्ग के लिए करना था, जो आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ा हुआ है। प्रारंभ में 160 गाँवों को कार्यक्षेत्र के लिए लिया जाना था। कार्यक्षेत्र के लिए जिलाधिकारी एवं बिहार शिक्षा परियोजना के अन्य पदाधिकारियों के सहयोग से मुशहरी प्रखंड का चुनाव हुआ। चूँकि मुशहरी में 129 गाँव ही थे इसलिए इससे सटे बोचहाँ प्रखंड से 21 गाँव एवं कुढ़नी प्रखंड से 10 गाँवों को लिया गया। इस प्रकार यहाँ कुल 160 गाँव है जिसमें से प्रथम चरण में 80 गाँव में काम शुरू करना था।

लक्ष्य- 1993-94

वर्ष 1993-94 में महिला समाख्या द्वारा प्रखंड का चयन करके पूरे प्रखंड में महिला समाख्या कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाना था जिसके अन्तर्गत महिला समाख्या का लक्ष्य था-

- सहयोगिनियों का चयन एवं प्रशिक्षण
- 80 गाँवों में समूह गठन
- समूह गठित गाँवों में एक या दो सखियों का चयन
- चयनित सखियों का उन्मुखीकरण एवं प्रशिक्षण
- ग्राम शिक्षा समिति॥ का गठन॥ औपचारिक शिक्षा से सम्बद्ध
- जगजगी केन्द्र के लिए वातावरण निर्माण एवं 30 जगजगी केन्द्र खोलना।
- जगजगी केन्द्र चलानेवाली सहेलियों का चयन एवं प्रशिक्षण
- कार्यशालाओं का आयोजन
- सहयोगिनियों के साथ यूनिट बैठक
- सहयोगिनियों के साथ मासिक बैठक
- संचालन समिति का गठन।

उपलब्धि-

- 16 सहयोगिनियो का चयन एवं उनका दो चरण में, 10 एवं 7 दिवसीय प्रशिक्षण
- 67 गाँवों में महिला समूह का गठन
- 132 सखियों का उन्मुखीकरण
- गाँव में ग्राम शिक्षा समिति का गठन
- जगजगी केन्द्र के अन्तर्गत वातावरण निर्माण हेतु महिलाओं के बीच शिक्षा का प्रसार प्रचार एवं गाँव सर्वेक्षण
- गठित महिला समूहों की नियमित बैठकें
- 4 कार्यशालाओं का आयोजन
- सहयोगिनियों के साथ छः मासिक बैठक सम्पन्न
- सहयोगिनियों के साथ अब तक छः इकाई स्तरीय बैठकें
- संचालन समिति गठित एवं उनके साथ दो बैठके सम्पन्न

महिला समाख्या कार्यक्रम आरंभ करने के पहले की स्थिति:-

- शिक्षा के प्रति उदासीनता
- महिलाओं में एकता का अभाव
- बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति अनभिज्ञता
- महिलाएँ मुँह ढँककर बात करती थी
- सरकारी योजनाओं की जानकारी न होने के कारण लाभ से वंचित रहीं।
- सामाजिक कुरीतियों के कारण अनेक समस्याओं व्याप्त- बाल-विवाह, कम उम्र में बच्चा, पर्दा प्रथा , छुआछूत, ऊँच-नीच, जात-पात का भेदभाव।

.....

महिला समाख्या कार्यक्रम आरंभ करने के पश्चात् की अवस्था:-

- महिला समाख्या की कार्यक्रम आरंभ 160 गाँव में हुआ जिसमें 16 सहयोगिनियाँ कार्य कर रही है।
- प्रत्येक गाँव में महिला समूह का गठन हो रहा है।
- शिक्षा के प्रति जागरूकता आने लगी है अतः महिलाये बच्चों को विद्यालय भेजने लगी है। नामांकन बढ़ा।
- कल तक घर से बाहर आने में हिचकिचाती लड़कियाँ एवं महिलाएँ समूह में आने लगी है।
- जो महिलाएँ कभी बाहर नहीं निकलती थी वैसी महिलाएँ राज्यस्तरीय महिला सम्मेलन में पटना गई। ग्रामीण महिलाएँ जो अपने बारे में पुछने पर कुछ बतलाने में असमर्थ थी वैसी महिलाएँ भीड़ के समक्ष मंच पर नुक्कड़ नाटक, गीत तथा समूह गान गाया।
- अपने में उत्पन्न नई चेतना के कारण अब महिलाएँ संगठित रूप से मुद्दो का फैसला तथा विकास का काम करने लगी है।
- म0स0 गाँव में शिक्षकों की उपस्थिति नियमित होने लगी है। वे समय पर आने लगे है।
- म0स0समूह अब नियमित रूप से स्कूल जाकर स्कूल का निरीक्षण करती है।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली सहत् जानकारी होने पर समूह द्वारा सही दामों पर राशन का सामान लेना।

मार्च 1994 से मार्च 1995 तक
कार्ययोजना

महिला समाख्या महिलाओं का कार्यक्रम है। जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि महिलाएँ अपनी स्थिति को बेहतर तरीके से समझ सकें। समाज में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित करे तथा अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं ले सकें। यह मान्य है कि महिलाओं की समानता की दिशा में शिक्षा निर्णायक हस्तक्षेप कर सकती है।

मुजफ्फरपुर के तीन प्रखंड मुशहरी, बोचहां, कुढ़नी के आच्छादित 80 गाँवों में 93-94 से काम चल रहा था। 1994-95 में इन्हीं प्रखंडों के बाकी 80 गाँवों में भी कार्य के लिए निर्णय लिया गया है। कार्य के लिए इस साल का निर्धारित लक्ष्य निम्न प्रकार है:-

§1§ सहयोगिनी प्रशिक्षण-

16 सहयोगिनियों का चयन एवं उन्मुखीकरण। दो 10+ 7 दिवसीय प्रशिक्षण हो चुके हैं। आगामी वर्ष एक प्रशिक्षण प्रथम चरण में और दूसरा प्रशिक्षण द्वितीय चरण में दिया जायेगा।

§2§ सखी चयन/उन्मुखीकरण/प्रशिक्षण

नये क्षेत्रों में सखियों का चयन किया जायेगा तथा उनका उन्मुखीकरण तथा प्रशिक्षण प्रत्येक महीने किया जायेगा।

§3§ सहेली का चयन/प्रशिक्षण/उन्मुखीकरण

जिन-जिन क्षेत्रों में "जगजगी केन्द्र" खोलने की माँग हो रही है उन क्षेत्रों में जगजगी केन्द्र चलाने के लिए सहेली का चयन। उन्मुखीकरण/प्रशिक्षण होगा। प्रशिक्षण अनौपचारिक विभाग द्वारा किया जायेगा।

§4§ जगजगी केन्द्र:-

महिला समाख्या कार्यक्रम में एक शैक्षिक गतिविधि है। महिला समाख्या बालिकाओं, किशोरियों एवं महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा को एक मुख्य आधार मानता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 70 नये जगजगी केन्द्र खोले जायेंगे। मार्च 194 तक 30 जगजगी केन्द्र खोलने है।

§5§ महिला कुटीर:-

वर्ष 1994-95 में महिला समाख्या के अन्तर्गत 10 महिला कुटीर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। 1 ब्लॉक में 1-1 कुटीर खोला जायेगा। कुटीर का निर्माण महिलाओं के सामूहिक सहयोग से किया जायेगा जहाँ महिलाएँ नियमित बैठक करें तथा अपनी इच्छानुसार ज्ञान तथा जानकारी हासिल करें।

§6§ महिला शिक्षण केन्द्र:-

इस केन्द्र का उद्देश्य यह है कि जिला स्तरीय एक प्रशिक्षण स्थल अलग रखना जहाँ महिलाओं के उपर्युक्त कौशल को प्रशिक्षण के माध्यम से विकसित करा सकें ताकि वे जीविकोपार्जन हेतु उस कौशल को प्रयोग में ला सकें। इसके अलावा इस शिक्षण केन्द्र में अनपढ़ एवं छोजन-ग्रस्त महिलाओं को कम-से- कम समय में प्राथमिक शिक्षा भी प्रदान की जायेगी। इस वर्ष एक ऐसा महिला शिक्षण केन्द्र खोलने का लक्ष्य रखा गया है।

§7§ क्षेत्र भ्रमण:-

सहयोगिनियों एवं सहेलियों के लिए क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया जायेगा जिसके अन्तर्गत वे अन्य जिलों के महिला समाख्या कार्यक्रम की गतिविधियों को देखकर जानकारी हासिल कर सके और उन गतिविधियों को अपने क्षेत्र में लागू करके महिला समाख्या के कार्यक्रमों को और भी सुचारू रूप से चला सके। क्षेत्रभ्रमण के अन्तर्गत यह तय किया गया है कि इस वर्ष सहयोगिनियाँ चार चरण में क्षेत्र भ्रमण का कार्य करेंगी।

§8§ मेला/संगोष्ठी/मिलन/दिवस/कार्यशाला/अन्य सम्मेलन महिला समाख्या कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए सखियों समय-समय पर सखियों एवं सहेलियों के विचारों एवं कार्य अनुभवों का आदान-प्रदान होना भी आवश्यक है। साथ ही गाँव की बच्चियों के विकास के लिए समय-2 पर प्रयोगात्मक कार्य भी चलेंगे। इसलिए समय-समय पर महिला दिवस बालिका मेला माँ बेटी मिलन, आदि आयोजित किये जायेंगे।

§9§ विशेष कार्यशालाओं का आयोजन:-

इस वर्ष सहयोगिनी सखी एवं समूह के सदस्यों में गुणात्मक सुधार लाने हेतु महीने में एक बार या दो महीने में एक बार एक-एक कार्यशाला आयोजित की जायेगी। जिसमें किसी खास विषय § जो उनकी तरफ से माँग होगी§ पर जानकारी दी जायेगी।

§10§ आदर्श गाँव:-

वर्त्तमान में कार्य तीन इकाइयों में चल रहा है। इस तीन इकाईयों में 5-6 संकुल हैं। इस वर्ष ऐसा प्रयास किया जायेगा कि प्रत्येक इकाई से एक-एक गाँव को मांडल के रूप में मॉडल गाँव बनाये।

§11§ महिला समूह गठन:-

समूह गठन का उद्देश्य यह है कि महिलाएँ बिना भय से अपनी इच्छानुसार ज्ञान तथा जानकारी हासिल कर सकें ताकि महिलाओं में आत्मविश्वास तथा आत्मछवि का विकास हो। महिलाओं के समूह गठन से यह भी उम्मीद की जाती है कि सामूहिक शक्ति के माध्यम से अपनी जरूरतों को व्यक्त करने में उनमें साहस आ सके तथा जिला संरचना पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें तथा अपनी समस्याओं तथा जरूरतों को

पूरा कर सके। अतः इस वर्ष 80 महिला समूह गठन का लक्ष्य रखा गया है।

§12§ ग्राम शिक्षा समिति:-

ग्राम शिक्षा समिति का गठन औपचारिक विभाग से संबद्ध है। 1499 समितियों का गठन हो चुका है और शेष समितियों का ही गठन इस वर्ष के अंत तक पूरा कर लिया जायेगा।

§13§ प्रलेखन/प्रकाशन/पर्चा/दीवाल लेखन:-

इसके अन्तर्गत महिला समाख्या की मुख्य गतिविधियों का स्लैइडस ऑडियों एवं विडियों टेप्स और पर्चा तैयार किया जायेगा। विशेष कार्यकलाप को वी०डी०पी० की मासिक पत्रिका द्वारा किया जायेगा। साल में एक या दो बार क्षेत्रीय भाषा में महिला समाख्या द्वारा पत्रिका का प्रकाशन करने की कोशिश की जायेगी ताकि ज्यादा-से -ज्यादा महिलाओं तक वह पहुंच सके।

§14§ स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना तथा सहयोग प्राप्त करना

नेहरू युवा केन्द्र संस्था द्वारा चापाकल रख-रखाव योजना के अन्तर्गत चापाकल मरम्मति का प्रशिक्षण महिला समूह के कुछ सदस्यों को दिलवाना। साथ-ही -साथ सरकारी एजेंसियों तथा ग्रामीणों की मदद से पौधारोपन।

§15§ नुक्कड़ नाटक की तैयारी:-

गाँव में समस्याओं के निदान पर आधारित समय-समय पर नुक्कड़ नाटक एवं गीत का आयोजन किया जायेगा। इसकी तैयारी इस वर्ष की जायेगी।

रणनीति

(1) वातावरण निर्माण

महिला समाख्या कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु वातावरण निर्माण अति आवश्यक है। अतः वातावरण निर्माण के लिए 1994-95 में निम्न प्रकार की प्रक्रियाएँ अपनायी जायेगी:-

- गाँव-गाँव में भ्रमण एवं महिलाओं से सम्पर्क
- महत्वपूर्ण अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन
- पर्चा/दीवाल लेखन
- महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु बालिका मेला/दिवस तथा माँ-बेटी मेला/मिलन का आयोजन समय-समय पर किया जायेगा।

(2) जगजगी केन्द्रों का संचालन:-

- सर्वेक्षण के आधार पर
- जहाँ विद्यालय या अन्य अनौपचारिक शिक्षा का केन्द्र नहीं है व ही जगजगी केन्द्र के लिए प्राथमिकता।
- सहेली का चुनाव महिला समूह, कोरटीम, सहयोगिनी, सखी की सहायता की जायेगी। अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति/अत्यन्त पिछड़ी जाति को प्राथमिकता दी जायेगी।
- 60 सहेलियों का दो चरण में 20 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण अनौपचारिक शिक्षा विभाग द्वारा दिया जायेगा ।

3. विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन:-

- समय-समय पर सरकारी योजना, स्वास्थ्य, जमीन, कानून तथा कुटीर उद्योग संबंधी विषयों पर कार्यशाला का आयोजन होगा ताकि ग्रामीण महिलाएँ इससे लाभान्वित होंगी। इसके लिए विभिन्न क्षेत्र के विशेषज्ञों की सहायता की जायेगी।

4. मूल्यांकन:-

सभी- कार्यक्रमों को सुचारू एवं सफल संचालन हेतु सतत मूल्यांकन चलता रहेगा। इसके लिए -

- कोर टीम जिला कार्यबल का सहयोग लेगी तथा
- संचालन समिति की मदद ली जायेगी।
- सहयोगिनियों के साथ मासिक बैठक होगी।
- हर इकाई में सहयोगिनियों के साथ प्रत्येक पखवारे में बैठक की जायेगी।

परिषद् को बराबर भेजा रहेगा ताकि समय-समय पर उनका मार्गदर्शन मिलता रहे।

समय संदर्शिका महिला समाख्या

क्रम सं0	क्रियाशीलन	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च
1	2	3.	4.	5.	6.	7.	8.	9.	10.	11.	12.	13.	14.
1.	महिला समूह गठन												
2.	सखी प्रशिक्षण												
3.	सहयोगिनी प्रशिक्षण	समय सारणी (जि0शि0 प0 परिषद द्वारा तय होगी।											
4.	सहेली प्रशिक्षण	अनौपचारिक विभाग द्वारा सम्पन्न होगा।											
5.	जगजगी केन्द्र												
6.	महिला कुटीर												
.	नामांकन												
.	कार्यशालाएँ/बैठक												
	मूल्यांकन												

वर्ष 1993-94 क्रियाशीलन

क्रम सं.	क्रियाशीलन	लक्ष्य	प्राप्ति
1.	सहयोगिनियों का चयन	16	16
2.	सहयोगिनी प्रशिक्षण-	2	2
3.	महिला समूहों का गठन	80	67
4.	सखियों की पहचान-	160	132
5.	सखी उन्मुखीकरण प्रशिक्षण-	5	3
6.	सखी प्रशिक्षण	3	1
7.	कार्यशाला	8	4
8.	मासिक बैठक	12	4
9.	इकाई बैठक-	24	8
10.	ग्राम शिक्षा समितियों का गठन-	प्राथमिक	औपचारिक शिक्षा
11.	स्टीयरिंग कमिटी	1	2
12.	जगजगी केन्द्र	30	—
13.	महिला समूहों का बैठक-	80	53
14.	अन्य संबंधित कियकलाप-	—	5

——::0::——

ब ज ट

वर्ष-1993-94

एक झलक

क्रम	मुद्दा	दिसम्बर, 93 तक व्यय	प्रस्तावित व्यय जनवरी, 94 से मार्च, 94	कुल
	महिला समाख्या			
(1)	प्रशिक्षण			
	(क) सखी	6,000=00	15,000=00	21,000=00
(2)	(ख) सहयोगिनी-	20,036=00	25,000=00	45,036=00
(3)	महिला रिसोर्स सेन्टर	30,000=00	60,000=00	90,000=00
(4)	सहयोगिनी मानदेय-	9,533=00	11,250=00	20,783=00
(5)	कार्यशाला/सम्मेलन	32,093=00	20,000=00	52,093=00
		97,862=00	1,31,250=00	2,29,112=00

-----oo-----

वर्ष 1994-95 की कार्ययोजना (एक झलक)

		लक्ष्य
(1)	नये महिला समूह	80
(2)	ग्राम शिक्षा समितियों का गठन	—
(3)	जगजगी केन्द्र	70
(4)	महिला कुटिर	16
(5)	महिला शिक्षण केन्द्रों की स्थापना-	1
(6)	बी0ई0पी0 जिलों का भ्रमण-	4
(7)	नुक्कड़ नाटकों की तैयारी-	—
(8)	विशेष तिथियों का आयोजन- महिला दिवस, साक्षरता दिवस, पर्यावरण दिवस, माँ-बेटी मिलन, महिला मिलन, सखी मिलन ।	30
(9)	गैर-सरकारी एवं सरकारी संगठनों के साथ बैठक-	4

——::0::——

वर्ष 1994-95

(महिला समाख्या)(बजट)

क्रम	मुद्दा	लक्ष्य	राशि
1.	महिला समाख्या प्रभाग, स्थापना व्यय-(जिला स्तरीय)		6.96
	मानदेय/यात्रा भत्ता/वेतन आदि)		
	(क) जिला कोर टीम- 6500×12 = 78,000		
	(ख) सहयोगिनी 12000×12=144,000		
	(ग) समूह 32000 ×12=384000		
	(घ) स्टेनो 2500×12 30,000		
	(ङ) यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता-5000×12= 60,000		
2.	साधन केन्द्र(अनावर्ती)		2.75
	(क) साज सज्जा, उपस्कर आदि		
	आवर्ती		
	(क) पुस्तकालय -1,00,000		
	(ख) किराया आदि-75,000		
	(ग) अन्यान्य		
3.	प्रशिक्षण-		2.60
	(क) महिला समाख्या जिला कोर टीम-50,000		
	(ख) सहयोगिनी 50,000		
	(ग) सखी- 16,00,000		
4.	कार्यशाला/बैठकें/उन्मुखीकरण एवं अन्य म०स० क्रिया कलाप-	74	3.60
5.	शैक्षिक भ्रमण-	5	0.38
	(क) सहयोगिनी- 28,000	4	
	(ख) जिला कोर टीम-10,000	1	
6.	म०स०केन्द्र स्थापना ।	1	6.00
	अनावर्ती		
	(क) निर्माण/मरम्मती (ख) उपस्कर/उपकरण		
	आवर्ती		
	(क) वेतन/मानदेय		
	(ख) यात्रा भत्ता तथा अन्य व्यय		
	(ग) कार्यालय आकस्मिकता		
	(घ) प्रशिक्षण व्यय-		
	(ङ) शैक्षिक भ्रमण आदि		
	(च) पुस्तकालय		
(7)	कार्यक्रम के लिए क्षेत्राधीन व्यय-किराया आदि के लिए		1.20
(8)	प्रकाशन/अभिलेखीकरण-		1.50
(9)	जगजगी केन्द्र	60	360900
10.	महिला कुटीर	15	8.00
11.	क्षेत्रीय केन्द्र स्थापना-	1	8.94
	भवन		
	बड़ा हाल, छोटे कमरे, रसोई, स्टोर, बारांडा-6,00,000		
	शौचालय/		
	उपकरण, साज सज्जा, उपस्कर - 2,00,000		

बी०एफ०- 45.54

आवर्ती

केन्द्र को देखरेख के लिए एक पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता-24,000

पुस्तकें, समाचार-पत्र, पत्रिका -50,0000

अन्यान्य- 20,000

§12§	महिला समाख्या प्रशिक्षण किट	0.20
§13§	जिला प्रशिक्षण दल के लिए यात्रा व्यय आदि-	0.20
	कुल-	45.94

-----::0::-----

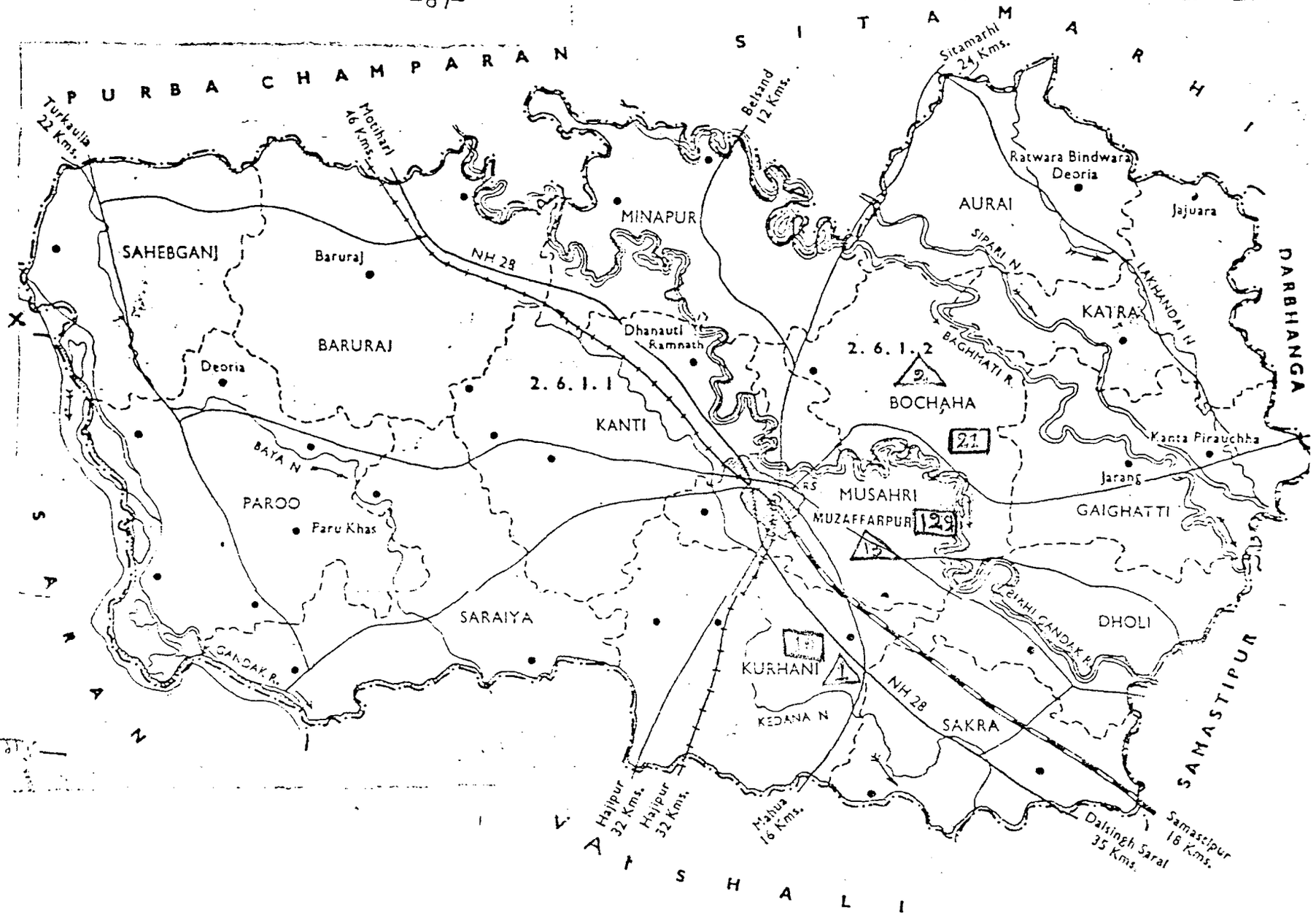

- 129
ii) - 21
- 10
iv) आंगनबाड़ी केन्द्र - 16

संस्कृति एवं संचार

किसी भी कार्यक्रम के सुचारू संचालन के लिये उपयुक्त वातावरण का होना अनिवार्य है। बिना उपयुक्त वातावरण के कार्य का प्रारंभ वांछित फल नहीं देता। उक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत एक सम्पूर्ण प्रभाग गठित किया गया जिसे संस्कृति संचार के नाम से जाना जाता है। बिहार शिक्षा परियोजना के कार्यक्रमों उद्देश्यों को लागू करने के लिए अनुकूल माहौल का निर्माण इस प्रभाग का मुख्य कार्य है। माहौल निर्माण के लिए इस प्रभाग के द्वारा गोष्ठियों,सम्मेलनों,नुक्कड़ नाटकों, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पोस्टर प्रतियोगिताओं, खेल-कूद प्रतियोगिता,बालमेला आदि का आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों के आयोजन के पीछे कई उद्देश्य होते है जिनमें प्रमुख हैं :—

समुदाय

— समुदाय को शिक्षा की ओर प्रेरित करना।
— समुदाय को स्कूली क्रिया कलापों में शामिल करना--यथा स्कूल स्वच्छ हरा-भरा कैसे रहे।
— समुदाय के बच्चों की प्रति जिम्मेवारी का बोध कराना यथा-सफाई, पोषण,स्वास्थ्य शिक्षा आदि में उनकी भूमिका।
— समुदाय में कला एवं संस्कृति के प्रति रुझान पैदा करना ।

बच्चों को

— स्कूल में जाने के लिए प्रेरित करना।
— स्कूलों में बने रह कर प्राथमिक शिक्षा को पूरा करना।
— स्कूल आधारित कार्यक्रम में बच्चों की भूमिका से उन्हें परिचित कराना §यथा-खेल-कूद,सांस्कृतिक कार्यक्रम,पोस्टर प्रतियोगिता,नाटक आदि के मंचन में बच्चों की भूमिका§।
— स्कूल परिसर के रख-रखाव में बच्चों की भूमिका समुदाय से सहभागिता कैसे स्थापित करें।

शिक्षकों को

— शिक्षकों को समुदाय से सहयोग लेने में।
— शिक्षकों को बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेवारी निभाने में।
— शिक्षकों को स्कूल परिसर को व्यवस्थित रखने में।

इन कार्यक्रमों को इस प्रकार आयोजित किया जाता है कि उक्त उद्देश्यों की प्रति हो जाय।

वर्त्तमान स्थिति

मुजफ्फरपुर जिला संस्कृति एवं कला के दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है। जिस प्रकार यह क्षेत्र जनतंत्र की जननी के रूप में विख्यात है उसी प्रकार अपनी भाषा एवं संस्कृति में भी इसकी राज्य में अलग पहचान बनी रही है। जाने-माने साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी, आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री आदि ने इसे भाषा के क्षेत्र में अनूठा स्थान दिलाया है।

कला के क्षेत्र में भी इसकी पहचान विशिष्ट रही है जिसकी जानकारी लोक भाषा बज्जिका में रचित हजारों गीत हैं जो समुदाय के लोगों द्वारा गाये जाते हैं। प्रायः सभी गाँवों में सांस्कृतिक टोलियाँ है, जो अपनी कला का प्रदर्शन ग्रामीणों के बीच करती रहती है, मुजफ्फरपुर की समृद्ध संस्कृति की पहचान साक्षरता अभियान के समय मिली जब कई टोलियाँ स्वतः वातावरण निर्माण के कार्य के लिए स्थानीय लोगों द्वारा रचित सैकड़ों गीतों को लेकर शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए निकल पड़ी।

जिले में इस समय करीब 70 सांस्कृतिक टोलियाँ है जो विभिन्न प्रखंडों में कार्यरत हैं। इन टोलियों में करीब 20 टोलियाँ शहर में हैं। इनकी सूची कार्ययोजना के साथ विशिष्ट के रूप में संलग्न है। सांस्कृतिक टोलियों के साथ संबद्ध कलाकारों के अतिरिक्त अनेकों ऐसे स्वतंत्र कलाकार हैं जो किसी भी सांस्कृतिक टोली से संबद्ध नहीं है बिहार शिक्षा परियोजना इन कलाकारों का पहचान समुदाय से कराने को प्रयासरत है।

पूर्वानुभव

परियोजना प्रारंभ से पिछले एक वर्ष में संस्कृति संचार प्रभाग द्वारा स्कूल आधारित कार्यक्रमों में बालमेला पोस्टर प्रतियोगिता, खेल-कूद प्रतियोगिता, संस्कृति कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया है। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त विडियोरामा पर शिक्षा आधारित फिल्मों का भी प्रदर्शन किया जाता रहा है।

संस्कृति कार्यक्रमों के आयोजन के क्रम में सबसे बड़ी बाधा कलाकारों का शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों से अनभिज्ञ होना है। यद्यपि वे कला का प्रदर्शन करते रहते हैं किन्तु शिक्षा जैसे विषयों को किस तरह समुदाय के समक्ष रखा जाय यह उनके अनुभव में नहीं है। इसके लिए कई प्रकार के प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं के आयोजन की आवश्यकता होगी।

संस्कृति एवं संचार प्रभाग

वर्ष 94-95 का कार्ययोजना

§1§ बालमेला

जिले के अंतर्गत वर्ष 94-95 में कुल 60 बालमेलों का आयोजन किया जायेगा। बाल मेले 10 विद्यालयों के समूह पर एक ऐसे विद्यालय में आयोजित होगा जो मध्य में पड़ता हो। प्रयास होगा कि सभी बालमेले नवम्बर माह में पूर्ण कर लिए जायँ। बालमेला के माध्यम से इस बात का प्रयास किया जायेगा कि बच्चों में नेतृत्व का गुण विकसित हो तथा स्कूल आधारित कार्यक्रमों में वे बढ़-चढ़ कर भाग लें।

व्यय अनुमान

प्रति बाल मेला-	2,000=00
सजावट आदि पर-	500=00
माइक,शामियाना आदि-	300=00
बच्चों के लिए पारितोषिक-	500=00
फोटो-अधिकतम-5	100=00
बच्चों के बीच उपहार,टॉफी आदि-	600=00
	2,000=00

§2§ नुक्कड़ नाटक

प्राथमिक शिक्षा में समुदाय को भागीदारी,छीजन में कमी, युवाओं को स्कूल से जोड़ने के लिए नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जायेगा। नाटकों के विषय इस प्रकार चयनित किए जायेंगे जिससे लोगों में स्कूलों के सुचारू संचालन के लिए जिम्मेदारी का बोध हो। स्कूलों के आहाता का उपयोग इन नाटकों के लिए किया जायेगा। वर्ष 94-95 में इस प्रकार के करीब 150 नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जायेगा। प्रयास किया जायेगा कि इन नाटकों का आयोजन अप्रैल एवं मई माह में किया जाये जबकि नामांकन का कार्य संपन्न हो चुका हो तथा मौसम के अनुकूल नाटक खुले में आयोजित हो सकें।

व्यय अनुमान

-- कलाकारों का मेक-अप आदि-	150=00
-- कलाकारों के अल्पाहार आदि की व्यवस्था (अधिकतम 10 व्यक्तियों के लिए) 25×10	250=00
-- फोटोग्राफ (अधिकतम-4 एक नाटक के लिए) 20×4	80=00
	480=00

(3) खेलकूद

स्कूल आधारित कार्यक्रमों के अंतर्गत विद्यालयों में खेलकूद का आयोजन किया जायेगा।

इसके द्वारा बच्चों में खेलकूद एवं शारीरिक श्रम की प्रवृत्ति पैदा किया जायेगा। प्रत्येक गुच्छ मध्य विद्यालय को इसके लिए केन्द्र के रूप में व्यवहार किया जायेगा। शीर्ष पर आनेवाले बच्चों को पुरस्कृत करने की योजना है।

(4) सांस्कृतिक कार्यक्रम

परियोजना के द्वारा वर्ष 94-95 में 45 सांस्कृतिक कार्यक्रम वातावरण को और अधिक शुद्ध करने हेतु किया जाएगा।

सभी प्रखण्डों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा सांस्कृतिक दलों की पहचान की जायेगी। उसके लिए प्रयास किया जायेगा कि प्रत्येक प्रत्येक प्रखण्ड में कम से दो सांस्कृतिक दलों का गठन हो जाय जो अपने प्रखण्ड क्षेत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा लोगों को अभि-प्रेरित करते रहे।

व्यय अनुमान

500/-रु0प्रति कार्यक्रम (45 कार्यक्रम के लिए) 45×500

=22,500=00

§5§ ऑडियो कैसेट्स

अबतक साक्षरता एवं शिक्षा पर आधारित गीतों का संचयन काफी संख्या में किया जा चुका है। उन गीतों पर आधारित ऑडियो कैसेट्स का निर्माण कराने की योजना है। ऐसे 5 ऑडियो कैसेट्स वर्ष-94-95 में तैयार कराये जायेंगे।

व्यय अनुमान

प्रति ऑडियो कैसेट्स--	5,000=00
कलाकारों को पारिश्रमिक आदि-	5,000=00
स्टूडियो व्यय-	4,000=00
वाद्ययंत्रों केकलाकारों को पारिश्रमिक-	2,000=00
खाली कैसेटों का कीमत- 20×100	2,000=00
	18,000=00

18,000×5 = 90,000=00

§6§ पोस्टर मुद्रण/स्टिकर

बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा साक्षरता से संबंधित विभिन्न क्रिया-कलापों एवं नारों को दर्शानेवाले पोस्टरों एवं स्टिकरों का वर्ष - 94-95 में निर्माण किया जायेगा। पोस्टरों से प्रचार-प्रसार में व्यापक सहायता मिलेगी।

व्यय अनुमान

30 हजार पोस्टरों पर एक रू० प्रति पोस्टर की दर से कुल व्यय-	30,000=00
स्टिकरों पर व्यय--	20,000=00
	50,000=00

§7§ गोष्ठी

बिहार शिक्षा परियोजना के विभिन्न कार्यक्रमों के लिए विभिन्न प्रकार के गोष्ठियों का आयोजन वर्ष 94-95 में 45 की संख्या

में किया जायेगा। इन गोष्ठियों द्वारा संवार के विभिन्न आयामों पर समय-समय पर चर्चा की जायेगी। गोष्ठी कलाकारों, लेखकों, ग्रामीण रंगकर्मियों एवं बुद्धिजीवियों के सहयोग के लिए आयोजित होगी। एक गोष्ठी में अधिकतम 40 से 50 व्यक्ति होंगे।

व्यय अनुमान

स्टेशनरी 50 व्यक्तियों के लिए (10/-रु0 प्रति व्यक्ति) 50×10×45=	22,500=00
प्रतिवेदनों का प्रकाशन-	5,000=00
आवासन आदि की व्यवस्था- 50×30=00×45=	67,500=00
	95,000=00

(8) साक्षरता बुलेटिन

परियोजना से संबंधित कार्यकलापों एवं उपलब्धियों के प्रकाशन हेतु परियोजना द्वारा मासिक पत्रिका/न्यूज बुलेटिन का प्रकाशन किया जायेगा। वर्ष 94-95 में 12 साक्षरता की मासिक पत्रिका/न्यूज बुलेटिन का प्रकाशन होगा। इसके अतिरिक्त एक विशेष वार्षिक अंक तथा समय-समय पर छोटी-छोटी बुलेटिनों का आवश्यकतानुसार प्रकाशन ।

व्यय अनुमान

मासिक पत्रिका के अधिकतम 3000 अंकों के प्रकाशन की योजना है जिस पर प्रतिमाह 10,000=00 रुपये का व्यय होगा-12×10,000 =	1,20,000=00
विशेष वार्षिक अंक-	50,000=00
	1,70,000=00

(9) कठपुतली प्रशिक्षण एवं निर्माण

ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन के साथ प्रेरक कार्यक्रमों में कठपुतली नाट्य प्रदर्शन का विकास एक महत्वपूर्ण विधा हो सकती है। कठपुतली प्रदर्शन की चरणबद्ध योजना कार्यान्वित की जायेगी जो जिला प्रखण्ड एवं अंत में विद्यालय/गांव स्तर तक पहुँचेगी। इसके लिए वर्ष 94-95 में जिला स्तर पर 40-50 प्रतिभागियों के लिए दो कार्यशाला आयोजित की जायेगी। इस कार्यशाला के पश्चात् तीन-तीन प्रखण्डों को मिलाकर कुल 5 कार्यशाला आयोजित होगी।

व्यय अनुमान

40 व्यक्तियों के दो दिनों तक आवासन आदि की व्यवस्था-

40×30×3 =	3,600=00
कठपुतली निर्माण हेतु सामग्री-प्रति प्रतिभागी- {40×50}	2,000=00
अन्य प्रबंधन पर व्यय- 40×15 × 2 =	1,200=00
	6,800=00

वर्ष में कुल 7 कार्यशाला- 7×6,800= 47,600=00

{10}पोस्टर प्रतियोगिता

स्कूली छात्रों के बीच पोस्टर एवं नारे निर्माण,उनकी सृजनशीलता के विकास हेतु आयोजित किए जायेंगे। जिले में हर प्रकार के एक प्रतियोगिता एवं सभी प्रखण्डों एवं अनौपचारिक केन्द्रों पर भी इसका आयोजन होगा । इनमें से श्रेष्ठ पोस्टरों के मुद्रण की व्यवस्था की जायेगी।

व्यय अनुमान

प्रति केन्द्र {15×500}= 7,500=00

{11}वाद-विवाद

परियोजना द्वारा वातावरण को और अधिक सुदृढ बनाने हेतु गुच्छ स्तर एवं प्रखण्ड तथा जिला स्तर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन छात्रों के बीच किया जायेगा। श्रेष्ठ छात्रों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार का प्रावधान होगा।

व्यय अनुमान

पारितोषिक एवं छात्र को अधिकतम 100/= कुल 100 छात्रों के लिए- 100×100=	10,000=00
प्रमाण-पत्र,200 छात्रों के लिए-प्रति छात्र-5/=	1,000=00
	11,000=00

{12}फिल्म प्रदर्शन

शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ परियोजना के कार्यक्रम को दर्शाने हेतु परियोजना द्वारा लक्ष्य वर्ष-94-95 में 120 फिल्म प्रदर्शन किए

परियोजना में उपलब्ध विडियो भान के द्वारा फिल्म प्रदर्शन का का कार्यक्रम किया जायेगा। इसलिए इस पर कोई खर्च नहीं होगा।

विडियोयान के लिए डिजल इत्यादि की आपूर्ति परियोजना कार्यालय से की जाएगी।

§13§ महत्वपूर्ण दिवसों की समारोह आयोजित करना

परियोजना द्वारा महत्वपूर्ण दिवसों को जैसे-26 जनवरी, 5 सितम्बर, 8 सितम्बर, 14 नवम्बर, इत्यादि समारोहों का आयोजन किया जायेगा।

लक्ष्य वर्ष 94-95 में कुल समारोह-8.

व्यय अनुमान

प्रति समारोह-7,000/=की दर से कुल 8×7,000= 56,000=00

§14§ वृक्षारोपण

बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत विद्यालय परिवेश सुधार हेतु चुने हुए विद्यालयों में वृक्षारोपण का कार्य किया जायेगा। इस कार्यक्रम के लिए पौधे एवं वाहन की आपूर्ति बिहार शिक्षा परियोजना एवं वन विभाग द्वारा किया जायेगा। लक्ष्य वर्ष 94-95 में वृक्षारोपण कार्यक्रम-48 विद्यालयों में।

व्यय अनुमान

§शामियाना, दरी, माईक व्यवहार- प्रति विद्यालय-400=00रुपये

शामियाना, दरी, माईक, व्यवहार-प्रति विद्यालय- 48×400 =	19,200=00
पौधों की कीमत-प्रति विद्यालय- 48 × 50 =	2,400=00
छायांकन प्रति विद्यालय- 48×50 =	2,400=00
वाहन आदि की व्यवस्था परियोजना प्रबंधन से किया जायेगा।	
	24,000=00

§15§ सांस्कृतिक टोलियों का प्रशिक्षण

परियोजना का लक्ष्य होगा ग्रामीण अंचल के छोटे-छोटे टोलों में रहनेवाले कलाकारों/शिल्पकार को खोज एवं उनके कला को लोगों तक पहुंचाना

इसके लिए प्रशिक्षित कलाकारों की ऐसी टोलियाँ बनानी होगी जो गाँव-गाँव में जाकर स्थानीय कलाकारों को प्रशिक्षित एवं प्रदर्शन के लायक बना सकें। जिला एवं प्रखण्ड स्तर पर इसके लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने होंगे जिससे वे प्रशिक्षित व्यक्ति पुनः दूसरे कलाकारों को प्रशिक्षित कर सकें। वर्ष 94-95 में इस हेतु 4 प्रशिक्षण शिविर लगाने की योजना है।

व्यय अनुमान

— 40 व्यक्तियों के आवासन आदि की व्यवस्था-40×30×3=3,600=00	
— स्टेशनरी आदि - 40×10=	400=00
— व्यवस्था- 40×20×3 =	2,400=00
— यात्रा भत्ता- 40×100 =	4,000=00
— साधनसेवी मानदेय+यात्रा भत्ता-4×500=	2,000=00
	12,400=00

कुल-4 प्रशिक्षण शिविर पर-12,400=00×4 = 49,600=00

§16§ संचार केन्द्रों की स्थापना

नवाचार के क्रम में जिले के दो ग्रामीण अंचलों में संचार केन्द्रों की स्थापना उन प्राथमिक विद्यालयों में की जायेगी जहाँ परिसर निर्माण विद्यालय आधारित कार्यक्रम नामांकन, समुदाय की सहभागिता, महिला समाख्या कार्य में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। ये संचार केन्द्र प्रायोगिक तौर पर संचालित किए जायेंगे। स्कूल के ही परिसर से इस केन्द्र का संचालन होगा जिसमें निम्नलिखित सुविधाओं का प्रावधान रहेगा।

§क§ पुस्तकालय:- संचार केन्द्र की विशेष पुस्तकालय में 1000 विभिन्न प्रकार की पुस्तकें रखी जायेंगी।

§ख§ समाचार पत्र/पत्रिका-दो राज्य स्तरीय दैनिक समाचार पत्र तथा 2 पत्रिकाओं की आपूर्ति नियमित ली जायेगी।

§ग§ टेपरिकार्डर- संचार केन्द्र पर एक टेप रिकार्डर रखा जायेगा।

§घ§ टी0वी0सेट-उक्त संचार केन्द्र को एक टी0वी0 सेट दिया जायेगा तथा उर्जा की व्यवस्था के लिए सोलर पैक दिया जायेगा।

(ङ) उपस्कर:- पुस्तकों को रखने के लिए दो काठ की आलमारी दी जायेगी

शेष उपस्कर निम्न प्रकार होगा—

आलमारी-2 (काठ की)	3,000=00
कुर्सी- 6 (बिना बाँह की)	1,200=00
टेबुल- 2 (रीडिंग टेबुल)	1,000=00
न्यूज पेपर स्टैण्ड- 2	1,500=00
	6,700=00

(च) एक अंशकालिक कार्यकर्त्ता

व्यय अनुमान

(क) पुस्तकालय स्थापना-		10,000=00
(ख) समाचार पत्र/पत्रिका-		
(दो समाचार पत्र एवं दो पत्रिका)		
120/=00 प्रति माह		
60/=00 प्रतिमाह		
180/=	180×2	2,160=00
(ग) टेपरिकार्डर-		2,000=00
(घ) टी०वी० सेट- (सोलर पैक के साथ)-		56,000=00
(ङ) उपस्कर-		6,700=00
(च) एक अंशकालिक कार्यकर्त्ता-400×12		4,800=00
		81,660=00

आवर्त्ती व्यय	अनावर्त्ती व्यय
4,800=00	74,700=00
2,160=00	
6,960=00	

इस प्रकार के कुल दो केन्द्रों पर आने वाला व्यय-

81,660×2 = 1,63,320=00

———::0::———

बजट
वर्ष-1993-94
सांस्कृति,संचार एवं सतत शिक्षा

क्रम	मुद्दा	दिसम्बर,93 तक व्यय	प्रस्तावित व्यय जनवरी,94 से मार्च,94	कुल
	<u>वातावरण निर्माण</u>			
§1§	प्रदर्शनी-	18,400=00	7,000=00	25,400=00
§2§	बालमेला-	49,400=00	18,000=00	67,400=00
§3§	महत्वपूर्ण दिवस के आयोजन-	22,850=00	—	22,850=00
§4§	वृक्षारोपण-	4,000=00	—	4,000=00
§5§	पत्रिका के छपाई -	—	10,000=00	10,000=00
§6§	कार्यशाला-	—	15,000=00	15,000=00
	कुल—	94,650=00	50,000=00	1,44,650=00

संस्कृति एवं संचार

वर्ष- 1994 - 95

क्रमांक	कार्यक्रम	लक्ष्य
1.	बाल मेला	60
2.	नुक्कड़ नाटक	150
3.	खेलकूद	130
4.	सांस्कृतिक कार्यक्रम-	45
5.	विडियो फिल्म निर्माण-	2
6.	आडियो कैसेट्स	5
7.	पोस्टर/स्टिकर मुद्रण-	5प्रकार के
8.	गोष्ठी-	45
9.	साक्षरता बुलेटिन-	12(एक प्रतिमाह)
10.	कठपुतली प्रदर्शन-	150
11.	पोस्टर प्रतियोगिता-	
12.	महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन	
	15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्तूबर, 5 सितम्बर, 8 सितम्बर, 14 नवम्बर, महिला दिवस, पर्यावरण दिवस-	8
13	वृक्षारोपण-	40 (विद्यालयों में)
14.	कठपुतली/सांस्कृतिक टोलियों का प्रशिक्षण-	3
15.	पत्रिका प्रकाशन-	6 (दो माह पर)
16.	कार्यशाला-	4
17.	संचार केन्द्रों की स्थापना-	2

-----::0::-----

संस्कृति एवं संचार प्रभाग

व्यय अनुमान -- वर्ष 1994-95

क्रम	कार्यक्रम	दर	राशि (लाख में)
1.	बाल मेला	60×20,000	1.20
2.	नुक्कड़ नाटक	150×400	0.60
3.	खेलकूद-	130×500	0.65
4.	सांस्कृतिक कार्यक्रम-		
5.	विडियो फिल्म निर्माण-	2×50,000	1.00
6.	आडियो कैसिट्स-	5×18,000	0.90
7.	पोस्टर/स्टिकर निर्माण-		0.50
8.	गोष्ठी -	45×2,000	0.90
9.	साक्षरता बुलेटिन-(तीनहजार प्रति)	12×3000	0.36
10.	कठपुतली प्रदर्शन-	30×200	0.06
11.	पोस्टर प्रतियोगिता-	14×500	0.07
12.	वृक्षारोपण-	48×500	0.24
13.	पत्रिकाओं का प्रकाशन-	6×6,000	0.36
14.	होर्डिंग/दीवाल लेखन-		0.20
15.	कठपुतली/सांस्कृतिक टोलियों का प्रशिक्षण	4×12500	0.50
16.	संचार केन्द्रों की स्थापना	2×81660	1.63
		कुल-	9.17 या 10.00 लाख

बिहार शिक्षा परियोजना, मुजफ्फरपुर

प्रबंधन व्यय

1.	वेतन एवं भत्ता	:	18.36	लाख
2.	यात्रा भत्ता	:	1.00	
3.	प्रिन्टिंग तथा स्टेशनरी	:	2.00	
4.	कार्यालय व्यय	:	1.20	
5.	बैठक आदि पर व्यय	:	0.60	
6.	कम्प्यूटर व्यय	:	0.60	
7.	डाक व्यय	:	0.25	
8.	टेलीफोन एवं टेलेक्स	:	0.50	
9.	पुस्तकें एवं पत्रिकाएं	:	0.20	
10	प्रकाशन व्यय	:	0.25	
11	बिजली	:	0.36	
12	मरम्मत एवं रखरखाव	:	1.00	
13	वाहन मरम्मत	:	0.50	
14	किराया इत्यादि	:	0.50	
15	वाहन के लिए इंधन	:	10.00	(एक लाख)
16	भवन का रख रखाव	:	1.00	
17	कम्प्यूटर रख रखाव	:	0.25	
		कुल -	28.57	लाख रुपये

बिहार शिक्षा परियोजना, मुजफ्फरपुर

वार्षिक बजट - एक झलक

1.	प्रा० औपचारिक शिक्षा	:	642.71
2.	प्रा० अनौपचारिक शिक्षा	:	125.80
3.	प्रशिक्षण	:	54.88
4.	वाहन	:	126.15
5.	महिला समाख्या	:	45.94
6.	संस्कृति एवं संगार	:	10.00
7.	प्रबंधन	:	28.57
		कुल:	1034.05

(दस करोड़ चौंतीस लाख पांच हजार)

01/05/94

COMPUTER SECTION BIHAR EDUCATION PROJECT, MUZAFFARPUR **
BLOCK WISE DIST. OF TEACHING KITS TO SC/ST BOYS & ALL GIRLS
OF CLASS I-V IN 1994 ON THE BASIS OF ENROLMENT IN JUNE.1993.
***** DISTRICT : MUZAFFARPUR *****

Sl. No.	NAME OF THE BLOCK	NUMBER OF SC BOYS	NUMBER OF ST BOYS+G	NUMBER OF TOT GIRLS	TOTAL
1	SAHEBGANJ	2123	0	5599	7722
2	KATRA	1933	0	5938	7871
3	BOCHAHAN	2618	6	5829	8453
4	MUSHARI	3806	3	7666	11475
5	MOROUL	3059	0	6476	9535
6	PAROO	2964	34	8686	11684
7	SARIYA	3984	29	10923	14936
8	MINAPUR	2972	4	6390	9866
9	GAIGHAT	2750	60	8229	11039
10	SAKARA	2784	0	7122	9906
11	KANTI	4515	16	13110	17641
12	KURHANI	3542	0	9257	12799
13	MOTIPUR	3278	0	9458	12736
14	AURAI	1847	1	5366	7214
15	TOWN AREA	1301	118	8073	9492
*** Total ***		43476	271	118622	162369

परिशिष्ट 'ख'

ENROLMENT

(Class I- VIII)

Period	Girls	Boys	Total	Percentage	
				Rise	Fall
Dec. '91	83575	177262	260837	-	-
Dec. '92	118905	224110	343015	32%	-
Mar. '93	134929	247980	382909	12%	-
June '93	132546	244527	377343	-	1%

अनुलग्नक 'अ'

बिहार शिक्षा परियोजना
संयुक्त भवन, मुजफ्फरपुर

अौपचारिक शिक्षा मासिक अनुश्रवण प्रपत्र - माह_____/1993.

प्रखण्ड का नाम :-
==========

1. बेंच मार्क सर्वे :
   (क) सर्वेक्षित ग्रामों की संख्या -
   (ख) ग्रामों की संख्या जहाँ सर्वेक्षण चल रहा है।

2. नामांकन अभियान/अभिभावकों के साथ संपर्क/समुदाय की भागीदारी हेतु आयोजित गोष्ठियाँ:-
   (क) गोष्ठी की तिथि -
   (ख) प्रतिभागियों की संख्या -

3. नामांकन विवरण / उपस्थिति विवरण : इस हेतु अलग से फौर्मेट निर्गत।

4. ग्राम शिक्षा समिति का विवरण :-
   (क) प्रखण्ड स्थित प्रारम्भिक विद्यालयों की संख्या -
   (ख) प्रतिवेदित माह में गठित ग्राम शिक्षा समितियों की संख्या -
   (ग) पूर्व में गठित समितियों की संख्या -
   (घ) प्रशिक्षित समितियों की संख्या -
   (च) प्रशिक्षित समिति सदस्यों की संख्या -
   (छ) समितियों की संख्या जहाँ नियमित बैठकें होती हैं -

5. एम0एल0एल0 विद्यालयों की संख्या -
   (क) प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या -
   (ख) विद्यालयों की संख्या जहाँ जाँच की गई -
   (ग) जाँच प्रतिफलों की गणना - पूरी हुई - हाँ/नहीं -
   (घ) प्रतिफलों का विश्लेषण आरम्भ - हुआ/नहीं -
   (च) विश्लेषण के आधार पर प्रतिवेदन निकले -हाँ/नहीं -
   (यदि हाँ तो प्रतिवेदन संलग्न)

6. शिक्षक इकाइयों का सुयुक्तिकरण :-
   (क) शिक्षक विहीन विद्यालयों की संख्या एवं नाम -
   (ख) शिक्षक इकाइयों की रिक्तियाँ -
   (ग) कितनी इकाइयों का सुयुक्तिकरण हुआ -

7. दी गई सुविधाओं का विवरण :-
   (क) सुविधाओं के लिए चिन्हित विद्यालयों की संख्या -
   (ख) विद्यालयों की संख्या जहाँ शैक्षिक उपकरण दिये गये -
   (ग) विद्यालयों की संख्या जहाँ पुस्तकालय खोले गये -
   (घ) विद्यालयों की संख्या जहाँ खेल सामग्री दी गई -

(च) विद्यालयों की संख्या जहाँ शौचालय निर्माण आरम्भ - पूर्ण -

(छ) विद्यालयों की संख्या जहाँ हापाकल गाड़े जा रहे - पूर्ण -

(ज) विद्यालयों की संख्या जहाँ भवन निर्माण आरम्भ - पूर्ण -

(झ) विद्यालयों की संख्या जहाँ उपस्कर दिये गये -

8. पाठ्य पुस्तकें/शिक्षण किट वितरण :-

(क) लड़कियों की संख्या जिन्हें शिक्षण किट दिये गये - सामान्य-अ०जा०-ज०जा०-

(ख) अनुसूचित जाति के लड़कों की संख्या जिन्हें शिक्षण किट दिये गये -

(ग) प्रखण्ड में प्राप्त शिक्षण किटों की संख्या -

(घ) अतिरिक्त शिक्षण किटों की संख्या -

9. विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम :-

(क) कितने विद्यालयों में स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी आँकड़े संकलित किए गये -

(ख) विद्यालयों की संख्या जहाँ शिशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण हुआ -

(ग) विद्यालयों की संख्या एवं नाम जहाँ चिकित्सक/स्वास्थ्यकर्मी स्वास्थ्य जाँच हेतु गये।

(घ) वितरित प्राथमिक चिकित्सा किट की संख्या -

(च) कितने शिशु स्वास्थ्य पत्रक वितरित हुए -

(छ) कितने विद्यालयों में स्वास्थ्य पाठ्यक्रम लागू -

(ख) 11. शिशुओं की संख्या -लड़के/लड़कियाँ जिनका स्वास्थ्य परीक्षण हुआ। -

10. (क) गुरु गोष्ठी की तिथि -

(ख) प्रतिभागियों की संख्या -

(ग) विचारणीय प्रमुख मुद्दे -

=======

अनुलग्नक 'ब'

बजट
वर्ष-1993-94
एक झलक

क्रम	मुद्दा	दिसम्बर, 93 तक व्यय	प्रस्तावित व्यय जनवरी, 94 से मार्च, 94	कुल
{अ}	प्राथमिक औपचारिक शिक्षा			
1.	कार्यशाला-	8621=00	30000=00	38,621=00
2.	विद्यालय भवन निर्माण-	10824000=00	5650000=00	1,64,74,000=00
	शौचालय-	2247000=00	2052000=00	42,99,000=00
	चापाकल-	279000=00	574000=00	8,53,000=00
3.	विद्यालय उपस्कर-500×5000/=	107198=00	2392802=00	25,00,000=00
4.	विद्यालय पुस्तकालय-3000×500	267549=00	1232451=00	15,00,000=00
5.	विद्यालय उपकरण-500×10000/=	—	5000000=00	50,00,000=00
6.	विद्यालय खेलकूद-500×2000/=	—	1000000=00	10,00,000=00
7.	शैक्षिक किट-1,62,000×40/=	—	6480000=00	64,80,000=00
8.	नामांकन-	—	40000=00	40,000=00
9.	शिक्षक पुरस्कार-	21000=00	—	21,000=00
10.	श्यामपट्ट- 1550 × 300	—	465000=00	4,65,000=00
11.	विद्यालय प्रवेश पंजी, उपस्थिति पंजी/ बाल पंजी-	—	270000=00	2,70,000=00
12.	बेंच मार्क सर्वेक्षण-	—	46000=00	46,000=00
13.	विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम-	—	25000=00	25,000=00
{ब}	न्यूनतम अधिगम स्तर -	17,900=00	150000=00	1,67,900=00
{स}	प्रशिक्षण			
1.	शिक्षक प्रशिक्षण- 560×1400	160000=00	784000=00	9,44,000=00
2.	प्रधानाध्यापकों का प्रशिक्षण- 80×350	60000=00	28000=00	88,000=00
3.	ग्राम शिक्षा समिति प्रशिक्षण-	23461=00	30000=00	53,461=00
4.	निरीक्षी पदाधिकारियों का प्रशिक्षण-	22000=00	—	22,000=00
5.	गणित/विज्ञान प्रशिक्षण-	—	14000=00	14,000=00
{द}	डायट			
1.	डायट भवन मरम्मत एवं जीर्णोद्धार-	173310=00	—	1,73,310=00
2.	डायट के रख रखाव-	258812=00	300000=00	5,58,812=00
		14469851=00	26563,253=00	4,10,33,104=00

12/20/93

COMPUTER SECTION BIHAR EDUCATION PROJECT, MUZAFFARPUR **

अनुलग्नक 'स'

-109-

BLOCK WISE COMPARISION CHART OF ENROLMENT OF STUDENTS ON JUNE 1993 WITH DECEMBER 1992 OF M/P SCHOOLS & INCREASE RATE

(CLASS I - VIII) ** DISTRICT: MUZAFFARPUR **

SL NO	NAME OF THE BLOCK	ENROLMENT JUNE : 1993 GENRAL BOYS	GENRAL GIRLS	GENRAL TOTAL	SC. BOYS	SC. GIRLS	SC. TOTAL	TOTAL BOYS	TOTAL GIRLS	TOTAL STU.	ENROLMENT DECEMBER : 1992 GEN. BOYS	GEN. GIRLS	GEN. TOTAL	S.C. BOYS	S.C. GIRLS	S.C. TOTAL	TOTAL BOYS	TOTAL GIRLS	TOTAL	% AGE INCREA BOYS	GIRLS	TOT
1	SAHEBGANJ	11758	5163	16921	2346	929	3275	14104	6092	20196	10132	5329	15461	1798	770	2568	11930	6099	18029	18.22	-0.11	12.
2	KATRA	10902	5588	16490	2060	883	2943	12692	6471	19433	9838	5355	15193	1624	699	2323	11462	6054	17516	10.73	6.89	10.
3	BOCHAHAN	11161	5060	16221	2850	1268	4118	14011	6334	20345	11053	4765	15818	2540	1149	3689	13593	5914	19507	3.08	7.10	[illegible]
4	MUSHARI	10057	6144	16201	4187	2283	6470	14245	8429	22674	9274	5664	14938	3939	2000	5939	13213	7664	20877	7.81	9.98	8.6
5	MO[illegible]UL	10620	5755	16376	3348	1541	4889	13968	7297	21265	8689	4658	13347	2752	1250	4002	11441	5908	17349	22.09	23.51	22.5
6	PAROO	15219	8368	23587	3267	1390	4657	18506	9772	28278	13700	6850	20550	2743	1114	3857	16443	7964	24407	12.55	22.70	15.8
7	SARIYA	16085	9822	25902	4389	2319	6708	20484	12161	32645	15430	9227	24657	4161	1208	5369	19591	11435	31026	4.56	6.35	5.2
8	MINAPUR	13506	6146	19652	3210	1376	4586	16721	7522	24243	13722	5555	19277	2586	1026	3612	16308	6581	22889	2.53	14.30	5.9
9	GAIGHAT	11572	6940	18512	2915	1904	4819	14529	8862	23391	12337	7586	19923	2887	1847	4734	15224	9433	24657	-4.57	-6.05	-5.1
10	SAKARA	11205	6573	17794	3227	1466	4693	14433	8045	22478	10140	5641	15781	2993	1222	4215	13133	6863	19996	9.90	17.22	12.4
11	KANTI	18222	11728	29950	4887	2572	7459	23122	14304	37426	17589	10620	28209	4603	2453	7056	22192	13073	35265	4.19	9.42	6.1
12	KURHANI	17287	9247	26534	4201	1628	5829	21488	10875	32363	13769	6896	20665	3046	1228	4274	16815	8124	24939	27.79	33.86	29.7
13	[illegible]TIPUR	18273	9022	27295	3695	1678	5373	21968	10700	32668	16971	8103	25074	3126	1334	4460	20097	9437	29534	9.31	13.38	10.61
14	AURAI	11416	5413	16829	1994	757	2751	13411	6170	19581	10683	4098	14781	1710	611	2321	12393	4709	17102	8.21	31.03	14.50
15	TOWN AREA	9231	8032	17263	1540	1423	2963	10845	9512	20357	8759	8366	17125	1516	1281	2797	10275	9647	19922	5.55	-1.40	2.18
	*** Total ***	196514	109003	305517	48116	23417	71533	244527	132546	377343	182086	98713	280799	42024	20192	62216	224110	118905	343015	9.11	11.47	10.01

अनुलग्नक-"द"

PAGE NO. 1
10/01/93

**COMPUTER SECTION ** BIHAR EDUCATION PROJECT, MUZAFFARPUR **
BLOCK WISE LIST OF P/M SCHOOLS,TEACHERS,ENROLMENT & T/SRATIO
*** DISTRICT MUZAFFARPUR ***

SL NO	NAME OF THE BLOCK	NO. OF PRIMARY SCHOOLS	NO. OF MIDDLE SCHOOLS	TOTAL	PRIM SCH. WOR. TCH	MIDD SCH. WOR. TCH.	TOTAL	NO.OF POST SANCT IONED	ENRLMENT OF STU. IN JUNE 1993	NO.OF STU. PER TCH
1	MINAPUR	133	24	157	276	170	446	524	24243	54.36
2	MUSAHARI	83	20	103	235	197	432	435	22674	52.49
3	BOCHAHAN	86	15	101	245	132	377	397	20345	53.97
4	AURAI	121	21	142	240	150	390	452	19581	50.21
5	KATRA	81	21	102	244	173	417	417	19433	46.60
6	GAIGHAT	100	27	127	200	197	397	456	23391	58.92
[illegible]	[illegible]	63	33	96	171	206	377	402	21265	56.41
8	SAKARA	90	29	119	246	215	461	496	22478	48.76
9	SAHEBGANJ	101	21	122	228	136	364	410	20196	55.48
10	SARAIYA	135	31	166	315	268	583	594	32645	55.99
11	KURHANI	126	34	160	325	301	626	690	32363	51.70
12	PAROO	131	31	162	294	219	513	571	28278	55.12
13	MOTIPUR	110	39	149	270	313	583	652	32668	56.03
14	KANTI	146	35	181	369	295	664	692	37426	56.36
15	TOWN AREA	28	63	91	86	533	619	602	20357	32.89
	*** Total ***	1534	444	1978	3744	3505	7249	7790	377343	

NIEPA DC
D09068

[illegible] & DOCUMENTATION [illegible]
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No .... D - 9068
Date .... 12-[illegible]